

आशा सरकाथि

2.260

ASHA ARCHIVES

श्रीगणेशायनमः अथयविसवेतालकथालिख्यते लक्ष्मोदरं महाकायं लवोदरं गजकर्णकम् पापः
 ध्रुवार्चनीपुत्रं नमामि गणनायकम् दक्षिणदिशामायकप्रस्थानपुरभन्वाकोनगरिथियो नोहाराजा
 विक्रमशेनभन्वाकाथिया कस्तूथियाभन्वाकेवलकामदेवजस्ता जस्तैदेवताकाप्रेमविष्णुतस्तैसंसा
 रकाप्रेम दाताभन्वासमुद्रजस्ता भलापंडितज्ञानिकोसंग्रहगर्वा हिमालयपर्वतजस्तोजोतिः शर
 दृत्तुकायंदमाजस्तोनिर्मलः कांतिध्वनकमलफटिककैः निमलजोतिः अनेकधुगंधः अनेकस्तनसोभाज
 याकाः केवलकामदेवकोरूपलेविजुलिकाजस्तानेजवंत पितामोनाकोशेवागर्वा श्रीमहादेववकोपूजा
 नक्तिगर्वा अतिकांतिवंतउद्यमगर्वाविशेदाता बुद्धिवंतः नस्काप्रतापकनकसैलेजीतनः नसक्याकाकुल
 कोत्रेष्ट वस्तागुनलेयुक्तनैकन विक्रमशेनराजादस्याकाथिया तस्तैसमयमाः शान्तिशीलनामः एक
 दिगंबरतपसि केहिफलहातमालिवेरः राजाकासभामाश्रयो लोफलराजाकनवजायो आशिको
 दगर्वाः राजालेयोगिकनविद्याउनामावस्यायाः एतैप्रकारलेः दिनकोएकः गोजफलशविदर्शनगर्न
 लाग्यो ॥ एकदिनता राजाकाहानकोफलदिगंबरलेनेटिशष्पाकोफलपल्लाकावोदरलेहानदेविशो
 त्यारफोयो ॥ फोर्दामाभिन्नरत्नरहेहुः सभाभाषण्यो ॥ तेसरत्नकाज्योतिले सामाउज्यालोभयो सामाउज्यालोभ

रामः

योसामाकालोकलेदेखा ॥ आश्चर्यमान्याराजालेपनिआश्चर्यमान्याः ॥ तवराजाआस्थागर्नलाग्याः ॥ हे
 दिगंबरएतोमहारत्नकाअर्थलेनेटिशष्पोः भन्दा ॥ तवयोगीभन्दा ॥ रत्नपाणीति ॥ हेमहोजदेवताकन
 : पुरुकनः ॥ जोतिषजान्याकनः पुत्रकनः भलामनुष्यकनः ॥ केहिनेटिशविदर्शनगर्वाफलितहुंहुभनिभे
 टिशष्पाकोहोहेमहाराजः जोमैलेनेटिशष्पाकाररत्नअनेकफलभिन्नधियाः नैत्याः ॥ एतिसुनीराजालेभंश
 रिकनकेलायाः ॥ हेभंशरीजोफलमैलेराधुनदियाकानिसवैल्याभन्वा ॥ राजाकोवदनभुनिभंशरीलेसवै
 फलल्यायोरः ॥ सवैफलएकएकगफोआरत्नकोधुप्रोलाग्योसवैलेदेखा ॥ राजावदुतेषुसमैभैनलाग्या
 ॥ हेदिगंबरएकारत्नकोमोलमेरागज्यमाहुंनः ॥ ईसवैरत्नकोमोलमक्यादिउला ॥ ज्योतप्रामनइसाहु
 मागभन्दा ॥ दिगंबरभंछः सिद्धमंत्रोषधिहेमहाराजः आफनुसिद्धमंत्रः औषधिः पूरुषार्थः दुष्टमैधुनन
 खानुखायाकोनभुनुधुवाको आपुसर्मपर्चापुरोजोछः लोजान्यालेप्रकासनगर्नु एकात्तदयामया
 विंतिगर्दहुं भन्दाः राजालेएकान्नगर्वाः ॥ तत्रजोगिभंछः दडालेछकानजोगानुः छकानलेसुन्याकोमं
 व्रनशहुंछः ॥ चारकानलेसुन्याकोमंत्रनोशहुंछः स्थिरहुंछः ॥ तस्कारणहेमहाराजगोडावरिनदीका
 तिरमाः एकमहास्मशानहुं तोंहोमंत्रसाधकगर्गोला ॥ लोमंत्रसाध्यासुष्टदिपात्रिहुं ॥ सुष्टसिद्धिभन्वाकाः

मि

१ अनीमा एक १ महिमा २ लहिमा ३ गरीमा ४ ईसवंमा ५ वसित्वंमा ६ प्रकाशं ७ प्रकामिका ८ ईति अष्ट सिद्धिदं ॥ ति
 मिक नदिं कुः लेउः ॥ रात्र को मा ए लै मथा ई आव भन्दा ॥ राजा लेउं उवत् गरिह वो स भन्दा ॥ ॥ उपात्तः दिगं वर ले
 पूजा को साम गिस वै लिये र गो ज वरि नदी कातिरः मसान मा गयो ॥ राजा संधा वे ला मा हात मा खड्ड लिये रः
 ए लै योगि धें जा हा वस्था को थियो नां हिं गयाः ॥ ज सै राजा लै क न जो गिले दे शो वहु ते पु स भै भं न्न लायो ॥ ॥ हे महा रा
 जः जा हा दे षि दु ई को श व न मा र क शी शो का रुष मा मृत क जुं ग या को रुः ॥ लो वां डै न्वो लि क न ल्या व भं न्यः ॥ राजा
 ले ह वो स भ नि शि शो का रुष मु नि गया ॥ ॥ दि गं व र म शा न मा ग योः क स्तो म शा न भ न्या ॥ ॥ भू त वे ता ल ग राः महा
 न या उ न क भ या को ॥ अ स्थि हा ड क या ल भ या को ले प्र त भ या न क दे षि दोः ॥ चारै दि शा र ग त व हं दो ॥ के व ल का ल
 ले षे ल न्या था न हो भ न्या ज स्तो भुं वां ले अ ध्या रं न या को वी र वे ता ल रा क्षे स भ यं कर गु र्जं दा दे षि दो ॥ दि ता का भु वा
 ले के व ल मे ध ज स्तो गि द्र या ल ले पू र्ण भ या कोः ॥ उ न्न त भ या का कृ त्ति का ग ण की र्त न ग न्या को ॥ चारै दि शा र
 ल को स व्दे वी र का रुं का र ले ती नै लो क प्रे ल य न्या स म य भ यो भ न्या ज स्तो ॥ ॥ य म रा जा को पू रि हो भ न्या ज स्तो
 ॥ मा नि स्का मु ए ले न्या प्र भ या को ॥ कं का ल यो गि ले मु ए मा ला गां था का सो भा भ या को ॥ रा न फि लें गा ज स्तो अ
 षा भ या को दो श्रो भै र व हो भ न्या ज स्तो त स्तो उ ग्र श व्द भुं दा का न मा सु ई रा ले यो न्या ज स्तो दु न्या ॥ दुः ख ले सा

राम

धिन स क नुः ॥ व डा व डा ड रा उ ना का ल पु रु ष र ता उ ता हिं उ दा ॥ के व ल भै र व ज स्तो पु रु ष ले यु क्त भ या को
 भू त वे ता ल ले प्रे त को ध र ज स्तो ॥ मं हां अ धो र दं ड का र ण्य हो भ न्या ज स्तो ॥ म न भु म न दु न्या भु म्रा दा के व ल
 मे ध ग र्जा का श द ज स्तो ॥ के श द्वा ला न ख हा त ले प्रे त भ या कोः प लां श का वृ द्वा ले पू र्ण भ या को ॥ उं की नि
 व स्था का व न मा रा जा पु ग्या ॥ ॥ रु ष मा व द्दि दो रि का द्या मृत क भै मा य स्योः ॥ क स्तो मृत क भ न्याः जि ला मे
 ध ज स्तोः का लो उ र्दु के श भ या को वा पु ला अं वा भ या को मृत क भै मा य स्यो ॥ राजा रु ष दे षि वो ल्या त सै मृत क
 फे रि रु षे मा रुं डियो ॥ ॥ राजा फे रि रु ष मा व द्दि मृत क कां ध मा व द्दा ई रा जा वा ट मा हिं उ दा भ याः ॥ ॥ वां हां
 उ पां तः त स प्रे त भ या का व न मा वे ता ल भं छः ॥ ॥ का व्य शा स्त्र वि नो दे न का लो ग छ ति धि म ना नः ॥ वे श ने
 न निं डा यां मु र्घ या क ल हे न तु ॥ ॥ हे महा ज वि क्र म श नः व डा म नु ष्ये का दि न का व्य शा स्त्र नि ती वा त्रा वि
 नो द मा जा न्छ ॥ मु र्घ का दि न निं द्या मा कै ल ह मा वे स ना मा जां छ नः ॥ ॥ वि न ये ति ॥ ॥ ज स पु रु ष का
 सं य ति छः न मृत छे न तः न्यो सं प ति व्ये र्था छः ॥ रा त्र मा स व ता रा उ द्यो त छ नः वं दु मा छे न तः न्यो रा त्र भु
 न्य छः ॥ वा लि सं पू र्ण छ क वि ता छे नः न्यो वा लि व्य र्था होः ॥ ॥ हे महा रा जा जी उ ॥ म के हि क था क हं कुः भु नु

हवस ॥ हे महाराजाः एकवाणारसी भन्या नगरः ॥ तां हा प्रमुकुट भन्या का राजा थियाः नन का पुत्र मुकुट शो
 धर भन्या का थियाः ॥ मुकुट शो धर ले काजी को छोरो शाथ लिये रवडा उद्यान वन मा गढा ऐका घे लन गया ॥ ॥
 तां हा वन मा वडो सरोवर पोषरि देखा ॥ कल्लो पोषरि भन्या राज हंस चषेवा ले सो भा भया को कमल का फुल राना
 सेता निला फुल ले आका दित भया को ॥ ॥ पद्मी नी का पात ले माछा ले ककुवा ले अरु जल जंतु ले पूर्ण भ
 या को यो पोषरी मा का तिरसा ॥ अति सुंदर भया को केतू की का फुल कदली का फुल मावसीः ॥ भंवरा मो
 दिका गुंज सो भा भया को ॥ दा न्युह पंक्षित्या दि मजुर वषोरः परेवाः काथी लिः का शव सो भा भया का पोष
 रि मा पुग्या ॥ ॥ पोश दे वि को र्छा ॥ हात पा उधो या मुख कुल्ला गथा देवता को मठ मा गया ॥ नमस्कार गन्या
 ॥ तव राजा भन छन ॥ ॥ एसो भन्या को छ अहो वेतिः ॥ उवास ले भयो वा ॥ आहा गले भयो वा वडावल वं
 त शत्रु धिं भयो वाः ॥ मित्र भयो वाः मनि भयो वाः लव भयो वाः मसिना विस्था वना मा भयो वाः दुंगा मा भयो
 वाः सुख भयो दुःख मै ले सवै वरोवर मांद छुः ॥ ॥ एक को हि पवित्र वन मा शिव को नाम जपु उत्तम छुः ॥ शि
 व दे वि दो श्रो देवता अर्को छैन ॥ पाताल मा आका समाः अति रि क्षमाः पर्वत मा समुद्र मा काठ मा ॥ माता मा

राम
३

पृथ्वि माः वृक्षे माः सर्व व्यापि शिव छन ॥ सर्व औषधिका बीज एकै शिव छन ॥ भनि राजा भंछनः बाल ध्यानः
 अगम्य गम गन्या को ॥ मद पान गन्या को नभुं नु भु न्या कोः ॥ ब्राह्मण धातः गुरु निंदाः शिव धः गो विस्वो सधात
 ॥ ॥ एति पात कजो छुः एक विन्न गरि महा देव कनन मस्कारण गर्नुः सवै पाप छु तछुः ॥ न्यो मनुष्य शिव लोक जो
 छुः ॥ ॥ एति नमस्कार गरि राजा उद्या ॥ ॥ एका नार्इ का अति सुंदरि शधी ले पूक्त भया किन सै पोषरी मा आइ
 : स्नान गरि भव नि को पूजा गरि रः घर जों दात सनार्इ का ले राज कुमार कन दे वि ॥ राज कुमार ले पनि दे वि पोष
 र स्पर्भयोः ॥ दुवै का छति मा काम देव का वान लाग्या ॥ शो १ मो २ सं दि पात ३ उत्ताम द ४ सं तो प ५ एति पा
 य वान दुवै का छति मा लाग्याः ॥ नार्इ का मूर्छा भैः ॥ वेद ना मु छु दि दे विः उत्तरे नार्इ का भन लागि ॥ स स्थान क
 हिः एक कमल को फुल सिर ना रा विः ॥ शीर दे वी कान मा रा विः कान दे वि दात म वा पि दांत दे वीः पाव मा
 रा वि ॥ पाव दे वि छति मा रा विः ॥ एति पल्लु भ गरि नार्इ का घर गै ॥ ॥ उ प्रांतः राज कुमार काम दे उले आनुर
 भै सं त्री पुत्र के न थिं भन्याः ॥ हे मंत्री मै ले आज जों हा को हि नार्इ का अति सुंदर देखा ॥ तस्को पल्लव गन्या को
 मै ले जानि न ॥ हे मंत्री न्यो नार्इ का मै ले न पाया प्राण त्याग गगन ला भन्या मंत्री विंति गर्छुः ॥ हे महाराज भन्या को
 कुं रोता पसु पंक्षि जों द छन ॥ हाति घोरा मन को कुं रो जों द छन ॥ जोवन नुरः पंडित बुद्धि वंत जो छन दे धै मा
 हो डाई मा ॥ अनुसारे माः ववन माः आमा का ल दाण ले विचार गरि मन को कुं रो जों द छन ॥ हे महाराज

तेस्त्राईकालेकेहिभनिधिकीःभनिनभनिमंत्रीलैमंदाः॥राजाभंछनूहेमंत्रीःएककमलकोफुलटिपि
 रःसिरमाशविः।सिरदेविकानमाशविः।तेसैप्रकारलेछातिमाशविः।दोनमावापिः॥यावमाशविः
 एतिगरिभन्दाःमंत्रीविंतिगर्ह॥हेमहाराजज्योपलभकोअर्थसुनुहवस॥॥जोकमलकोफुलकान
 माराधिकर्णपुरहाप्रोवस्तिहोभनी।जोकलदोनतमवापिःदन्नघातराजाकिछोरिहुंभनि॥जोहृदयमा
 राविमेरोखामिछैनभनिः॥जोयावमाराविमेरोताउपधावतीहोभनिः॥जोशिरमाराविदेवताकाना
 उमाहो।यस्तोयलभहोभन्दाःराजाआज्ञागर्हन्॥हेमंत्रीजाहामेरीप्रणविगारितोहिजाईनोजनगरौला
 भन्दाः॥मंत्रीलहवसभन्दाःराजामंत्रीबुवैघोरामावडितेहिकर्णपुरनगरिमागया।विक्रेयितामितीमा
 लिनीकाधरमावस्या।तवमालिनीथिसुध्यायाःहेमालिनीराजकन्यापधावतीकाहजूरमातिमीजांछौ
 भन्दा॥॥मालिनीभंसमसदातिन्काहजूरमाजोछुतनैकिमालिनीहुंभन्दाः॥राजाभंछनूःआजमजाय
 रयसोविंतिगहैमैयाः।जोउद्यानवनमाराजकुमारभेतिथेउ॥न्योराजकुमारमेराधरमाध्याकाछनू
 ॥भन्दासभन्दासमालिनीगैपधावतीथेतेसैभन्दाति।मालिनिकोवचनधुनियधावतिलेदुवैहानमाथी

रामः
 ४

पंडलेयगरिरदुवैगालामाःमारिरःजायापिनिनेराधरभनिः॥मालिनीरुंदैरुंदैआउंदादेव्या॥॥राजा
 लेविष्णुदमान्याःमंत्रीलैविचारगन्धोरभंछ॥हेमहाराजकारणरहेछजोवेदनकादसउमगालामा
 लायाकातोकाहोभन्दादसदिनशुक्लपक्षेछः॥ताहासमायवभन्दाकोहोःजवकुक्षयक्षोहोलातव
 आउलाभन्दाकोहोभन्दावत्याः॥॥जवकुक्षयक्षभयोफेरिमालिनीकनपठायाजसैमालिनीकन
 पधावतीदेधितसैकुंकुमः।लेपनगरितिनअंगुलालेगालामामारिजायापिनीनेराधरभनीधधार्
 मालिनीरुंदैरुंदैधरआउ॥राजालेविष्णुदमान्याःमंत्रीविंतिगर्हहेमहाराजाःकारणछपधावतिरजस
 लोभेछः॥रातादामकानिनलेवापठार्ःतिनदिनमाआवभन्दाकोहो॥॥प्रथमेहनिवांउलिद्वितीये
 बह्मघातिनी।तृतीयेरजकीजाताबहुर्थिज्ञानसुध्यति॥करिवारोदिनमामालिनीकपठायाः।पधाव
 तीलेजसैदेधि॥निरुववनगरियश्विद्वारवाठनिकालिदि॥मालिनीधरआउराजालेसोध्याःमालिनी
 सवैवृत्तानकहि॥मंत्रीलैवृज्योरभंछहेमहाराजआजआधारातमायश्विमद्वारवाठपधावतिकार
 मोजाचुछभन्दास॥रातमामंत्रीसमेतराजागया॥दुजिलेराजाकनभित्रलेग्या।मंत्रीडेरामाआयो

राजालेप प्रावतिसंगनेट गथा ॥ परस्परवोलाचारकुशलकुशलोंत्रीगथा ॥ उवांतस्नानंगभोजनग
 था ॥ कपशलायः पानपायाकोमलविद्याउतामावया चारप्रकारसंभोगगथा ॥ अनेकप्रकारले
 शृंगारगथारतिगथाभोगभयी ॥ रतिसवैलेजांतुः वालषः सुर्वपसुर्हैरतिगर्ह्यावासवरनिहो ॥ विवर्से
 णजनकोपेमहोः ॥ गायलिंगमतिः वडाप्रितिलेआलिंगनगारेयाकोजोहृत्योमहासुखहोः ॥ मनिवाट
 त्रिः माधिवाटपुरुषभयाकोरतिसवैलेजांतुः ॥ ॥ तान्मुलेनि ॥ हेसखिपांनकातेरुगुणछन् ॥ क्याववा
 गुणभन्याः पीरो १ तिलो २ मिठा ३ मधुरो ४ हृषो ५ कषो ६ दवायुहरण ७ कफकोनाश ८ रुमिः रोगहरण
 ९ सुषकोदुर्गंधाहरण १० आमरणशोभाः ११ वैतन्यवरावन्ता १२ कामदेववाटन्या १३ पतितेरुगुणपा
 नकाछन् ॥ पांनभन्याकोखर्गतमापनिदुर्लभछसुवनसंयुक्तनयारंगवंदछ ॥ भुपारिवरताभया
 रंगघटनादुंछ ॥ पानवटनाभयाभुगंधिदुंछ ॥ वृनवरताभयासुखकोदुर्गंधीदुंछ ॥ तस्रअथवुन
 सूक्तगरिवांनखानुः ॥ ॥ जन्मस्थानेतिः हेसखिः कलुरिकासुगंधीकोजोदछ ॥ जोवस्तुजोहाजन्म
 तोनकोगुणप्रकासदुंदैनसोभावगुणगरोजोछ ॥ कस्तुरिमृगकानानिमादुंछ ॥ मेराणभीमार

रामः
 ५

उनेजादछन् २

दुंछः ॥ मेराणभीमाछ भनिवालपाउंदैनः ॥ क्यागकाउंछ भनिअंतआंगमाहेछः ॥ हिलोलाग्योकिभ
 निवारश्लोकप्रावतीलेपदि ॥ ॥ एलैप्रकारलेसुरथसंभोगगरेरराजाआग्यागछन्ः मताकेहि
 जादिनभन्या ॥ पप्रावतीभंसेः हेमहाराजतंमामंत्रीदेविमवदुनैषुसिभत्रां ॥ भोलितमामंत्रीकोख
 वगरुलामनि ॥ ॥ उवांत ॥ प्रातशमयेमाराजालेन्योसवैवृतात्तमंत्रीथिंकस्याः ॥ पखोभन्याकोछः ॥
 दिनुलिनुआक्रायेठकोकुरोकहनुः शुधावनुः पानुः शुवावनु ॥ पतिछथोकपृतिकालसण्डुन
 हेमंत्रीआजतिमिकनपानुसामाधिआउन्याछभन्याः ॥ पतिसुनिमंत्रीभंछः हेमहाराजामेराकारण
 विषकालडूआउन्याछः भन्याः ॥ ॥ उवांत ॥ मध्यानवेलामाविषकालडूलिकनकेठिआईलडूमे
 त्रीकनदिइ ॥ मंत्रीलेलडूकुरकनदियोषानिमात्रैकुरमयो ॥ ॥ न्योभन्याकोदेपिराजारिशा
 निभयाः ॥ न्योखास्त्रिकोकासकेनः ॥ मेरामंत्रीकनमानेआठिछनन्योकागर्निछभंदाः मंत्रीवितिग
 छः ॥ हेमहाराजप्रीतिकारणनिमीसंगछ ॥ मसंगप्रीतीकैनहेमहाराजः ॥ महतारिवावादाज्युभा
 रजन्मस्थानकातेजीस्वामिभजन्याधर्मस्वामिकोहो अरुतादणजे मांछन्ः जोजकोअंनपाअंछ

जस्को सरणमा आउछुः तस्को मन लेवन लेसका सम्मशे वागनु न्यो उत्रमहोः ॥ जो विवक्षे नरुः न्यो दु
दपां निः वशे वरदे प्रहृषां निभुकिजो छुः ॥ दुदरहं छुः तसै संसारमा छुः ॥ जो वडो छुः कशला सहं छुः कु
लधर्म छोउ देनः ॥ हे महाराजा यो कतिम कहुं ॥ मेरो गरा योगरः ॥ आज आधा रात सम्म संभोग गरे
रतस्का कामजो घमान खले निन लेखा विश्रुल जस्तो गराये रः तस्का गहना सवै ल्यावरत श्वे बालन पा
वस मन्योरः राजाले हवस मन्यारः राजा गथा ॥ ॥ आधा रात माज्या मंत्री ले भन्या को राजाले गथाः ॥ ग
हना सवै ल्यायाः ॥ तव मंत्री भंछु हे महाराजः इगहना वेविल्या व मन्योरः राजा गहना लियेर भुनारका
घर गथा ॥ ॥ मंत्री जोगि भयोर जटा को मुकुट अर्द्ध वन्दु फुलगरि विश्रुल हात मालिः ॥ अलिक आधा
कोटलाई मशानमा वस्यो ॥ ॥ राजाले गहना लियेर भुनारका घर गथा गहना देखाया वेवन आजो भन्या
॥ ॥ आफु लेक माया का राजा काछाप लाया का गहना भुनार ले विश्रार भुध्यायाः ॥ हे सिपाहि यिद वार का गह
ना पश्चावतिका मि वसी ले काहा पायो भन्याः भुनार ले कोट वाल थें कस्याः को हाल शक भयो ॥ कत वाल ले
समा न्योर राजा थें लैग्यो ॥ राजाले भुध्याया हे सिपाहि इगहना कोहाया इथि भन्या ॥ तव राजकुमार भंछु

रामः
६

हे महाराज जुं गुरु ले दिया था वेविल्या भन्यार ल्यो न्नां थ्यो ॥ मता गरा योग न्यां दुं भनि दे सि राजाले भन्या को
टवाल राजा का आग्या ले गहना वेआ सिपाहि कनजो हा मशानमा सिपाहि को गुरु वस्या को थियो उसे मशा
नमालेयो ॥ कोटवाल ले गुरु थें सुध्यायो ॥ ॥ हे भगवान् इद वार पश्चावतिका गहना तिमिले कांहा पा
याथे उभन्याः ॥ योगि भंछु आज भुध्या रि वनुई शिहो ॥ आधा राति मात्रां हाडा किनी हरु वहुनै आया ॥ तिस
वैले रातो मंडल वनाया ॥ ताहिं नीत्र एक मानि सम्भारि बान लाया ॥ तसै मै ले एक कावो मजो घमा विश्रुल
लेहान्यारः तस्का गहना पसाई रगेः मैले तव लि राघ्यो थ्यो सिधे कन वेवन पथा या काहुं न निभु प्रभन्या
॥ एति भुनि कोटवाल ले राजा थिं वुता न्न कस्यो राजाले भंजार्नि के टिकन पठाया पश्चावती कन नां गिनु
ल्याया रहे न्या निभु ये देष्याः ॥ कोटवाल थिं कस्या कोटवाल ले राजा थिं कस्यो सां वोर हे छु भन्यो ॥ ॥ अ
र्थ नाश मिती ॥ ॥ हे महाराज वडाले येति प्रकाशन गर्नु ॥ संपति ना सभया को मन को संताप ॥ घर को दु
ःख वरित्र ॥ व्योढे त्रिगन्यो ॥ अमान भन्या को ॥ एति कुरो जो छु वडाले प्रकाशन गर्नु ॥ एति भन्या ॥ फेरि रा
जा कोटवाल थें भंछु न् ॥ हे कोटवाल ते सैन्य सिधें सुध्या पश्चावती वो क्ती रे छु तस्कन वडा उंडु न्याहो

ननिभुधाभंदा॥कोटवाललेभन्योः॥नवतपसिभंछुहेकोटवाल॥वस्त्रणकन।गाईकन।खिकन।वालष
 कन।गोत्रीकन।जस्कोमन्नवात्रिंछु।जोसरणमाओउछु।यतिकनमानुछेनः।ईअवधाहुंः॥उनको
 वडोअपराधभयादेसत्यागगरिदिनु॥उंउयतिकेहुंन्याहो॥॥यतिभुनिकोटवाललेराजाथेंकस्यो
 ॥नवरालेःकशैलेनदेपिकनयथावतिकनसहरदेपिनिकालिदिषोपा॥॥उप्रांतः॥राजाःमंत्रीलेषो
 रामावज्ञार्थःआक्रोदेसलैयाःविवाहगया॥यसोभन्याकोछुः॥॥सम्पुन्युक्तस्यदेनस्यवस्त्रायननग
 गति॥कोलिकोविष्णुरूपेणभजतेराजकन्यकं॥॥नदेष्वाकोकुरोतगर्नुःदेष्वाकोकुरोपनिविदार
 लेगर्नुः॥काहाभन्यादसिसंतापहुंछु।ज्यायमराजालेलेष्वाकोछुःन्योअवस्यहुंन्येछुः॥न्योअन्येथ
 गर्नदेवतालेपनिशक्तुछेः॥उक्तं वः॥हेमहाराजवडाकेनविनाशकोसमयहुंदा।अष्टिबुद्धिलेछो
 उदछुःराजारासवंदलेसूवर्नकामृगपःछिलाग्यारशिनागुवाया॥॥नलघोषराजालेब्राह्मणक
 नेडोलिवोकायारसर्पभेषयाः॥सहश्रार्जुनलेब्राह्मणकीगाईहरणगय्यारसंपूर्णसेवीमारिया
 ॥॥राजायुधिष्ठीरलेज्ञानिभैकनजुवाषेल्यारःरानिभार्थदेशसवैसंपनिहान्याः॥यस्तोहुंछुः॥॥

रामः
 ७

उप्रांतः॥छोरिकामायालेदुःखलेदंतघातराजामन्याः॥यतिकथाहाकहिवेतालभंछुः॥हेमहाराजविर
 क्रमशेनदंतघातराजामन्याकोपातकयतितिनमध्येकत्कनलागछुः॥जानिकननकसाक्षातिफुटि
 मरौलानकोल्यासिरफाटिमरौलाभन्दा।राजाविक्रमशेनआज्ञागर्हन्॥॥विनाविचारलेपथावती
 कनधपायोराजाकनपातकलाग्यो॥यतिभुनिवेतालफेरिरुवैमागयो॥॥राजाफेरिरुवैमावजिमृ
 तककांधमावज्ञार्थवाटमाहिउदाभया॥॥ईतिशिवदासविरवितायादेतालुपयविंसतिकायांप्रथमक
 थाहासंपूर्णसमाप्तं॥शुभं॥॥नेत्रासरस्वतीदेवीश्वेताम्बरणभूषितां॥पद्मपत्रविशालाक्ष्मीःनित्यपद्मा
 सनेस्थितां॥॥फेरिवेतालभंछुहेमहाराजामअर्कोकथाहाकहंछुशुंनुहवस॥हेमहाराजभुनःएक
 धर्मस्थलभन्याकोणगरथियो॥ताहिगुणनिधीभन्याकासजाधिया॥तांहियककेशवभन्याकोब्राह्म
 णधियो॥तस्कीछोरिमंदरवतीभन्याकिथिर्ःमहाभुंदरिथिर्ः॥तत्कनमांगभनितिनवपवरआया
 ॥रूपःगुणःधनःलेजिनेजनावरोवररखाछन्॥॥केशवविक्रउनलायोएकिछोरिकातिनवरआया
 कत्कनदिउःकत्कननदिउंभंजोभंदेकेठिकनसर्वलेउस्यो॥तत्कारणमंत्रजान्याकनकेशवलेगको॥

वेशलेहेयार भनलायाहेवास्मण योकंन्याजिउंदिन पंचमी पनवमी २४ वृष्टी ६ वृष्टी १४ अष्टमी ८ एतिति
 धिमा ॥ मंगलवार शनि सरवार ग्रहकादिनमाउ स्याकोओषधि पनिलादेनः ॥ रोहिनी ४ मृगशिरा ५
 अश्लेशा २ विशाखा १६ मूल १२ कुत्तिका ३ ईनन सत्रमावेधासायाकोरोगिमर्छः ॥ ॥ ईंदिः वोष्ठः कंठः
 विउंठोः गंडस्थलः पंठः सिरः हातः जंघः नाभीः कांधमाः कोषामा ॥ येति ठाउं मा मर्मसंधिदुः योकंन्याताजि
 उंदिन ॥ जिर्नस्थानः उशानः मशानः एति थाउमा सप्यले उकाको ॥ पेटभूतः भ्रमनः विशुद्धिः नाकभुक्का
 कोः ईंदिमाउकाकोमर्छः ॥ वचनविशुद्धिः विपुत ४ सासवद्याकोः विलसणहो योकंन्याजिईन ॥ अरुविवा
 रकागरोभन्या ॥ ॥ येति वैशका वचनभुनिके शवलेनदिकातिरमालैग्योः ॥ संस्कारणगन्योः तिः ५
 तिनेवरतां हिगयारः ॥ घकवरते सैकंन्यासंगमन्यो ॥ दोश्रोवरते सैमशाणमाः मठिवांधिवस्यो ॥ ते श्रोव
 रकंन्याका विरहलेदेशांतरगयो ॥ ॥ देशांतर तीर्थजांदाः एकावास्मणकाघरगयोः ॥ वानमाग्योः तेसवा
 स्मणलेहेतपसित्रां हिंभोजनगरोलाभन्योः ॥ वास्मणिलेवानुसाराजामगर्दाः वालषरुणलाग्योः ॥ वास्मणि
 लेवालषकनआगामावालिदिई ॥ तेतिगन्याको यर्दसिलेदेधोः ॥ गृहस्थानिवास्मणलेभानसाभयोनात

रामः

वाउंनन्दाः ॥ एस्तोगन्याकोदेखिविदेसिवास्मणलेदियाकोभोजनवायेन ॥ ॥ गृहस्थानीवास्मणभंछः ॥
 हेतपसिक्काहाभोजनगर्दैनभनिशुध्याउंदाः तपसिभंछः जस्काघरमाएस्तोरासकर्मछः ॥ तस्काघ
 घरमक्यानवालाभन्योः ॥ तेतिसुनिगृहस्थानिवास्मणघरभीत्रपस्योरः पोस्तकल्यायोरः पोस्तकहरेमंत्र
 जपगन्योरवालषजगायो ॥ तपसिलेदेधोआश्रयमान्योरविनायोः ॥ योपोस्तकदियानामेरिस्वास्मि
 जियाउदाहुंभनैयतिविताईतां हिंवेस्यो ॥ ॥ आधारातमाघरभित्रपस्योरपोस्तकलियो रजोहाकेटि
 कनपोल्याथातां हिगयोः ॥ ॥ मशानमावल्यालेभुध्यायो ॥ हेमित्रदेशांतरंगत्वाकेहिविद्यायायोजा
 न्योभंदा ॥ ॥ न्योभंछः मृतसंजीविनीविद्यायायाकोछभनिदोश्रोभंछ ॥ तवन्योमशानवल्याभंछः ॥
 तिमीलेविद्यायायाकोभयायोमेरिप्राणपियारिजगाईयोभन्यो ॥ एतिशुनिकनपोस्तकफोयोरमंत्र
 जपगन्योरकंन्याजगायोः ॥ जोसंगैमन्योभ्योन्योपनिजाग्योतेस्कंन्याकानिमित्येफेरितीतिनेवररुगरा
 गणलाग्या ॥ मशाणवासिमेराधर्णलेआयाकिमेरिहोभंछः ॥ जोसंगैमन्योभ्योमेलेवेदागरिषोजित्याया
 किमेरिस्वास्मीहोभंछः ॥ जोपोस्तकषोजित्याउच्यामेलेजगायामेरिहोभंछः ॥ येस्तेप्रकारलेरुगरागर्नलाग्या

॥ एति कथा हा भनि कनवेनाल भंछु ॥ हे महा राज न्यो कं न्या कस्कि दुं छे ॥ कहुं न वो लि र स्या सि र फा टि म रौ ला
 ॥ न्या न पान्या को ष पु टि म रौ ला भंदा ॥ राजा विक्रम शे न आ ता ग र्हुं न ॥ ज श्रे जी या यो न्यो जी य दा ना वा वु
 हो ॥ जो संगै म न्यो संगै जा ग्यो न्यो भाई हो ॥ जो म शा न मा ॥ म टि वां धि व स्या न सै कि स्या छि हो न न्या ॥ ए ति शु
 नि वे ना ल फे रि रु पे मा ग यो ॥ राजा विक्रम शे न शि शे का रु ष फि दा भ या ॥ ॥ इ ति शि वे दा श वि र वि ता
 यां वे ना ल पंच विं स ति का यां द्वि ति य क था हा स मा प्र भु भ म् ॥ २ ॥ ॥ वि ष्वे श्व रं न म स्तु त्यं ग जा स्यं मृ ष वा ह
 णं ॥ वी ष्म ना शं म हा का यां न मा मि य ण ना य कं ॥ ॥ न व वि क्र म शे न रा जा जाई सि शे का रु ष मा व द्धि शे रि
 का टि मृ त क कां ध मा व द्धाई वा ट मा हि उ दा ॥ न व फे रि वे ना ल भंछु ॥ हे महा राज म अर्को क था कहं छु ॥ शु
 न ॥ हे महा ज एक व र्द्ध न ना म न ग रि थि यो ॥ ते स्त ग र मा स्त ड ग दे व भ नु रा जा थि यो ॥ रा जा सिं हा स न मा
 व सि भ न्ने ला ग्या ॥ ॥ ए द्वा न्या दार मा को हि व स्या का छु न कि छे न न भ नि रा जा ले स्वे ध्या र ॥ दार पार
 विं ति ग र्छे ॥ ॥ प्र स्वा द ई ति ॥ हे महा राज थो क्वा का ॥ अ ल्पि के हि अ लं वे न भ या का ॥ वि ना वर्ग त क्वा ॥
 आ थो के हि न भ या का ए स्ता आ धी दार मा व स्या का छु न भ न्या ॥ त स्तै व त्ता रह दां ॥ फे रि अ र्का दि न द

रामः
 २

क्षी ण दे श वा ट वि र व र भ न्या को रा ज पु त्र पु त्र शे वा ग र्त्त भ नि आ यो ॥ शे ज को द र्श न ग न्यो ॥ रा जा ले स्वे ध्या हे रा
 ज कु मा र ते रा जी व न वृ ति क्वा छु भंदा ॥ वि र व र विं ति ग र्छु ॥ हे महा राज ह ज्जार रु पे ज्ञां अ थ फि दे उ न न्यो सा म
 ग्रि ह ज्जार रु पे ज्ञां यां न्या क्वा छु न नि रा जा ले भंदा ॥ वि र व र विं ति ग र्छु ॥ म ॥ छो शे ॥ छो रि ॥ स्वा छि ट्वा र ज
 ना छे ॥ यां वां को हि छे न भ न्या ॥ ए ति भुं नि मंत्री ह ह स वै हां स्या ॥ रा जा वि वा र ग र्ण ला ग्या ॥ किं अ र्थे अ त्मं तं
 व द्धु ध नं या व ते ॥ ॥ क्वा अ र्थ ले व द्धु न ध न मा ग्यो ॥ व द्धु न ध न दि या को को हि दि न म फ ल सु फ ल पा उ
 ला भ नि वि वा र ग रे र भं डा रि क न वो ला या र ॥ आ ग्या दि या ॥ हे भं डा रि य स सि या हि क न ह ज्जार रु पे
 ज्ञां अ थ फि दि न प्र ति दि न प्र ति दि न्या ग र्त्त भ न्या र भं डा रि दि न ला ग्यो ॥ न्यो वि र व र भ न्या को रा ज पु त्र भ नि
 दि न का ह ज्जार रु पे ज्ञां लि क न ष ट् द र्श न डा की क न द क्षी ण दि क न ध र जां थो ॥ भो ज नं ट हि त्वा ॥
 ष ड्ग ट्वा ॥ न व वि र व र ध र जाई भो ज न ग रि क न ॥ हा न मा ख ड्ग लि क न रा जा का दार मा प ह स व द्धु ज्ञां
 थो ॥ ए सै प्र का र ले शे वा ग र्थो ॥ ए क दि न ता अ र्द्ध रा त्रु स म य मा सु ड क दे व रा जा सु ध्या उ थ्या ॥ ठो का मा को

कभंदा ॥ वीरवरः मकुमहाराज मंथो ॥ धनकोई साग न्याले आभंदा आवस ॥ वसभंदा वसोस् पर
 जाभंदा परजा वस ॥ वोला उंदा वोलोस ॥ दुकुम्मा वलो सज्या लामिले लायो वोला योग रायोग नुप
 र्छः ॥ शेवक कोधर्म होः ॥ शेवक ले सुख संग खांनुप निहैनः ॥ निंदा पुन्या ईउ दुला मनुदुंदैन ॥ आ
 म्माई छाभया को गरुला मनुदुंदैनः ॥ शेवक ले आफु मन को अभिप्रायः गरुला मनुदुंदैनः ॥ क्या म
 न्या आफु देहि आफे ले जोरुः ॥ न्या आफु शुषिदुंदैनः ॥ एसो भन्या को छु शेवा दधिठु लोधर्म के हिहैन
 न ॥ कोहि जोगी जन ले पनिग मपाई शकनुहैनः ॥ ॥ एक दिन मुई रातमाः मशानमा खाहिले शे
 या को शब्द राजाले भुंन्याः राजाले भुध्याया ॥ ये विरवर न्यो शब्द क्या हो सुनै मंडे न्याः ॥ भुन्या महाराज
 भन्योः राजा मंनुहन् ॥ हे विरवर न्ये स्कानजी कसम्म जाई न्यो रुएया क्या होः क्या कारण ले रुंछः ॥ न्यो
 बुझिवाडो आवभ निराजाले आग्या गथा ॥ ॥ एसो भन्या को छुः जानिया दितो ॥ वाकर कोधर्म पठाउं
 दा बुझिछुः ॥ संपत्ति सकिंदा मास्वाहिको धर्म बुझिनुहः ॥ एति भन्या पछि वीरवरः न्यो सव विचार

रामः
 १०

गर्नगयो ॥ भुंदरी दिव्य कयरा गहना लाया कि भुंदरि स्वाहिन रुंदा देयोः ॥ कैरु नाव न्याः कैरु कुद न्याः
 कैरु दगु न्याः कैरु हास न्या कैरु रु न्याः ॥ कैरु विलाउ नाग न्या महादुः खीनमान भया की देष्यो ॥ मयत्ति
 दुःखी पापी निभनिलोठ नसादै रुंदा देयो वीरवर भुध्याउ नलायो ॥ हे भुंदरितं को हो सभंदा क्या नरुंछे
 सभंदाः न्यो मंछेः मराजल स्मी हो भनि ॥ क्या अर्थ ले रुंछे सभंदाः ॥ केरि न्यो राजल स्मी मं से अंधकार
 ले व्याप भया काठाउं मासुड क देवराजा छुन नित कामाया ले रुंछु मंदाः ॥ वीरवर मंछुः हे राजल स्मी के
 हिउ पाय छः ॥ ज्याउ पायी गरी राजा सता युद्धु शोउ पाय कहु भनि विरवर भनदाः ॥ तव राजल स्मी नं
 छेन ॥ हे विरवर राजा कि पूजा गन्या कि काली का जोरुं ॥ तने काहजुर जाई तेलने रापुत्र को शिर काटि
 चडाया राजा सता आयु होलाः भनि राजल स्मी ले मंदाः ॥ विरवर आफा धर गयो ॥ ॥ धर जाई आफ्री
 स्वाहिक नसुन्या कि उठा योर भनलायो ॥ अघिको न्या राजल स्मी ले भन्या को न्यो वृत्तान्त कयो ॥ ॥
 नार्या कि स्तिथि ई आं पाः नयनः को सव न्या कीः यो स्वाहिकाल से एहुं न्यो सवै लसेण ले पुक्त नया

कीवडिगंभीरमहाधीर। महालज्जालेयुक्तभयाकिः॥ नप्रीतनयाकीः शुंदरमधुरवालिभयाकीवी
 रकीपुत्रीः वीरपुत्रजन्माउन्माः वनउनिः॥ आवर्तलेयुक्तभयाकी हातिकासुरजस्तजंघभयाकीः॥ य
 नास्तनभयाकीनेस्कापुत्रपितामाताकोसेवागन्याकुं नेस्कावावामहतारिकनधन्येणलभनु। जसखा
 लिलेविश्वासराधीन्योउत्तिमहो। यतोभन्याकोहृजस्कोपुत्रजैसिद्धः अर्थलाग्याकोविद्याहवस॥
 शरिरमाश्रागेयहवस॥ भलामित्रसंगकोभेटहवसः॥ खादिमिआक्राशगमावल्याभलोवोल्याईपां
 चथोकसंतोषदिन्याहुन॥ ॥उप्रांत॥ वाकरगराद्योनगन्या॥ कृपनिराजासटल्लमित्र। आक्राराग
 मानवल्याखास्तिः ईवारथोकमस्तकदूलाभिवलारिः मुखवाटकासुरिहुनः मित्रसंगविज्ञकोमं
 नरणरहोस॥ गुणवतवाकर्षिपियारिखास्तिथिंजोखामीछतसथिंमृत्यंतमनमिल्याकोभयाः॥ य
 तिथेंदुःखकस्याभुखहुंछन॥ ॥वदुतकाकहुं॥ ॥मैलेमर्नमायांराजाकानिमित्रनिश्चयः॥ हे पि
 येतंतेरामाईतिथिंजाः वावामहतारिसंगसमयेवर्तमानगन्यासभनिवीरवरलेभंदा। तस्कीरांतिविंति

रामः
 ११

गर्हिनः॥ वावालेमहतारिलेभाईलेहिजोनेरोगतिपतिकोस्वामियेहिहोननिदिया॥ नवपुत्रनेति॥ ॥हे
 स्वामिछोशलेमकागर्हुः॥ अरुईमित्रलेमकागर्हुः॥ दाजुभाईलेमकागर्हुः मित्रलेमकागर्हुः॥ वा
 वामहतारिलेमकागर्हुः मेरागतिपतितिमिहो॥ तमोवाउमाछाउन्याछैनः॥ मतापतिवुताहीखांमिकोमा
 वैआप्रागन्याधम्मवि कोहो। योधमभमायाकोअधिदेविकोछ॥ ॥नदानेरिति॥ ॥स्वामिहरुलेउपा
 स्यालेः वुतगन्यालेभुदुहुंदैननः॥ अरुवुततिथकेहिनगरिश्यापतिः॥ केवलस्वामिकावुतमारस्यास्ति
 भुदुहुंछन॥ स्वामिभन्यापद्धिअंधाभयापनि। कुष्टिनयाः रोगिनयाः कंगालभयापनि स्वामिकोसेवागनु
 पद्धः॥ तनमनलेन्योमहासतिहो॥ वीराणपुरुषलैकोमुषनहनु॥ ववननबोलनु॥ एतोधर्महासोहोभनि
 येत्मास्त्रिजोछतस्कोउत्तमगतिहोः॥ एतिनजान्यास्त्रिहरुषामखानकमाजांछननिश्चयः॥ ॥एतिमह
 तारिकाकुराभुनिवावाकाकुराभुनिपुत्रभंकुः हेवावामहतारिः कानविवादगर्होः मकनमारिकन
 राजासुदुगदेउन्याभयाअकोतरहछैनः॥ मैलेप्राणदिनुछः जस्कोदोलथपांनुतस्तीमिन्योपानदिनु

:सेत्रीकोधर्महो॥ ॥मात्रेति॥ ॥महतारिलेविषदिन्याभया॥वावालेकोशेवेन्याभया॥राजासर्व
 स्यहन्त्याभयाः॥कोशरणलिन्याकृभंदा॥छोरिलेभनिभलोभनिसूतमतिहोभनिः॥एतिवारैजनलेमत
 गन्यारदेवीकाथानमागया॥ ॥उप्रांता॥ ॥सुदुगदेवराजावीरवरलेकसोगर्भनिलुकिकनःरस्याको
 थियोः॥त्योराजासुदुगदेवराजालेमनेलेभंछ॥जस्तोवुद्धिदुंदोरहेछःतत्तैमतिभावनादुंदोरहेछः॥सो
 भावयनितत्तैदुंदोरहेछः॥भावीलेलेव्याजस्तोदुन्याअवस्यैदुन्यैरहेछःभनिरहेछविदारगन्योलुकि
 रस्यो॥ ॥वीरवरलेपूजाकोशामयीथालमाश्रुसनापानिधुपदियनैवैथलिकनदेवीकाथानमाजाईपू
 जागरिहातमाखजलियेभंछ॥हेदेवीमराछोराकोसिद्धकांवजाउछुःराजासुदुगदेउसनायुहवस
 ॥येतिनिकनशिरकाठिवजायोः॥गिंडमैमाषस्योमैमाषस्याकोदेविरदाज्युकामायालेनविकोमानि
 रःवहिनीलेपनिपेटफारिमरिः॥आमायनिछोराकोछोरिकोमायावडोविरहविख्यातभयोन्निको
 लाग्योक्यानजीउंभनिप्राणत्यागगरिः॥तीतिनैमयायछिवीरवरभंछः॥ईतिनकोठमरणभयोराजाको

रामः

१२

शेवागरिहजारहपैजोंअथफिलिक्यागरुंलामेंपैनिक्यानजीउंभनिआकुसिरकाठिकनपनिवजायोः
 खस्योः॥ ॥एतिवारैमन्याकोदेविराजामनमाविताईभंछः॥मेरानिमित्त्ययस्वावारैपरियारकोसय
 नयोः॥एतिमारिमैलेरजाईगर्नुकाप्रयोजनछभनिकुरिलियेरजसैगलामावसायोथ्योः॥तसैदेवी
 लेहातसमानीआग्यागछिन्ः॥हेसुदुगदेवनेरासत्येदेवीपुसभजोंवरमांगभंदाःराजाविंतिगछन्
 ॥ ॥हेपरमेस्वरितिमीसंतुष्टभयोत्तईवारैजनामृतकनयाकाजीउन्ःभनिराजालेविंतिगन्याःदेवी
 लेहवसभनिन्ः॥यातालवाठअमृतन्याईनरसिद्धिदिधिन्ः॥जोमन्याकाविरवरकापरियारवारै
 जनाउद्याः॥वीरवरभंछः॥हेमहाराजदयावंतराजाःदानगुणकोदाताशंग्रहगन्याराजावडापुण्यका
 वललेपाजीछुः॥राजाकोरस्यागर्न्यापवित्रसूरोयस्तोशेककराजालेपाउनुदुःखभंछुः॥यसोभन्याके
 छुःराजासाधुजनकन्याईतीनथोकशेवालेकलछन्॥एतिकथाहाकहिवेतालुभंछुः॥हेमहाराजःविक्र
 मशेनःराजासुदुगदेवरःवीरवरमाकोसत्याधिकहोभन॥नबोल्यासिरकाठिमरोलाः॥न्यायनपाया

कोषफाटिमरौलाभंदाः॥ राजा विक्रमशेन आग्या गर्हन् ॥ राजा सत्यवादि होत्वा मिका निमीत्ये शेष कजिउ
 दिन् रुन् ॥ शेष कनिमीत्ये स्वामी जिउ दिदै नन् ॥ तत्कारण राजा सत्ये वादि हो ॥ जशेरान्यत्रिणगरि जि
 उमण आधो थो ॥ राजा सत्यवादि हो ॥ एतिकाथा हा कहि विक्रमशेन को वचन भुनि फेरि वेताल रुधे मा
 गयो ॥ राजा विक्रमशेन शिशो कारुष फिदा भया ॥ इति शिवदास विरविता मां वेताल पंद विमति काया
 तृतीय कथा हा समाप्त भुभम् ॥ ३ ॥ ॥ गंगाधर गणधारं जोरि नाथं गणेश्वरं ॥ गोवाहनं गहनं देवं न
 मस्कृत्य महेश्वरं ॥ राजा विक्रमशेन ले मृतक काधना हा लिवाट मोहि डूदा ॥ तव वेताल फेरि मंछ ॥ हे महा रा
 जः सुन मकथा हा अको कहंछु ॥ सुन हे महा राजा ॥ एक भोगवती भन्या कीण गरी छु ॥ तों हा राजा रूपशेन भ
 न्या काधिया ॥ तस राजा काधौ बल गृह मा विदध बूडा भनि मैनि भन्या को भुगा थियो ॥ तस भुगा थै राजा भु
 ध्याउंछन् ॥ हे भुगा तंका कया जां दछु सः कोहों कोहों दे मछु सकहंदा ॥ भुगा भंछु हे महा राजा सवै मैले
 जान्या को छु भनि भुगाले भंदा राजा भंछु ॥ जौं जति तैले सवै जान्या को भया कहतवः ॥ मेरा रूप भुहा

रामः
 १३

उदिनारिक तैछु किछे न भंदा ॥ भुगा भंछु ॥ हे महा राज सुग्ध देश मा सुग्धे स्वौर भन्या को राजा छु ॥ तत्की
 रौते लिभुर भुंदरि भन्या की छु ॥ न्योत मीरानि दुन्या न भनि भुगाले भन्यो ॥ ॥ तीभुर भुंदरी पनिया
 फाघर वस्त्रा मा ॥ मदन मंजरि भन्या कितारी कापिंजरा मा पात्या की थियिन् ॥ तत्थै सुर भुंदरी सुध्या
 उंछिन् ॥ हे सारिकी भुगा केहि कहनः ॥ तं केहि जां दछु सकतै देखत छे सः ॥ मेरा रूप सुहों उदा जो ग्यका
 राज कुमार कतै देखे समा छु की छे न भंदा ॥ सारिका भंछे ॥ हे महा राज ॥ ए भोगवती भन्या कीण गरी छु ॥
 तों हा रूपशेन भन्या का राजा छु ॥ तीत मा स्वामी दुन्या छु न भनियति सुनिकन सुर सुंदरि कन विरह भ
 यो ॥ जसै येति भयो तत्तै रहंदा ॥ रूपसेन राजाले दुन पणया सुग्धे स्वरी किछोरि मग्न भनि गया ॥ सुग्ध देश
 मा युग्या सुग्धे स्वौर राजा कि रौते लिभा ग्न आयुं भन्या ॥ काजी थै नेट गन्या सवै वृत्तान्त कथा ॥ न्यो सवै वृ
 काजिले राजा संग नेट गरई दियो ॥ निदु तलो विती गन्या कन्या थी भै आया काहौ भन्या ॥ सुग्धे स्वरा राजाले छोरि
 दिजो भन्या ॥ न्यो वृत्तान्त लि कन दूखियो ॥ न्यो वृत्तान्त रूपशेन राजा थै कथा ॥ हे महा राज कन्या पांनु भन्या

विंतिगया ॥ राजाले शुभलग्नहे विंती वाहगया ॥ शणिले मदनमंजरिका भन्याकिसारिका समेत आकाश
 रल्याउदिमर्दुनः ॥ राजारुपशेणलेनो शणिकी सारिका कनरः ॥ विदग्धबुजमनिभन्याको शुगाथियो
 तत्कनयकैपिंजरामाराया ॥ शुगाले सुतिशुंदरिसारिका कनदेपोरकामदेउले आरभैमंनलाग्याः
 हेपिसारिवंवलवौवनभयाकीतिमीमसंगसंभोगगरः ॥ हेरसंसारमाजिवजंतूकोमिलापयसंगरि
 दुंछः ॥ फुलकोसारफलहो ॥ दधिकोसारधिठहो ॥ तिलकोशारनेलहो धर्मकोसारसंपतिहो ॥ सरि
 रकोसारकामदेउरतिहो ॥ आजसमकोतेरोवौवनव्यर्थागयेछ ॥ हेसुंदरिजोवनुरपुरुषछः ॥ रतिकर्मक
 नजांदछः एसोभन्याकोछः ॥ जोपसुजातछं रतिकर्मताजांदछः तरठाउंजांदैनन् ॥ घाटवाटेमाररेगछं
 नः कामदेउकाआनुरमायेकान्नगन्याहो भनिजान्यानाविलाकोठिकोहिजांदछन् ॥ हेसारिकाजांहांय
 सिनाथकाईलेअत्यंतवंवलभयाकीछं मत्करिलेथकाईमछः ॥ जवकामदेउकावानलाग्युं ॥ तवपाउ
 मालायाकानेवरकोसवसुनिदेनः ॥ संपूर्णविषयेजवसंभोगदुंछः ॥ संताकीथितीयेत्तोभनिशुगा

तु३

ति४

रामः
१४

लेनन्या ॥ शुगालेईतिभन्याकोसुतिसारिकानंछे ॥ नलोमंछोः तरलोभन्याभन्याकापापिष्टदुंछन् ॥
 स्वास्त्रिकनमार्छन् भनिसारिकालेभन्याः ॥ शुगामंछुस्वास्त्रियनिदुश्चारिनीपुरुषकोवधगछं नः ॥ ए
 सोभन्याकोछः अन्त्यायगन्याः साहसः भयाः मूर्खः अतिलोभः अशौचेः निर्दयाः एतिस्वास्त्रिकासोभाव
 पुनहुनः ॥ एत्तोतिनदुईकोसंवादगन्याकोशुनिराजामंछन् ॥ हेशुगाक्याअर्थलेविवादगछोभन्या
 ॥ सारिकाभंछेः हेमहाराजकथाहाशुनुहवस ॥ येवाशपुरभन्याकोणगरीथियोः ॥ तांहामाहाधणभ
 न्याकोवनिजोथियोः ॥ तत्कोछोरोधनसेयेभन्याकोथियो ॥ तत्कनपुन्यवईणभन्नाणगरिमावनिजोकि
 छोरिविहागन्याकीथिईः ॥ तत्तैसमयेमान्योवनिजोसरिगयो ॥ उपांत ॥ धनसेयभन्याकोछोरिथि
 यो ॥ तत्तैधनघरकोसवैत्रुवामाहाचोरससुरालिकाघरगयो ॥ ससुरालिलेवदुतमानगन्याकेहिदि
 नताहिवस्योः ॥ ससुरालिथेभन्योहेसासुससुरालिहो ॥ तत्तीकोरिपठावभन्योरहवसभन्यापठायाः ॥ यो
 स्वास्त्रिलिकहिंयो ॥ तत्तैआधावाटमापुग्योतसेस्वास्त्रिकनभन्योहेपीयेआजजोहावरोभयछः ॥ तेरा

न

गहना कपरा सबै मथै राखन देन न्यो र गहना कपरा सबै लियो ॥ स्वास्तिकन अंध कूपमाः हाल्यो
 र आफु पल्ले घर गयो ॥ न्यो नारिले कुवा माः वडो सब गरि रुंदा बाट काव दुवा हरु ले भुन्या र न्यो कू
 पमा गयो र देव्या ॥ अकला मापन्या की रे छः कले हाल्यो भन्या रः स्वास्तिक रुंदा तिवाट काव ठो हिले
 फिक्या र बाट माला र्दियाः ॥ न्यो प्रनिकता जो भनि रमा इतै गेः ॥ माई तिले भुव्या या हे पुत्रीः क्या हो फ
 कि आई स भंदाः ॥ हे वावा बाट मा चोर ले क्षेत्र को र मेरा गहना सबै चोर ले लै गयो म भागि जाँ हा आया ॥
 नम्रा जुवाँत्री को थाहा छैनः म न्या किः वा न्या भनि ॥ एति भुन्या र वदुत सो क गन्याः ॥ छोरि बुझा या जनरो
 छोरि हाँ मिघालो ला धंदा जन मान्भन्या ॥ ॥ उवाँत ॥ ॥ फेरि केहि दिन मा ससुरा का घर मा न्यो धन
 सये भन्या को वनि जाँ गयो ॥ जसै दै लागे रा पुग्यो त सै आ फ्री स्वास्तिक दे र्यो र सं कामान्योः ॥ अवकाप
 गर्छे भन्या जस्तो मान्यो रः न्यो स्वास्तिक भंसेः ॥ हे स्वास्तिक धंदा न माने न डराव भनि र घर लै गिः ॥ सबै ससुरा सि
 का परिघारी खुसि भयाः ॥ अंकमालि गन्या कति दिन ताँ हि वस्या ॥ उवाँत ॥ ॥ एक दिन ता राति सुन्या

रामः
 १५

मा स्वास्तिकन मारे र गहना कपरा लिकन आफु घर गयो ॥ इति प्रत से मै ले देव्या को छु रत व पुरुष
 को प्रयोजन छैन भनि सारिकाले भन्या को सुनेरः ॥ भुगा भंछुः हे माहा राज एसो भन्या को छुः ॥ ॥ वाजि
 वार एलो हाणां काष्ट या घाण वाश शां ॥ एति पुरुष तातो एणं अंतरं वदु मंतरं ॥ ॥ घोडा को हातिको लो
 हाको काठको दुंगाको कपराकोः स्त्रीको पुरुषको जलको ॥ एतिको वदुत फेरुं छुः ॥ कोहि अमोल
 का छुनः ॥ कोहि तु सै पनि छुनः ॥ परंतु जानये कै छुः ॥ एति भुनि राजा विदग्ध बूडा मनि भुगा थै भुव्या
 उंछुनः ॥ हे भुगा स्वास्तिका दोष कह भंदाः ॥ भुगा भंछु भुन महा राज ॥ येक कावन पुर भन्या को नगर
 थियो ॥ ताँ हा सागर दत्त भन्या को वनि जाँ थियो ॥ तको दूत नन्या को छोरो थियो ॥ तक्षे श्री पूर भन्या कान
 गरमा समुद्र दत्त वनि जाँ कि छो रि व्या हा गन्या कि थिः ॥ न्यो वनि जाँ व्या हा गरे र आफु घर आयोः ॥ केहि
 दिन घर मा राख्योः ॥ आफु व्येपार गर्न जाँ न भनि ठान्यो रः स्वास्तिकन माई तिका घर पठा यो न्यो श्री दत्त भ
 न्या को वनि जाँ समुद्र पार व्येपार गर्न गयो ॥ ताँ हा वदुत दिन लाग्याः ॥ ताँ हा त समुद्र दत्त वनि जाँ कि

छोरियोवनवतीसैमात्रैवदिः॥ ॥ येसोभन्याकोछः॥ ॥ जवजोवनहुंछनकसैनराशोपनिरामोदेवि
 नछः॥ याकन्यासमहेमाश्रमिलोपनिगुलियोहुंछः॥ तवत्योघरमावसेरजालवाठगलिमाहेनला
 गि। तसोगर्दयकदिनताजुवानभुंदरपुरुषदेविः॥ परस्परभयोदेवादेवगथाः जसैसपुरुष
 जमानकनदेवितसैअफ्रीसविथै ननिकहिहेसपिन्योजुवानपुरुषकराकेरमाथिल्याभनिः
 ॥ तेतिसविलेनन्याकोसुनिरसवीजुवानपुरुषथैगैरभनि॥ एजुवानतेराकामदेउकोशवाग
 नंआंजोः॥ तेराकामदेउकोईआभयासमुदुदतवनिजोकिछोरितिमीशंगएकान्नगर्नाकोई
 आगछिन्नमंदाः हवसमभरेआउलाशतमाभन्योः॥ ॥ एसोभन्याकोछः॥ ॥ अतिभुंदरपुरुष
 देव्या॥ सुवासभयाकोवंदनदेव्या॥ सुवासभयाकोफुलदेव्याः॥ धनलायाकोषायाकोपुरुषदे
 व्याः॥ सिहरुकोजोवनअत्रांतवंचलहुंछ॥ शीतपन्याकाहुं पल्लभहुंछन॥ धिउकाधैलाजति
 स्वास्तिहोः॥ ताताफलामतस्तोलोन्याहोः॥ तिदुईयकाठाउभयाधिउकोधैलाआफैरसाउंछः॥ ॥

रामः

१६

तांहाउप्रांत॥ ॥ मालीनिवाघरः तिदुईकोभाकागन्याकोधियोः॥ तांहिंजाईतिदुईकोमिलापभयो
 ॥ परस्परपृतिभयो॥ पृतिभयाकादुईदिनपछिव्याहागन्याससम्मात्रपुग्यो॥ ससुरालिभेदन
 ननिससुराकाघरआयो॥ स्वास्तिलेव्याहागन्याकाखसमदेधिरः मनमाशंकामानि। अवसका
 गरुकताजाकताजाकसोगरुः नभोकनतिर्षाः नणिंदानजाओ. नघामज्यामनपन्याकोगर्थाः॥ अ
 कुरथियेनः मनपन्याकोगर्था॥ मनपन्याकापुरुषथैधैलथां। परपुरुषशंगकोशाथः॥ गोछमा
 एकैश्रुतनुः॥ मनपन्याकोकुरोगनुविदेसजोनुखिकोविनाशकारणहो॥ ॥ तांहाउप्रांतः॥ ॥
 ससुरालिलेआफ्राजुवाईकनवानपिनुभोजनगरायारविष्ठाउनामासुन्यो॥ स्वास्तिकनपनिम
 हतारिकावलटिपिलेविष्ठाउनामासुतपठईछोरिनुवात्रीएकाठाउंसुन्याः॥ त्योवस्यानमाजाईपि
 ठिजैफकिरसुतीः॥ स्वास्तिलेसुवनसुतशंगवोलायोः॥ प्रितीगर्णलायोः स्वास्तितादुःखमान्नलागिः॥ प्रि
 तीभन्याकोकामदेउसंगकोहुंछः कस्तोभन्याः साक्षात्तनभयाकिः॥ कपरागहनालायाकी॥ आ

षामागाजलकपालकोन्याकीः ठिकोलाई कनधुंगारगया किस्विदेष्वा कामदेउदुंछः॥ मुखवंचल
 उंभोमुखगरिवडोसकगरिहंसनुः॥ आसनवंचलगर्नु। ओंगभावनुजमाउनु॥ पुरुषसंगसंमुख
 नयेरसविकामुषहेरेरवडाभाग्यमानिहोंनन्याः॥ आहो नगर्न्या कथाहा कहन्याः॥ फलानि हि
 स्की उत्तियेतिभनिआहोंनगर्न्या॥ कानकनाउन्या एत्तो लक्षणवेष्याकोहो॥ आक्रास्वामिसंगवि
 रक्तवेष्यागर्न्या। आंषाकोभूकुटिवांगागरिरिससंगहेन्या बोल्यापनिरिसउठाउन्या॥ एतिथो
 कदुन्यास्त्रिताभिसारिकाहो॥ एत्तेप्रकारलेपिठफर्किसुतिथीः॥ ॥ एसोभन्याकोछः॥ ॥ रागि
 जोछन्योनिंदायाउछः॥ वरोवरप्रितीभयाकिस्वीपुरुषभयापनिसुखनिंदादुंछः॥ जत्कोरागरंगप्री
 तीकेहिनभयाकाकोदुंगासापनिसुखैसुतछनः॥ नेस्वास्त्रिकोरागरंगकेहिदेवेनरलोम्यासुत्योः॥
 जवलोम्यासुषनिंदासितसुत्याकोदेधिरः॥ वर्यानदेविउठेरजोहाजारस्वामिथियोतांहिगेः॥ आधा
 रातमाहिंदिः॥ जसैधरदेविहिंदिथिनसैवोरलेदेष्वाविताउंनलाग्यो॥ योगहनालायाकिस्वास्त्रि

रामः
 १७

काहांजांछेभनिवोरपछिलाग्यो॥ ॥ एसोभन्याकोछ॥ ॥ जोणारिवारम्बारकुदुनिसंगप्रीतीगरेर
 नाषाकेतगरिभुकोपुरुषबोलाईभाषागरीत्योआयनभनिआसुकारिरुंसेआक्रास्वामिकनदो
 षलाउछेतन्योवेष्याहोभनिजांनु॥ एतिगुणबुजिवोरपसीलाग्योः॥ ॥ उष्टांत॥ ॥ नेत्कोजारस्वामि
 जोहोः॥ नेत्कनजांहाभाषागर्न्याकोठाउंथियोताहिंवसिरस्योथोः॥ तांहाकोहिपुरुषआयोरेदेष्वा
 योवोरहोनिश्रयभनिमारैरगैगयोः॥ त्योस्वास्त्रितांहापुगिरमन्याकोदेवीवडोविरहमानिः॥ जस्स
 गप्रितीकृतसंगभेदुंदातिनलोकतांहिंदेधिंछः॥ तस्संगदैवलेविजोगगराईदियोतिनलोकके
 हिदेधिनत्योणारियाणिविरहलेयूक्तभैकनः तस्मृतककनअंगालोहालिरमरेछभनिजाणिवंदन
 लाईदिईः॥ पाणपुत्राईदिईमुखकोबुम्भणगरि। एतिगर्दाजोअप्यारेदेविदियालाग्याकोवोरथि
 योतश्रेत्योवृत्तानदेख्योः॥ ॥ उक्तंयथाविंतयामिसततंमयिसाविरक्ता॥ सान्यमिच्छतिजनंसनोन्म
 क्तमेः॥ अस्माकृतेवपरितुष्येतिकः विंदंन्याः धिक्तांवतंवमदनंबईमावमांव॥ जसैयेतिभयोतसैतां

हावरकोरुवरहेछः॥नेसरुबमाएकयसरहेछः॥तशेवितायोः॥नेसमृतकमायस्योरनेसनारिसंग
 सभोगगरुहन्योरः॥तस्मृतकमायस्योः॥त्योमृतकउठिअंकमालिगभोमुपदुन्दरागर्दादांतलेनाक
 लुसेरयसंगेगयो॥मृतकफेरिलोयोः॥त्योस्वाहिरक्तलेमुद्धियेरजोअधिकीआप्रीसखिथैताहि
 गयेरःबडोसवगरिरुनलागि॥नेरागर्तालेमेशेनकठिभयोभनिः॥नेसपिलेआइजभनिरआप्री
 व्याहितोस्वामिसुन्याकाठाउसांगई।वडोसवगरेररुणलागि॥त्योरोयाकोसवसुनितेस्वामाशतिसव
 माया॥जसैदेप्यातसैभन्यानाककायाकिदेप्यातसैभन्नलाया॥हेपापिष्टलाजनभयाकाअक
 र्मगर्भाः॥विनाअपराधैमाःहामिछोरिकोनाककाठिसभंदाः॥जुंवांज्रीमंछःहेससुरालिहोःहेरकाला
 सप्यकोः॥हानमाषडलियाकोवैरिकोः।वंचलवित्रगर्भाक्षिणारकोस्वाहिकावरित्रकोविस्वासनगनु
 ॥कविहरुक्याकाहावर्नाउनागदैन्न॥योमिसिद्धजोछुनतिक्यायेकदेष्टेननः॥मदपिन्नाकायेकसे
 लैनन॥स्त्रिहरुक्यायेकगदैन्ननः॥शुनमभंछुःघोडाकोपेटकरायाकोयोः॥मेघगज्ज्याकोःत्रिकाव

रामः
 १७

रित्रकोः॥नाविकोःज्याहुन्याजोछुयोः॥वर्सन्यानवर्सन्यात्योतादेवतापनिजान्दैन्नमनुष्यनाक्याजान्ता॥
 ॥त्योवरित्रहोमैलेहोईनभंदाभंदेसमात्यारराजाथैसाँप्या॥राजाकामंत्रीहहलेविचारगन्यामानै
 मानिसहोभनिठहरया॥॥उप्रांत॥॥जोयोरलेमुद्धिदेधिकोवृत्तान्तदेप्योथ्योनश्रेसवेवृत्तान्त
 कणोरःविचारिहरुलेभुन्यारःयथार्थमान्यारः॥जुवांज्रीकनपनिछोयाः॥योरकनपनिछोया॥॥
 एसोभन्याकोछुः॥॥साधुकनपालनुःदूष्टकनमानुयोराजाकोधर्महोःयेत्तोरीनीगन्याराजाकनप
 रत्रयनिःवरत्रयनिसुषहुंछुः॥भन्यारनेसनाककाद्याकिकनगधामावडायासहरदेपिनिकास्या
 धयायाः॥एतिकथाकहिकनविदग्धदूडामणिभन्याकोशुगामंछुहेमहाराजणारिभन्याकायत्ताहु
 नःभनिविंतिगयो॥॥उप्रांत॥॥जसैयेतिविवादगन्यातसैःसारिकारःशुगादुवेपंसीरुपुछोया
 रदिव्यविद्याधरभयेरमाकासगया॥एतिकथाहाकहिकनवेतालमंछुःहेमहाराजविक्रमशेनलागर
 न्याःस्वाहिमाककोपापुटलोः॥स्वाहियाधिकिलोग्यायापिकहुः॥नवोल्यासिरकाठिमशेलानवोली

न्यानया न्याकाति फुटि मरौ ला नंदाः ॥ राजा विक्रमशेन आ ग्या गर्ह नः ॥ त्विभन्या कानिं द्वाग न्या दुर्ग ॥ पुरु
 ष भन्या कानिंद क होई ननः ॥ धर्म अ धर्म विचार ले दुं छ ॥ इहा अधिक पाप सिधैं छ ॥ पुरुष को पाप का
 धा का टिं छः ॥ मंदा ज सै सुन्यो न सै वेना ल फेरि ह वै मागयोः ॥ राजा विक्रमशेन फेरि शि शो कारुष फिर्दा
 नया ॥ ॥ इति शिवदास विरविनाया वेना ल पं व वि सतिका पां व नू र्भ कथा हा सजा प्रं भु भम ॥ ८ ॥
 लं नो दरं महा कायं लं नो घं गज कर्न कं ॥ पाप पुं पावती पुत्रं न मा सी ग न नायकं ॥ ॥ राजा विक्रमशे
 न सिशो कारुष मा जाई मृत्पु क कां थ मा वडा ई वाट मा हिं उ दाः वेना ल भं छ हे महाराज भु न म अ को क
 था हा कहं छुः ॥ शुनु ह व सः ॥ हे महाराजः ॥ एक उ ज्जारि नी भ न्या कि ए गरि धियोः ॥ तों हा म द न शे न भ
 न्या का राजा थिया ॥ तस्को मंत्री संधि विग्रही हरि दास भन्या को थियो ॥ ॥ ते स्की क न्या महा देवी भन्या
 की थिः ॥ त्यों मति भुंदर थि विवाह गर्नी भैः ॥ बाबु पनिके ठे हे र्ण ला ग्यो ॥ तस्ता विषय मा कं न्या भं छेः ॥ हे
 बाबा जत्का स वै गुण हं त क न थो भनि ॥ ॥ त तै समये म एक को हि प्र ह्म व स्ता मा ॥ ॥ द सी ए का रा

राम
 १२

जा थिं घागर्न भनि हरि दास गयोः ॥ तों हों जाई द सी ए का राजा संग भेट भयोः ॥ न वराजा भं छ नू हे हरि दास
 ॥ ॥ कलिको व व स्ता क स्तो दुं न्या छ कह भन्या रः ॥ हरि दास विंति गर्ह नः ॥ हे महाराज कलि आयो अ न्या व
 दुत दु न्या छः ॥ रिस राग व दुत दु न्या छः ॥ वडा पुरुष को अ मान दु न्या छ ॥ अ विनय न भित दु न्या छैन ॥ अ
 धर्म ग न्या वि दुत दु नानः ॥ भला संग ठु द्या ज्री गर्नान् ॥ ह जूर मा मि ठो व व न गर्नान् कं ठा परि जाई दू ध्या
 त्रिं गर्नान्ः ॥ ए स्ता मनुष्य दु नानः ॥ कलियुग को ये स्तो व रि व हो लाः ॥ धर्म प्र वर्जित ई ति ॥ ॥ हे महाराज ध
 र्म जो छु लो वि देश भाग लाः ॥ तां हि य छि न्या प नि जाला ॥ स त्थे प नि ठा भाग ला ॥ भू मि प नि फ लि त ह व न न
 ॥ राजा प नि अ न्या गर्नान्ः ॥ बां गा दुं नानः ॥ ब्राह्मण प नि वं व ल दु नान ॥ सं सा र स्त्रिका व स प ला ॥ त्वा स्त्रि प
 नि अ ति वं व ल दु नानः ॥ सा स्त्र को प्र मान गरे नान ॥ शा धू जो छ नू त न क न पि डा हो लाः ॥ जो दूर्ज नू छ नू त न को
 व ल ति हो ला त व क लि प्र ये श भ यो भ नि जा नु हो ला ॥ दान ग न्या को प नि नि र्क लि त हो लाः ॥ दान ग न्या को क्या हा
 नि र्क हो ला भ न्या धूर्त क नः ॥ ना ठ क न माल क नः ॥ कु वै थ क नः ॥ कु वै थ भ न्या का धा मि जो कि दुं नः ॥ ठा टः श ठ

लः योरः बुद्धिघोरः यत्ना कनदिया को निफलदुःखः ॥ अनिराजायें हरिदास ले मन्यो ॥ उपांत ॥ तां
 हिय कवाहण ले हरिदास थें कोरि मायो तमी कोरि मलाई देउ मन्यारः ॥ हरिदास मंडः तमो का गुण
 मंडाः ॥ यो वाहण मंडः ॥ मेरा गुण का प्रलेखु जाहा मन लेता कोताहि पुगु मंडाः ॥ हरिदास ले मोलि
 व्याहान रथ मावद्धि आया मथें मंडाः ॥ उर ले हवस मन्यो ॥ उपांत ॥ प्रात उठि रथ मावद्धि हरिदास थें
 प्रायोः ॥ तसै रथ मावद्धि दुवै जना उज्जुनी मन्यो कानगर माया ॥ उपांत ॥ घर मापनि अर्को वाहण
 ले केटिका दाजु थें मागे ॥ मी वद्धि मलाई शोः मन्यो रः दाजु मंडः ॥ जस्का भला गुण नः तस्का नदि उला
 मंडाः ॥ यो मंडः मवडो ज्ञानि कुमन्यो रत लौ दिउला मन्योः ॥ केरि अर्का वाहण ले केटिकी आमा थें मायो ॥ त
 मी कोरि मलाई शो मन्योः ॥ आमा मंडे जस्यें सवै गुण नः तस्का नदि उला मनी ॥ यो मंडः मधनु विद्या जो दहु
 शब्द मेदिः शब्द सावाण हा न्या शत्रु माहु मंडाः तसो मया मै लेदि नो भनि आमा लेपनि दिईः ॥ एतितिन वर य
 स्ता प्रकार ले केटिको विवाह गर्न मनितो हा आया ॥ केटिकानि मित्रे विवाद गर्न लाया ॥ केटिलेपनि भुनि र

राम
 २०

वीयातमानि ॥ एकी कोरिका तिन वर क्यदुं कसो दुं कन निवीना मानि ॥ उपांत ॥ एति प्रकार दुंदाः रा
 तमा न्यो कं न्या अति सुंदरि थिई तस्का नः रासे सले विंध्या वलय वर्तमाने ग्यो ॥ ए सो मन्या को २ः ॥ अति
 मन्या को सर्वत्र वर्तनुः ॥ अति सुंदर दुना ले सिता हरण मजिनु ॥ अति गर्व गर्ना ले रां वण मन्यो ॥ अति दान गर्ना
 ले वली पाता लगयो ॥ तस्का रण लेः अति मन्या को वडाले नगर्नु ॥ उपांत ॥ विहान मन्यो तितिन वर तो हिं
 आया ॥ ती तिन वर मा को जो ज्ञानि थियो तस्यें हरिदास सुध्या उछः ॥ हे ज्ञानि कं न्या ता छैन मन्याः ॥ ज्ञानि ले
 सन हे योर तव न्यो ज्ञानि मंडः ॥ कं न्या ता रासे शले विंध्या वलय वर्तमाने ग्ये ॥ दोशो वर मंडः ॥ यो
 रास ससारिक न कं न्या मल्या उला मन्यो ॥ ते श्रो वर मंडः मेरा रथ मावहु जाउ मन्यो रहवस मनिरथ मावडो
 र विंध्या वलय मागयो रः रास स कनह कायोः ॥ हे विक्रम सुख रासे ॥ बुद्धि ले दिं कसकीः जुद्ध ले दिं कस ॥ जुद्ध
 ले मया पनि बुद्धि ले मया पनि मै ले छुडनु छै एका मंडः स मंडाः ॥ रास स रिशोई कन आयो रः दुई जना युद्ध गर्न
 लायाः ॥ रास स काज दास मातिक न धि स्याई मान्योः ॥ रासे स मा रः कं न्या ल्या यो तस्का निमित्येः तिः तिनै वर
 विवाद गर्न लायाः ॥ ज्ञानि मेरा गुण ले प्रा गास गरिद पाई दिज्यो र ल्याई स मेरि हो मंडः ॥ जो रथि बाल न्यो मेरा

रथमावद्धिगईसवद्धिआइसमेरिहोभंछ॥जोदेगरिगससमारिमैलेल्याजोमेरिभयाकीछभनिएस्ताप्रका
 रलेऊगगगनैलाग्या॥॥वावुमनमाविताउनलाग्योः॥सवैलेउपकारगरिल्यायाकस्कनदिउकस्कनम
 दिउभन्योः॥एतिकथाहाकहिवेतालभंछः॥हेमहा राजाविक्रमशेनएतितिनमाककिहोन्योकन्याकहुः॥
 हेमहा राजनवोल्यासिरफाटिमरोलान्यानपा-रिवोल्याकोषकुटिमरोलाभनिवेताललेभंदाः॥राजा
 विक्रमशेनआग्यागछः॥जश्लेशसेसमारिकनकन्याल्यायोतकेहोभंदाः॥फेरिवेतालभंछः॥एतितिन
 सवैवरोवरगुणगन्याहुनः॥उपकारनुगुनितिनैलेगरिल्यायारःमान्यामात्रेप्रेष्टकाहाभंदाः॥राजाभं
 छनः॥ज्ञानिररथीताउपकारिमात्रेहुनः॥जश्लेषराक्रमगरिकन्याल्यायोतसैकिहोन्याभार्या॥॥एसोभ
 न्याकोछः॥॥उद्यमभयाकोःसाहसभयाकोः॥धैर्यभयाकोःबलभयाकोःबुद्धिभयाकोःपराक्रमभयाको
 एतिहथोकजस्थेछःतसदेवितादेवनायनिशंकामांछन॥एतिभुनिवेतालफेरिरुषेमागयोः॥राजावि
 क्रमशेनपनिफेरिसिशौकारुषफिर्दाभया॥॥॥इतिशिवदासविरवितायांवेतालपंचविंसतिकायांपं
 चमंकथाहासमाप्तंभुभम॥५॥॥॥लघोदरंमहाभीमंलघोदंगजकर्णकं॥पापघ्नंघावर्तनीपुत्रंनमामि

रामः

२१

गणनायक॥॥फेरिशिशौकारुषमाजार्इःमृतककोंधमावडाईराजावाटमाजोंदाभयाः॥तस्ताविषयेमावे
 तालभंछः॥हेमहा राजभुंनमकथाहाकहंहुः॥एकधर्मपुरभन्याकीनगरिथियोः॥तोंहोंधर्मसिलाभ
 न्याकोराजाथियो॥तंनराजालेएकवणिकोदेबलवनाया॥अघितिरवारकुनावनाया॥तोंहिराजा
 सदासर्वदावणिकाकोपूजागरैरःभोजनगर्थाः॥तस्तसमयमाएकदिनकाजिवितिगछः॥हेमहा राज
 मेशोवितिभुनुहवस॥॥एसोभन्याकोछ॥॥अधुत्रकोषरभुन्येहुंछ॥संपतिवहुतभयापनिजस्कादा
 भुभाईवंधूछैनन॥तस्कावारैदिशाभुंन्यहुनः॥मूर्धकोहृदयजोहृत्योपनिभुंन्यहुः॥जोदरिडहुतस्का
 सवैभुंन्यहुः॥एतिभुनिराजालेदेवीकोवणिकाकोत्कतिगनैलाग्या॥॥नमस्तेदेवीदेवेशीब्रह्मविषाड
 वीतितः॥शिवदेहोद्वेत्सोम्यमहालक्ष्मीःनमोस्तुते॥१॥अत्याणज्ञानैरुपावधोरनयंकरीः॥वर्म
 मुंडभरेदेवीःवतूर्वकुंनमोस्तुते॥२॥तालजंघेमहाकायेःणीमंशेशेमहर्षिणी॥उईकेशोत्कटसामेःता
 रलक्ष्मीनमोस्तुते॥३॥एतितिनक्ततिगरेरदेवीकोआशवनागन्या॥॥देवीसंतुष्टभयेरःआज्ञागछीनः॥
 हेराजेन्द्रतेशक्तिलेससंतुष्टभ्यो॥तेशमनज्याईस्थाछमाड्भनिदेवीलेभंदाः॥राजावितिगछनः॥हे

परमेस्वरीमयसंतुष्टमयोपुत्रकेवरयोः॥सपुत्रपुंदरज्ञानिविविंतीराजालेगदी॥देवीआर्यागर्हिर्नहेरा
 जातंकनपुत्रहोलाः॥वलवंत-बुद्धिवंत-पराक्रमीहोलाः॥मकनवंदनकुलअसेना-पातिधूपदिपगरे
 रवज्ञाउन्यागन्यासभनिदेवीलेभंदी॥राजालेतसैगन्या-राजाकनपुत्रजन्याः॥एतैप्रकारलेपूजाराजा
 गथाः॥॥उप्रांत॥॥तेसैदेवीकाथानमातोंहिदस्याकाराजाकाधोविकिछोरियनिपूजागर्धिः॥एक
 दिनतापूजागरेरभित्रयस्ताअन्यत्रगोंउकाधोविकाछोरालेःततधोविकीछोरिलार्देख्योः॥अतिश
 प्रीपुंदरिदेव्योवंचलमनगरेरः॥देवीधैविंतिगर्नलाग्योः॥हेदेवीपरमेस्वरियेसकन्यासंगमेरोविवाह
 हवोसः॥मेरोविवाहनयाताःमेरासिरलेतमोपूजागरुलाभनिभाकागयोरआफ्रागोंउमागयो॥नसैदि
 नअधिकाविरहलेमूर्छाभयाकोथियो।तसधामिकोमिनसाथैथियोः॥न्योभंछहेमितवावाशजाकाधो
 विकीछोरिदेव्यारतसैकाविरहलेएताभैरव्याछन्नभनितेभेभंदाः॥एतिसुनेरवावुलेराजाकाधोवि
 कीछोरिमाग्योरपायोव्याहापनिगरिदियोः॥॥उप्रांत॥॥विहागन्यापछिकेरिउसैमिनसंगशशुराल
 गयोः॥जसैदेवीकोथांनदेव्योतसैविनायोकेहिदिनमामैलेभावागन्याथाननिसमग्योरःत्वाहिनथैभन्यो

रामः
 २२

हेप्रियेमदेवीकोदर्शनगरिआउंज्यातंमिनसंगवस्यासः॥भन्योरदेवीकाथानमागयोःवदुतवेरभयोः॥
 धोविगयोरभंछःहेपरमेस्वरीहिजोमैलेतेसधोविकीछोरिसंगविवाहमेरोभयाःमेरासिरकाटिव
 जाउंलाभन्याथांमेरोविवाहभयोआजमसिरकाटिवज्ञाउंछुभनिवज्ञायोमन्योः॥वदुतवेरवस्ताज
 बेआयेनमितकतागयामितक्याहाआयेनन्नभनिमितगयो॥जसैगयोतसैमितमन्याकोदध्योरवि
 ध्यातमान्यो॥वितायोमेरापीयाशमीत्रमन्याछन्नमैलेजिउनुकाछः॥मितसारेरमितिनित्यायोभं
 नान्भनिअपगालकाउरलेन्योपनितांहिसन्योःशिरवज्ञायोःतांहापछिवदुतवेरभयोत्योपनिआ
 येनकतागयोकाभयोक्यानआयेनन्ननिस्वाहिनपनिगैः॥जसैगतसैदुवैकासिरकाद्याकादेवीःत
 स्नेआश्चर्यमानि॥धरमाजानकाशोभासंगजा॥माउपेनेजांताखस्मकनमोरिआईसभंनान्।तसअर्थम
 पनिक्यानजिउंभनिवर्काकोपासोलाईरमर्नतयारभैजसैतसैदेवीआर्यागर्हिर्नः॥हेपुत्रीनेराबुद्धिदेवि
 मसंतुष्टभजोंवरमाउंभंदाः॥तवन्यास्वाहिनविंतिगर्छः॥हेपरमेश्वरितिसिसंतुष्टभयोताइदुईमित्रजिउ
 न्भनिवरमाइछुभंदाः॥देवीभंछीन्हेपुत्रीवांउंनबोलिशिरजोरिदेउनर्॥होंसिरवराहर्षलेशिर

जोरिसिरजोदना। स्वामीको शिरमीत्रका गिंडुमाः॥ मित्रको सिरस्वामिका गिंडुमा जोरिः निडु वैठयाः॥ संवाद
 गर्नलाग्याः॥ येनिकथाहा कहिकनवेतालः भंडुः॥ हेमहाराज विक्रमसेनः॥ न्योकस्त्रिस्त्रिहोः शिरकीहो
 कीगिंडुकीहंसेभनः॥ नवो सिरस्वामिका गिंडुमरोलोभेदाः॥ राजा विक्रमशेण आग्यागर्हंन॥ सर्वोषधिना
 मित्ती॥ सर्वेवषधीमादुलोअन्नहो॥ पिनावल्लुमादुलोअन्नहो॥ सर्वेसुखमाअन्नहो॥ सर्वेश
 रिरमाअन्नहोः सिरकिंडुसेभन्या॥ एतिभुनिवेताल फेरिहूषमागयोः॥ राजा विक्रमशेण शिशोका
 हवफीदाभया॥ इतिशिवदास विरवितायां वेताल पंचविंसेतिका यांअष्टमकथाहासमाअंभुभन॥ ६॥
 ॥ ॥ विवादेकलहेवैव प्रस्थाणेकषीकर्मणी॥ प्रवेशेवस्मरेशक्त भक्तिपूर्वदिनायेकं॥ फेरिविक्रम
 शेण राजा शिशोका हवजाईडोरिकाठि मृतक कोंधमावडाईवाट माहिउदाभयाः॥ तत्तैसमयमा फेरिवे
 ताल भंडुः हेमहाराज मन्त्रकेकिथाहा कहंडुः भुनः॥ हेमहाराज एकवम्यापूरीभन्याकीणगरिधिईः तां
 हावम्यकेशरभन्याका राजाधियाः॥ भुलोवनिभन्याकिशणिधित्रीन॥ तनकीरोतेलीविभूवनसुंदरीभ
 न्याकिधित्रीन॥ निविवाहागर्णभनिन॥ तनरोतेलिकामुषकोवर्णकमलवंदुमाकाज्योतिवरोवरभयोः

रामः
 २३

आंघामुखवरोवरः कोवर्णउनागर्नशकला॥ दुइनेत्रकारसकोवर्णवल आकाशकोअमृतहोभन्याजस्तो
 ॥ येस्तोअंगकोभुंदरवनायेरः शृष्टिगर्नतायमराजपनिसकैननः॥ येस्त्रिभुंदरीकन्याधिईन॥ एसो
 जन्याकोहूः॥ कोमलववनः धर्मेः वोल्यामाहोसिमुष॥ निदुरभावनानभयाकी। मांनकोववनविषेसुरा
 जिंसंगकार्यगन्याः लाजवदुतभयाकि॥ अनिनम्रीनभयाकीः वदुतरुपभयाकीः अंगवन्याकिः मधूरव
 वनभयाकीजोगुणपन्निसवैसभावैलेभयाकाः॥ गंभिरधर्मेलेपुक्तभयाकिनारिउन्नमहोभंतुः॥ हेम
 हाराज देसवाट राजराजकुमारजावन्धिया॥ तिल्लेसवैराजकुमारविभूवनभुंदरिमांगणभनिआया
 देषाया॥ तवराजाभंडुनः हेपुत्रीयेतीमाकोतेरामनकुनभंडुभनिभंडाः॥ पुत्रीभंडुहेवावायेतिमा
 मासेरामनकोदियरेनभन्या॥ राजाभंडुनः उमोभयाआफोसोमवगर्नजाभन्याः॥ तवरोतेलिभंडुनः स्व
 यिवरभनिगदिनभनिन॥ हयः वलः ज्ञानः एतिजिनगुणभयाकोजोहूः तेत्कनशोभनिविभूवणभुंदरिले
 भनिन॥ एतिसुनेरराजालेदेसदेसमाः मानिसदूतपठायादूतलेवारगोठावरभोजिल्यायारहजूरमा

गयाः निवारिवरपनिनोहि गया । नवराजातिवर धेंयेंकयेंक गरिगुण सुधावण ला गयाः ॥ हे वर हो नम्रा गुण
 क्या क्या छन कहु भन्या ॥ ॥ नवपकवर भंछन हे महाराज सुन मेश गुण मये का दिन सायां वपल सोव
 र्ण उवजा उहु ॥ एक पल वाह्यण कदिहु ॥ दो श्रो पल देवता कन वडा उहु ॥ ते श्रो पल आभरण गहु ॥ दो
 श्रो पल साहिकन दिहु ॥ पां वों पल पाण भुयारिः फुल मिठाई कोष वगहु ॥ वल कन मदे विदो श्रो अर्को
 छैनः रुपज सो छ देव ते छो भनिए काले भन्यो ॥ दो श्रो भंछ हे महाराज जो कोहि जल साः स्थल सा रह न्या
 जी उजनु छु नः ॥ मधुप छि मनुष्य छु नः ॥ तत्की वेलि मजो दहुः मदे विवली यो दे श मा छेणः रुप देव ते छो
 भन्यो ॥ ॥ ते श्रो वर भंछ हे महाराज मेश गुण सुणः ॥ महति यारण लिकन कने जौनः ॥ श्याम सा कशेले
 मसम्य शकु छैनः ॥ वल कन देवि अर्को दो श्रो छैनः ॥ रुप देव ते छो भन्यो ॥ ॥ दो श्रो भंछ हे महाराज म
 सवै सा सुजां दहुः शास्त्र कावल ले सवै का पेठ को अमि प्राय जां दहुः ॥ वल कन मदे वी अर्को दो श्रो कोहि
 छैनः रुप कन देव ते छो भन्यो ॥ निवारै वर ले आहु आहु गुण भन्याः ॥ एति भन्या को सुनि राजा भंछनः ॥

रामः
 २४

विता उछनः सवै गुण रुप ले युक्त नया कार सा छन भनिः ॥ छोरिका सुख हे यार भन्याः ॥ हे पुत्री एति वार
 सा क किशो रि दुं छे स भंदा लाज ले केहि विंति गर्भ सकिन न एति कथा कहि वेताल भंछ हे महाराज ए
 ति वार सा क कि हो क ले विवाह गन्यो होः कहुन बोल्या सिर फुटि मरौ लो ॥ न्यान पारि बोल्या कोष फाटि
 मरौ लो भंदा ॥ राजा विक्रम शेन नंछन ॥ हे वेताल सुन । संग्राम गन्या ले व्याहा गन्योः ॥ बुद्धि वंत ले वडा कु
 ल कि कन्या व्याहा गर्नुः ॥ नरा मी भयापनि लाठि भंछ भयापनि विवाह गर्नुः ॥ रा मी भनिः घटि निवा जा
 त कि व्याहा न गर्नुः ॥ व्याहा भन्या कुल ना सिंछ भंदा ॥ केरि वेताल भंछः सवै निवारै जना गुनः रुपः
 वलः धनः युक्त थिया ॥ व्याहा ते कि भंदाः राजा भंछनः ॥ जो पां वपल सोव र्ण उवजा उन्याः भुनारः भू
 उहोः सवै को वेलि जान्याः वेपारि वे स हो ॥ सवै सा सुजां न्या वाह्यण होः संग्राम गन्या ले विहोः ॥ तत्का
 रण से विले व्याहा गन्योः ॥ एति भुनि वेताल फेरी रुप मागयो ॥ राजा विक्रम शेण पनि शिशो को रुप कि
 र्दा भया ॥ ॥ ॥ इति शिवदाश विरविनायां वेताल पंचविं सतिकायां सप्तमं कथाहा समाप्तं भुभम् ॥

॥७॥ ॥ एमामिभारतिदेवीः श्वेताम्बर एतूषितां ॥ शततं वास्यमाणाय यत्पुसादाद्विधायेने ॥ ररा
 राजा विक्रमशेणसिसौकारुषपुगिवेतालकांधमावद्वाइवाटमाहिउदाभयाः ॥ तववेनालफे
 रिभंछहेमहाशजमभ्रकोकथाहाकहंछुः शुंनुहवस ॥ हेमहाशजभुनः ॥ एकमालवतीभन्याकी
 एगरिछ ॥ तांहायुएनिधीभन्याकाशजाथियाः ॥ नन्काद्वारमादुरदेशवाटः राजकुमारशेवाग
 नैभनिश्रायोः ॥ सदाशजाकोदर्शनगरिभोजनगयगर्थोः ॥ जोवनषवल्यायोधोः वर्षदिन
 मासकपोः ॥ परियासिसवैभायाः एलैभयो ॥ ॥ तवएकदिनशजासिकारगयोत्पोराजकुमा
 रपनिः तांदिगयोः राजाकोदर्शनगयोः ॥ तवराजाभंछनः हेराजकुमारः कोहाश्रायाथोभनिश
 जालेभंदाः हेमहाशजः ॥ तमोशेवागुदातमाघोरापछिलागिआज्याथोमंदाः राजाभंछनक्यानव
 द्रुतदुर्वलछोः मनमहावद्रुतसूत्राभयाजस्ताछोभनिशजालेभंदाः ॥ सिपाईभंछहेमहाशजतमो
 शेवागदावद्रुतकालभयोः ॥ केहिपाईनः ॥ जिमीकनदोषछैनः मेरोकर्मभ्रमागहोः हेमहाशजः

रामः
 २५

द्रुद्रुविलदिउसदेष्टेनसूर्येकनकादोषछः ॥ वहविषषांनुनिकोः शेवागरिशेवाखामिलेधनि
 लेविमुषगन्याकोभलोछेण ॥ ॥ एसोभन्याकोछः वालषसिनकोसाथः विणकामैलेहास्या
 स्वाशंगनुः ॥ कलहगन्याः विनासार्थवोलुन्याः गधामवद्रिहिउनुः निर्वीवेकिसाहेवकोः दुष्टको
 : शेवानगनुः ॥ एतिछथोकमनुवेलेगन्याहलुकोछेदुः सांनुवोलाउंछः ॥ आयुकर्मः संयतिः वि
 थाः मरणः एतिपांवथोकः गर्भेदेविछेदुः ॥ हेमहाशजवराशजाकोशेवागन्यानिर्फलभयोः व
 द्रुतकालभयोः वद्रुतदुर्वलभयोमंदाः ॥ राजाभंछनः हेमहाशजकुमारः ॥ मलात्रनोकलाग्योभ
 न्याः त्योभंछहेमहाशजः यसवनमावानुः वस्तुकापाईयेलाभन्योः एताउताहेयोअमलाकाफलल्य
 योः ॥ राजाकण्ठाणदियोः राजातृपितभैभनेलाग्याः ॥ हेराजकुमारः वाढोदेवाइद्योः मदवारजाकुभंदा
 वाढोदेवाइदियोः राजादवारधुग्याः ॥ राजालेशेवककोजिउतवृत्तिगरिदियाः ॥ कयराविस्थाउनावरण
 : ॥ घानावर्षसंपूर्णगरिदिया ॥ ॥ उपांत ॥ ॥ अर्काकोहिदिनः समुद्रकातिरपठायारमये ॥ देवीको

मठदेव्योः देवीकोपूजागन्योः ॥ तोंहि ये कनार्कका देव्यो जोंदार पछिला ग्यो ॥ नार्ककाले पनि देविर भ
 निः हे पुरुष क्या कार्ज ले आयो मंदा ॥ यो मंछुः ने रा रूप कालो मले मनसित संभोग गर्न मनि आयो
 मंदाः ॥ नार्कका मंछुः संसंग रतिगर्ना कोइ साभया पसपोष रिमाः स्नान गर्न दाः पोष रिमा ज सैय
 स्योः न सै आ फ्राधर पुग्योः ॥ न्यो वृत्तान्न राजा थेंक स्योः ॥ न्यो भु नि राजा मंछुः म प नि तों हि जों कु भन्या
 रः राजा राज कुमारः ताहि गया ॥ ॥ उ प्रांत ॥ ॥ उरु जना आया का देविः देवी का थाने मा गै ए मत्का
 रण गरि र जों दाः राजा कने अति शुंदर देवीः वडा पृति वंत मेः मन ला गिः हे महा राज क्या आग्या दुंछुः सो
 म गरु ला मनिः ॥ तव राजा मंछुः मेरो आग्या मान्या मया मेरा शेवक कि नाय्या हो मंदाः ॥ नार्कका
 मंछुः हे महा राज मेरा ता ति मी संग य एति गर्न मन थियो ॥ कसो गरि सुर्का कि नाय्या दिं मंदाः ॥ राजा
 मंछुः न मो आग्या मानु ला मनि थि स न्यो व वन को पुमान छु म न्याः शेवक कन मा भंदाः ॥ ह व
 स मां कु भ नि र विवाह गरि दिया ॥ एति कहि वेताल मंछुः हे महा राज विक्रम शेन वो ल्या सिर फाटि म

शमः

२६

रौला ॥ न्यायण पा न्या कोष फुटि म रौलाः ॥ राजाः शेवक मा को सत्याधिक हो मंदा ॥ ॥ राजा विक्रम
 शेण मंछुः शेवक सत्याधिक हो मंदाः ॥ वेताल मंछु जश्वेदे जों गना पार्श्वः शेवक कन दियोः न्यो सत्या
 वादिका हा मये न मंदाः ॥ राजा मंछु जों उ प गार गछुः ॥ सो भ लो छुः साधु को उ प गार साधु गछु नः न्यो
 क्या गुण छुः जो विगारः गन्या कनः उ प गार गछुः न्यो महा साधु हो मनिः साधु हरु मंछु नः ॥ एति कथा
 हा सु नि वेताल फेरि रुष मा गयो ॥ राजा विक्रम शेन शिशो कारुष मुनि फिर्दा भया ॥ ॥ इति शीवदा
 स विर विने वेताल पंच विंशतिकायां अष्टम कथा हा समाप्त भु भम् ॥ ८ ॥ ॥ प्रणम्य परमात्मन्याः हंस
 यानां सरस्वती ॥ यस्यां प्रशाशमासयः विदधामी कथा मिमांसाः ॥ २० ॥ विक्रम शेन राजा शिशो कारुष
 मा जार्ज वेताल को डोरिका टिकां धमावेताल वडा उ वाट मा हिं उ दा ॥ फेरि वेताल मंछु हे महा राज म
 को कथा कहें छु भु नः ॥ हे महा राजः एक मदन पुर म न्या को न ग र थियो ॥ तों हा मदन विर म न्या का रा
 जा थिया ॥ हिरण्य दत्त म न्या को व नि तों थियोः ॥ त स्की छोरि मदन शेना म न्या कि थि ॥ ॥ उ प्रांत ॥

वसंतरितुकासमयेमाखेलामनिःउद्याणवनमाखेलामेकः॥धर्मदत्तवनिजोंपनितां हिगयेकःते
 कंन्याकोरुपदेधेरःअतिवंचलमनमयो॥यो कंन्यामेरिभाष्यामयासेरोजन्मभुफलदुंदोहोम
 निराह विरहलेकायो॥जवविहानमयोखेलनां हिंगयोः॥मदनशेनापनिफुलटिप्रःयत्नेनोहिआ
 योंकःभूकुटिहंःतिधनुषजस्ताःन्योधनुर्वाणलेकाविश्वगर्हः॥यो कामकोवाणमपूर्वकः॥शरि
 रमायाउणलागिःमित्रपसेरवेथागर्हःयो कामदेउवडोसुर्षरहेकःभंदाःमदनशेनामंकेःहेपुरु
 षयेसोनगरःकंन्यादोषहोलाःकुलदोषलज्जाहोलाभंदाः॥सोमदत्तमंकेः॥हेधुंदरिकमलपत्रःन
 वनयाकाः॥अप्यशयियासवैकाडिःश्रुत्याकनशंभोगःइन्दुलेगन्याःनयसिःअपीकीःबालाणिः
 काणविगत्याहो॥योहृदयभुक्तातृणजैहोः॥तस्मात्कामदेउलेशरिरदग्धगदाः॥योगनृःयोनग
 नृःकोमंके॥शरिरशितलदुन्याकार्यगर्हःभंदा॥मदनशेनामंकेहेपुरुषउसोनयाःपांचदिनमामेशोवि
 वाहकुंके॥विवाहनयापद्धिनिमीसंगसंभोगगरि॥तवव्याहितास्वामिसंगःसंभोगगरुलामनिःभाकाग

रामः
 २७

रिरगैःसोमदत्तपनिधरगयो॥॥उप्रांतापांचदिनमाविवाहनयो॥विहाईतालेशंभोगःगरुन
 निभ्रंगालोहास्योजसैःतसैतश्चेकैकीःहेस्वामिमकन्याकुंदाःएकापुरुषसंगभाकागन्याकोकुन
 निः॥अधिकोवृत्तान्तकहिशंभयाःज्ञानवभनित्वा मिलेविदादियो॥सोदुसिंगारगरिरःभा
 काशयाकाठाउंमार्गेः॥आधाशतमाहिडिः॥आधावाठमापुगिथिबोरलेदेष्टोः॥विनायोःए
 कागहणकपराःलिप्राताप्रसस्तहोलाभनिःपुसिभैयोरलेमंकेहेधुंदरीःएस्तावशमध्याणराह
 माकताजासेउभंदाः॥स्त्रिभंसेजोंहामेशप्राणदिपिदुलोकतां हिमजोंकुभंदाः॥बोरभंकेएकैए
 स्ताशतमाउर्लागैनक्याभंदाःन्योभंके॥हेरधनुषपुंन्याईपरःकामदेउअविवाटकृतःक्याडकुंभ
 निः॥अधिकोवृत्ततबोरथेंगरिरः॥बोरलेएकोभृंजरक्याणभंगगरुभनिहोडिदियोरगैः॥जों
 हासुन्याकोथियोनाहिंगैःसोमदत्तमंकेः॥नंकोहोसःयसकंन्याःगंधर्वकंन्याःदेवकंन्याःदैत्यकं
 न्याःएगकंन्याःमनुष्यकंन्याहोकिभंदाः॥ममदनशेनाहुंःहिरण्यदत्तवनिजोंकिहोरिजत्कण

कुलवारिमासमात्याथेउः सोमहिंदुः आजमेरोविवाहभयो॥ तं ग्राहज्जुर आयाः ज्ञातं चोरुविद्धः सोगरभं
 दा॥ त्योभंछः हेभुंदरिः योवृत्तान्तने राव्याहिनास्वामिथैकहिस्कीकहिनसमंदाः॥ त्योभंसेसवैमैले
 कणाकोछभनिः तवसोमदत्तभंछः॥ ॥ सिलो॥ वस्त्रहिणंमूलंकारंः घृतहिनेषुभोज्जनं॥ घृतीहिने
 वसंभोगंः विजनंलवणंविनाः॥ २१॥ परस्त्रिसंगकोघृतिः धनकोनासहो॥ जिउकोघनिनासहोः॥ तस्का
 रणवडालेपरस्त्रिसंभोगनगर्तुः॥ स्त्रिमन्याकाकत्ताहुंभन्याः मित्रविषः वाहीरभुंदरीः यस्त्रोभोग
 न्याविषलेनासहुंछः॥ स्त्रिमन्याकाः एकासंगघृतिगर्हः मणलेअकोविताउछनः॥ तस्कारणः स्त्रिको
 पियारो कुपियारोकोहिछैणः॥ ज्याकु रोपेटमाछः त्योजिभामाछैणः॥ जिभामाकोवैजाउदैणः जो
 वैजाउछः त्योसांकोछैणः॥ तस्कारणअनेकवरिस्त्रिकहुंछं योमकतिकहुं॥ हेर्मपरस्त्रिसंभोगग
 र्दिनः तेराव्याहिनाथैजाभन्योरगे॥ ॥ जसेवाठमापुगिभीवोरपनिरे ज्येज्जोहिंआवलिरगहनाकप
 राघोसिलेज्यांलाभनिवसिरस्योथोः आइपुगिरवोरलेपुगिआइसंभेनिचोरलेसोध्यो॥ जोभयाको

रामः
 २८

वृत्तान्तवोरथैकहिः॥ चोरलेपनियस्कोभृंगारक्याणमंगगरिदिउंननिजातवजन्मोरछोडिदियोआ
 फ्रास्वामिथैआइपुगी॥ स्वामीलेकशोकसोभयोभनिसोध्योः त्योवृत्तान्तकहिः॥ स्वामिलेवडापु
 तिसंगसंभोगगन्यो॥ ॥ सिलोक॥ कोकिलासोररुपेणः एगरिरुपेणपतिवृता॥ ययेसाधेनुरुपेणः
 विशारुपेणव्राह्मणः॥ २२॥ तयसिकोरुयसेमाहो॥ एतिकथाहाकहिवेतालभंछः॥ हेमहा राजविक्र
 मशेणः नवोल्यासिरकुठिमरोलाः न्यानयाकोषोफाठिमरोलाभन्योः एतिः तिनमध्येकोटुलोभं
 दाः॥ राजाविक्रमशेनभंछनः वोरदुलोहोभंदाः वेतालभंछक्याहावोरदुलोभंदाः॥ राजाभंछनः
 व्याहिनालेअकासंगघृतिरहेछभनिछोड्योः॥ विगणालेघृतिव्याहागरेरैणभन्या॥ अकालेविवाहाग
 न्याकीस्त्रिसंगविराट्सभनिः॥ राजालेउंडुगर्लाः धनजीयनासहोलाभनिउरलेछोड्योः॥ वोरकाताका
 रणकेहिथियेणः॥ धर्मवोरकाहानगयोतस्कारणः वोरदुलोहोः॥ एतिकथाहाकहिभुनिवेताल
 फेरिरुपेमागयो॥ राजाविक्रमशेणशिशोकारुषफिर्दाभया॥ ॥ इतिशिवदासविरतेवेतालप

चविशतिकायां नवमकथाहासमाप्तं भुनक्तु ॥ २ ॥ विश्वविप्रवरो हार्थः शूलधारणमस्थितं ॥ वज्ररा
 सधरं देवः धरणीरुपमिस्वरं ॥ २३ ॥ तिस्रो कारुण्यजाई डोरिकाटि मृतककोधमा वज्राई वाटमा
 हिंडुदाः ॥ फेरिवेताल नच्छः हेमहाराजमश्रुको कथाहाक हं कुशुनः ॥ हेमहाराजः गेउ देशमाः गुण
 शेवर नन्या काराजा थियाः अमये वंद नन्या को मंत्री थियो ॥ ते स मंत्री ले धर्म भुनाउन लायो हे
 महाराजा सिव पूजाः कल्यादाणः सोवर्णदानः ॥ पित्र पिण्डदान गर्नुः ॥ जुवान वेत्तु गंगा मा अस्ति
 हापालनन गर्नुः ॥ अरु तो को हि दान गर्नुः ॥ धर्म देशमा वहु वनुः हेमहाराज सुणः ॥ धर्म शास्त्र
 भुंन्याय छिः ॥ धारण गर्न सका भुनुः ॥ आकुले धर्म गर्नुः ॥ आकुले न सका को देशमा लावनु
 सकिंदैनः ॥ यो सरिर कल्यांतर रहन्या छैन ॥ ॥ सिलोक ॥ एवति वंशरि रं वः संयतं एवति छति ॥ किंदू
 रं वस्थितो कालंतदर्थं धर्म संग्रहं ॥ २४ ॥ कुपति परनिंदायः अहंकारं तमस्तथा ॥ लो नन्या गं भृणु राजा
 किंदूरं परमेवरं ॥ २५ ॥ जस्को दुदषानि छुवर विदुज्या क सो गरि राज्यमा रहं छन ॥ जस्का देहि दे वि

रामः

२२

गोरु उत्पति दुं छनः माउ नाहुः माना होइन न ॥ एसो नन्या को छः ॥ भुंग दुं न्या दुदषाण भैं सिहुं ॥
 तर तिमानि दैननः असुर जात दुनाले ॥ गार्ड भैं सिवरो वर छैननः ॥ गार्ड का दुदष्ट नले अपि
 वेदः देवता को पूजा दुं छः भनि देवता आश्रमान्छन ॥ यो ते एगर्ना गार्ड दुं ॥ गार्ड विक्रय जोग
 छं न्या मुष पापि हो ॥ हेमहाराजः एतिसवै मानिर्भये दान श्रेष्ठ हो ॥ प्राणिक नन्याः कल्याण भूमे
 रहं छः ॥ तस्कन निर्भय दिनुः ॥ न्यो वरो धर्म छः ॥ जो मनुष्यो नृणां पापि सरणमा आउं छः तस्कण जो माछः
 न्यो महापापि छुहो ॥ जो अर्का कामा भुले आक्राजि उयो सखः न्यो पनिया पिहो ॥ जिउः मा सुसवै को व
 रो वर हो ॥ अर्का को मा सुषां न्या आक्रै मा सुषां छ ॥ न्यो एर्क जां छः जो प्राणिक एमारि पां छः परंतु त
 स्को एत्ता दुः ख देधिं छः ॥ विकलः सेजिः वैदोः गुंडोः वोरं डोः जन्म जन्मांतर रहं छः ॥ कपिल धेनुः भुंगा
 र धेनुः तिल धेनुः सुवर्ण धेनुः ॥ एति गार्ड दान गर्नुः पाप मुक्त दुं छः ॥ मदषा न्या जस्तो पापि को हि दे
 ॥ वराहा नन्याः पहिले लाजह राउं छः धण कोण शः कुल को विधं श दुं छः ॥ निवासंग को एति सिलको

नाशदुःख ॥ असुविदुःख यो कति कहुं ॥ हंज्जार दोष मद का कहुं ॥ तत्कारण मदन धानुः ॥ मातृषां न्या
 पतिः संस्करण गन्या ॥ ल्याउं न्या ॥ माभनि अज्ञाउं न्या ॥ २ यान्या ३ फलाना ठाउं सा कहुं भनिउ पदे सदि
 न्या ४ हानुं न्या ५ हं न्या ६ एति कहुं जणा कण वरो वर पात कहुं ॥ वहुत कया कहुं ॥ हेम हारा जमंदा ॥ ए
 से विधिले राजाः मंत्रीकाः धर्म वाक्यः पद्धि लोग लाग्यो ॥ ॥ उ प्रांतः ॥ ॥ तत्सै रहदाः राजा धर्म का व
 ल ले गुण शेष र स्वर्ग गयाः ॥ तत्स देश मायोर ले उ पदो गन लाग्यो ॥ ॥ गुण शेष र राजा को पुत्र धर्म
 दो जम न्या को धियो ॥ तत्स ले भन य वं दु भन्या का मं तु कनः सवै परियार समेतः दे सनिका लाग्यो
 धयायो ॥ ॥ उ प्रांतः वसंत रितु का समये माः राजा ले रं नि समेतः आश मा क्रि उ गन भनि उ या नै वण
 मा गयो ॥ तां हि ये कपो वरि देव्योः पो वरि वाट एक मल को फुल राजा ले के टिका हात मा दिदा कमल को
 फुल वस्यो ॥ ॥ राणिका पाउ मा ययोः दुवै पाउ मा ग्याः ॥ तो श्री रं लिका सरि रमाः वंदु मा का किणि रि
 लाग्यो ॥ रफो का उ व्या ॥ ते श्री रं नि ले टा ठा मुशल वला या को भु निरः ॥ हांत मा वे था भयो ॥ एति कथा

रामः
 ३०

हाक हि वेना ल भंडुः एवो ल्या कोष फाटि मरौ ला ॥ न्यान पारि बो ल्या सिर फाटि मरौ ला ॥ हेम हारा जई ति
 न राणि मा को सु क वारि हो कहुं मंदा ॥ राजा विक्रम शोण भन कहुं नः ॥ जत्का हात मा ठा ठा को सोर सु निहा
 त दुःख्योः वे था भयो ॥ ॥ तो भु क वारि हो भं न्याः वेना ल वज्यो एति कथा हाक हि भु नि वेना ल फेरि रु ये मा
 गयो ॥ राजा विक्रम शोण सिशो कारुष फि दा भया ॥ ॥ इति शी वदा स विर विने वेना ल पं व विस तिका यो
 दस म कथा हा समा पुं भु भन ॥ १० ॥ ॥ पुण म्य सिर सा देवं ॥ पिता म्वर महेश्वरं ॥ को नु हल प्रव क्षा तिः प
 न्ना के ना पि ना धितं ॥ २६ ॥ राजा विक्रम शोण सिशो कारुष जाई डोरिका टि मृत क को ध मा व जाई वाट
 मा हिं उदा ॥ फेरि वेना ल भंडुः हेम हारा जम अको कथा हाक हं कु सुनः ॥ हेम हारा ज ए क गुण कर न न्या
 को न ग रि धियो ॥ तां हा ज म व ल व न न्या का राजा धियो ॥ प्रजा केश र भन्या को मंत्री धियो ॥ तत्की ना
 र्या ल्सी धिः ॥ तव राजा मण मा विना उ ला ग्यार जां जी याई कण कया कया फल हो ॥ यो सुं न्द रि स्त्रि
 संग रात दिन संभोग गर्नु ॥ ते हि सु ष हो भणिः राज्य को भा रा का जी कण दी योः शौं प्यो ॥ आ फु सं भोग

गर्नलाग्योः राज्यकावर्वाभाः काजीलाग्योः। लक्ष्मीभंसेः हेस्वामिद्वन्द्वनदुर्वलछौक्याहभंदाः॥ काजीभं
 छः हे प्रियः मलाई राज्यको नाशदिकनः राजासंभोगगर्नलाग्यास्वामिसंगः॥ राजाकाविताईलेसू
 त्तलेभंदाभाज्याभंसेः हेस्वामिः राजाथैः एसोविंतिगरः मतिथंथात्रागर्णजोंहुभणः॥ नलिरः राजा
 थेतसैविंतिगयोः विदाभयोः॥ तीर्थकणगयोदसीणदिशासमुंद्रकातिरगयो॥ रामेस्वरकोदर्शण
 गरेरजादाः॥ समुंद्रकासाऊमाः एककल्पवृक्षेसुवणकोदेष्टोः॥ कस्तोभन्यागताहोंगाः मोतिकाफुर
 लनुगाकाफलपल्लनभयाकोः॥ तोंहिं एकनार्इकाभुंदरिः वेसविश्रावनामावहिः हातमाः विनाः
 लियेरः तिणसिलोकपाठगर्दिदेष्टो। सीलो। ॥ यणपाछापितंविजंः कर्मभूमौभुभाभुभम्॥ प्राप्य
 नेईवतत्रैवजीयताविधीनासदा॥ २१॥ देवागर्तजगत्सर्वंसदेवासुरमानुषा। तस्मात्सर्वप्रयत्नेणस
 एवदिंतयद्भुसं॥ २८॥ पूर्वजन्मार्वितांजावंः कर्मभूमौभुभाभुभम्॥ तदेवसर्वजंतुनांः श्रुष्टिसंहार
 कारकम्॥ २९॥ एतिल्लुतिपाठगरिरजलैमावुडिः॥ एतिकौतुकमंत्रीलैदेष्टोः मनमावितायोः॥

राम
 ३१

मारठे एवाठ

एपत्यावनुकुरोप्रतसेदेष्टाः एदेष्टाकोपननंतुः योदेष्टाकोक्याणलुकाईदवाईरापुभनिः॥ घर
 आईः राजाथैवृत्तान्नकस्यो॥ ताहोंउप्रांतः॥ ॥ राजायक्तेरामेस्वरदेवताकोदर्शणगर्णगयाः दे
 वताकौनसस्कारणगरिवस्थाथाः॥ तसैकल्पवृक्षेतेहेनार्इकासमेतः॥ आउंदादेष्टाः जसैः तसै
 राजाकुदैरः तोंहिगथाः वृक्षेजलमावुष्टोः॥ नार्इकाभंसेः हेमहाराजः कृष्णवतूईसिकादीनः॥ म
 कणएकांतदियाआजमकनछोडभंदाः राजालेएकांतदिउलानन्याः विभागन्याः परस्परपृति
 वष्टोः॥ जवकृष्णवतूईसिआयोः॥ नार्इकाभंसेः आजकारातिः हेमहाराजः तिमिमथैआयाभनि
 :॥ राजाहातमाषत्रलियेरः अदेष्टाउमावस्थाः॥ जसैः तसैरासेसआयो नार्इकाकननिल्योः॥ राजाले
 नार्इकाकननिल्याकोदेष्टातवरजाधार्इकनगयारभन्याः हेपापिष्टरासेसः स्त्रिवधगन्याः॥ कोंहजों
 कृष्णसंगयुद्धं गर्नवजालासभंदाः॥ रासेसउरायोआजभयभयोभनिसंकामान्योः राजायनिउरायाः॥
 मलाईपनिनिल्लुकिक्कागर्हभनिः कुरिलियेरजार्इयन्याः॥ रासेसमान्यारपेठविन्याः देवोंगणानि

कास्याजसैः न सैनार्द्रकाभंकेः ॥ भलो ॥ भलोः हे महाविरवडो उपकार गरेडः एसो भन्याकोकः ॥ ॥ सिलो
 क ॥ शैले शैले न मानिकं मौक्तिकेण गजे गजे ॥ शाधकाणहि सर्वत्रः श्रुंदने नवने वने ॥ ३० ॥ एकाददु
 छ भनिः ॥ तव राजा भंछनः हे भुंददिः क्या कारण लेः नं कण श सेश ले निल्यो भंदाः ॥ न्यो भंसेः हे म
 हा राजः मेरा वावा विद्या धरुंः मलार्द्र ए देव्यो भोजन गर्दै ए थाः ॥ एक दिन भोजन का वेला माः आ
 र्द्र पुगिणरः ॥ रिशा या भ्राय गन्याः ॥ तो कण क हन नूई सिका दिन मा ॥ रा सेश ले निलो सः भन्याः
 ॥ मर्द्र ले विंति गयो सरा प ग रे उ दियो क या ध निह वो स भंदा ॥ को हि विर आर्द्र श सेश मालाः तव मु
 क हो लि स भन्या को धियोः ॥ आज नं मा क पा ले था पे मु क भजों ॥ आज वावा को दर्शन गर्ण जां कु भंदाः ॥
 राजा भंछनः हे भुंदरिः आज ति मी ले उ प ग र ग न्यो भंछे स्ताः ॥ घे लु मे रो रा ज्य हे रि क णः तव ते रा वा
 वा को दर्शन गर्ण जालि स भंदाः ह व स भनिः ॥ नार्द्र काले आ फु विद्या स्मरण गरि रः ॥ राजा नार्द्र का
 ते सै जल मा पुशारः आ प्रा रा धा णि माः आर्द्र पुग्याः ॥ त सै मंत्रो लेः ए गर माः हा द्दों गानः धजा य ना का

ज १

राम
३२

वाजी व र्द्र त्यादिः वेद पुराणः गीतः मंगलः उत्साहः हर्ष व ठा र्द्र गन्या ॥ स वै लोक ले मे टिलियेरः रा
 जा को दर्शन गर्ण आया ॥ ॥ उ प्रा न्नः ॥ के हि दिन माः नार्द्र का भंसेः ॥ हे महा राज विदा क पा ह वो स
 : मजो कु भंदाः ॥ राजा भंछन हे भुंदरी ते रि विद्या क ना गर्द्र भंदाः न्यो भंछेः दे वां ग ण भेः मनु व्ये संग
 आ स कृ पृ ति भयो ॥ राजा दे वि सं तुष्ट मे भनिः विद्या रि सि रः आर्द्र नः ॥ हे महा राज राजा ले ए स्तो मं
 त्री रा भुः ॥ श्रेष्ठा वा र व दू त भ या को स्थि र बुद्धि न्याः ॥ व डो वि वा र्य भ या को भु न्या जी ण भ या को
 ॥ रि स ण भ या कोः शं तो विः व डो उ दि म ग न्याः व डो दा ताः ध र्मा त्माः ॥ लक्ष्मी ले यु क्त भ या कोः ॥ स त्प वा
 दिः पं व र्द्र नि जी त्या कोः उ व जार्द्र क ण का र्य ग न्याः स्वा मि नि मी त्प नि स्प्र हिः ॥ ए त्ता गु ण यु क्त भ या को
 मंत्री रा भुः ॥ ए ति क हि बे ता ल भंछः हे महा राजः न्यो दे वां ग ण ल्या उ दा ह र्ष व ठा र्द्र ग न्या मंत्री क्ता ति फु
 टि म न्योः न्यो क्या कार ण लेः ज्ञा नि क न न क स्या क्ता ति फु टि म शे ला ॥ ए वो ल्या सि र फा टि म शे ला भंदाः
 ॥ राजा वि क्र म शे न नं छनः मंत्री ले ए सो नि ना योः ॥ दे वां ग ण सि त राजा ले आ स कृ वि त्र हो लाः ॥ रा ज्य

कोविताईसंभारगरैननः प्रजाअथलङ्गमानः राज्यसेयमैजाला ॥ ॥ सिलोकः ॥ विद्याहिणं मनु
 ध्यानाः मंत्रीहिणो महियति ॥ पुत्रहिणं हतं एण रिआधाहिणं हतं प्रजाः ॥ ३१ ॥ न्योमं त्रीवुद्धि कोधरहः
 देसविग्रो भनिसूत्राले मन्थो भेदाः ॥ एतिभुनिवेनाल फेरिरुवैमा गयो जुं डियो ॥ राजा विक्रमशेण
 सिशौ कारुषकीदा भया ॥ ॥ इतिवेनाल शीवदास विरचिते वेनाल पंचविं सतिकायां येकादसक
 याहा समाप्तं भुभमः ॥ ११ ॥ ॥ शब्दं वस्त्रा सुधा पूर्णः लोलक लोल मालिणी ॥ सरस्वती एमस्कृत्ये वि
 दधामि कथयामि सां ॥ ३२ ॥ राजा विक्रमशेण सिशौ कारुषजाई डोरिकाटि मृतक कोंधमावजाई वा
 रमाहिउदा ॥ फेरिवेनाल भंरु हेमहाराज मन्थको कथा हाकहं सुभुणः ॥ हेमहाराजः वृडापुर भन्या
 कोय कणगरई थियो ॥ नोंहा नोंहा वृडा मणि भन्या का राजा थिया ॥ तन्को प्रोहित देव शर्म भन्या को वा
 स्मण थियो ॥ तन्को पुत्र हरि सर्म भन्या को थियो अति भुंदर थियो ॥ केवल कामदेउ को मूर्ति हो भन्या
 जस्तो ॥ साखमा भन्या मानो वृहस्पति जस्तो ॥ धनाध्य भन्या कूवेर तुल्ये थियो ॥ तन्नेत्र श्वर भन्या वास्मण

राम
 ३३

कीछोरि व्याहा गयो ॥ तन्का परस्पर एति वदो ॥ ॥ उ प्रांतः ॥ ॥ एक कोई दिनः गृष्म अनुका समये मा
 ॥ ॥ घरका कोशिमा दुवै सुकसित सुन्या का थिया ॥ तत्तै समये माः आकास गाभिणी गंधर्व गण ले
 लाव न्यावति कनः निर्वान भया की देव्योरः ॥ कोमदेउ वखोरः उंटा योः विमाण मावजाई आकास
 मालै गयो ॥ ॥ उ प्रांत ॥ आकासामिले संभोग गरु भनि उयोः साहिता देव्येनः वरः परः घरः सर्वत्र हे
 न्योः कतै देवेणः कता गैः कक्षे लै ग्यो भनिः विना उना गण लाग्यो ॥ हे प्रतिवृत्तेः मदे विनिशुर छातिग
 रिः ॥ मकन कोटि कता गरई सः भनि सहर माहेईः प्रवाल मादेवल माः वज्रिदिशा विदिशा हेरि सु
 ध्याउण लाग्योः कतै देवेणः ॥ तत्का विरह ले आतुर भयो ॥ खटि आमा कूल्कीः वाठ मा कूल्कीः हे विन
 प्रकीति भया किः ॥ मुकी छ मनुताः अकी छे नः संसार मा अरु पछु न मनुतः मिथा वव न छ ॥ हे प्रिय म
 कन उत्रादेः मेरो देहिः कामदेउ ले पिशा को छु ॥ दिण रात गया को थाहा छेण ॥ हे कमल मुखिः क्या भयो क
 सोहुं भनिः फेरि फेरि मुर्छा भयोः विलाप वहुतै गरे र भंरु ॥ अवजीउनु क्या छ भणेरः ॥ निर्थ यात्रा गण

नलिहिग्रोः॥ ॥ उग्रानाकोहिदिने प्रमणागर्वाः पल्लोशकायातकाः दुनालायेरहातमालिकणः ब्राह्म
 णकायरगयो॥ ॐ नवतुमिसांदेही भनिमिषमाग्योः॥ गृहस्थानिभंछः गुरुनिंदाः व्रतभ्रष्टः सिव
 लिंगभ्रष्टः अहंकारिः मायाधारिः मंगमंगभयाकोः॥ मृगमृगवणगर्वाः ईणकणमिस्थानदिनुः॥ व
 सवारिः विद्यार्थिः गुरुशेवीतः विदेसिः विर्त्रिणभयाकोः॥ एतिमिशुकदुः॥ मदघांत्याः कांडकमाव
 न्याः भुनकमाउन्याः॥ अधर्मी स्तुडकनः गुवारकणः मिस्थानदिनुः संसारमादुई अक्षेरकोभ्या
 सछः॥ माउभंछः देउदिन्याभंछः॥ नास्तिभंदाः भिशुकभंछः कृपणिकोसम्यतिः एणसोशप्याज
 स्तोहोनिश्चयेः क्याहभन्यादिनशक्तैः नः पानपनिशक्तैः॥ नस्यदैवविपसेसधैः छोरियाल्याज
 स्तोहोछोरियाल्योयोस्योः अर्कोमोजगर्हः॥ तस्मैकृपनिकोधनः लायोवढायो अर्कोषांछः॥ तस्कार
 णवानुवोलोंगः दिनुपलोककणदुंछः भनिमिशुकलेभंदा॥ येतिवचनभुनिजां हिभीस्थामाग्यो
 भ्योः॥ तां हि ब्राह्मणिलेजां हि भोजनगरोला भनिरः॥ वाशः वदुकः मादकः मिठाई ईत्यादिषांडः सक

रामः
 ३४

रः घृतः दुदः सराजामगरिः मिठाई पक्कावनलाणिः॥ तां हि एककोहिभंछः वदुकभन्याकाकस्तोगरि
 पकावनुः हिं जिशः सरिवनुन समेतगरि अदुवा देणहलनुः मासकोआंठोकावनुः नवते
 लकाः कशहिमाः पकावनुः॥ भुंदरः कोमलकुंकुंमजस्तोसुवासः त्योभुंदरिखिलेवडापृतिसंग
 हांसिमुखदियाकोमुषमाहालेरः मुरुकमुरुकगरिवयावनुः तिधन्येभन्नादुंनभन्योपसाप्र
 कारकावदुकः प्रभृतिः मिठाईः सवैः छपरमाहालेरः तेसब्राह्मणिलेः वडाप्रीतिसंगः तेसब्राह्मण
 भिशुककणदिः॥ तश्चेलियेरः वरकावृसेमणिगण्योहातपाउधुणलाग्योः॥ तसद्वसेमासपसु
 त्याकोरहेछः॥ सयउद्योब्राह्मणकोखानासाराजाममाः विषषसाईदियो ब्राह्मणलेदेषेणः भोज
 नगन्योः॥ विषलेषुमायोरः ब्राह्मणकायरगयोरभन्योः॥ हे ब्राह्मणितिमीलेमकणविषदिहोः॥ मे
 रोमरणभयोभन्योः मन्योः॥ गृहस्थानिब्राह्मणले आक्रीखिकनब्रह्मणवधेगर्वाजापापिनिभन्योध
 यायोः॥ एतिकहिवेतालभंछ॥ हेमहाराजः ब्राह्मणमन्याकोपायः कक्ककनलागभंदा॥ राजाविक्रमशे

लभंछनः॥ एसोनन्याकोहः तस्करणपापणगर्नुः॥ आफोंमन्याकोहोः॥ ॥सिलोक॥ एदितिरेषुजोवृक्षेः
 यस्य एणरिणिशंकुस॥ मंत्रीहीणे यथा राजाः येनो कामविणस्यति॥ ३३॥ एतिकहि वेताल भंछः॥ हे महा
 राजः त्वां ब्राह्मणमन्याकोपाये। सर्वः ब्राह्मणि पाया। इतिणमध्यकस्करणलागच्छः॥ सांवनकस्यासि
 रफाटिमरोलाः सांवीकहुं भंदाः॥ राजा विक्रमशेण भंछन॥ त्वां पातककसैकसैकनछेणः॥ क्याहान
 न्यासर्पविषहुं न्याजातिहोः॥ तस्कारणक्यापापछः॥ ब्राह्मणिले नक्ति पूर्वगरि दियाकोहोः क्यापापछः
 ॥ गृहस्थाण ब्राह्मणले कैहिजानेनः॥ तस्करणक्यादोषछः॥ जोविना विचारले भंछाः ते सैकणपापछः
 ॥ एतिकथाहा कहि शुनिवेताल फेरि रुषे मागयो जुं डियो॥ राजा विक्रमशेण किर्दाभयाः॥ ॥ इति शिवदा
 सविरविते वेताल पंचविंशतिकाया द्वादसकथाहा समाप्तं॥ १२॥ ॥ एमः श्रुविज्जवीजादिः स्थितीप्र
 लयः कर्मणोः॥ विश्वणटकगिर्वाणं श्रुवधाराय संनवेत्॥ ३४॥ उपांत॥ राजा विक्रमशेण सिशोकारुष
 जाईरुषवडि जोरिकाटि मृतककोधमा बडाई वाट माहि ड्हा। फेरि वेताल भंछः मश्रुर्का कथा कहं

रामः
 ३५

कुः सुनहे महा राजः वंदुहां समन्याको एकण गरिथियो॥ तों हिं राजा ए रधिरनन्याकाधियाः॥ धर्म
 धजमन्याको वनिजों थियोः॥ तस्की कोरिः॥ कोमिणिमन्याकिथिः॥ तस्कारूपले सूर्यपनिः मुणीजण
 पनिः॥ जो कोहितस्करण देषथाः॥ मूर्छा भैष्टुधिविमा भुमणगर्था॥ वंदलुं ध्या। तस्कोपिताः धनका
 मदले विभाहो को वर्यागरेणः॥ त्वां जो वण वति भैः वावु कै घर वसि रहि थि॥ ॥ तों हों उपांतः॥ तस
 एगरमा योरले वहुतै उपद्रगण लाग्योः॥ सवै योरवासि राजा थै गथाः विंति गथा॥ हे महा राजः प
 सागरमा योरले उपद्रगन्या वहुतै भंदाः॥ राजा भंछन। अउ उपांतः योरको उपद्रहवैण भन्याः॥ वौ
 कीवसायाः राहमावो कि वसाया रयनि॥ उपद्रो दुं नै लाग्योः राजा मणमा विताउन लाग्यो॥ मय कै जों
 कुमनि राजा आधा रातमाः धनुर्वाणः दालन वारः लिये रहिंया सहरमाः एकउ राउनुमानि सदेष्ट्याः
 तें कोहो सभंदाः मचोरहों भन्या॥ योरले तें को सभंदाः राजा लेपनि योरहों भन्याः॥ फेरि योरले भन्या
 वडिया भन्या॥ दुवै जना सहरवाहिर हिंया॥ राजा कण योरले संध्या रागुणामालै ग्योः॥ राजा लेवो

रकोघरदेव्या॥ चोरभंडुनिमिजोंहिवसमतमोविशाउनाः वणईदिंसुभन्योरः चोरभिन्नपस्योः॥ एक
 केठिआईरभंडे॥ हेसत्त्वनिमीवांठोवांठोजाउजाउभनि॥ निश्चयनिमीकणचोरलेमारलाननि। रा
 जालेवाठोदेवाईउभन्या। केठिलेवाठोदेवाइदिः राजादवीरपुग्याः॥ फेरिदोआदिनचोरकोगोंउघे
 न्याः चोरलेयुद्धेगन्योः हातिघोरः प्यादासियाहिवहुतैमन्या। राजालेवडावलकएलेचोरपत्र्याः व
 ल्लियाडोरिलेवांध्याः॥ आकैसहरमाग्याः॥ वाजावजाईसुलिहालनगयाः॥ सवैचोरवासिहरुघर
 काग्यालवाठः॥ अठतिवाठभुन्नलाग्याः हेरहेरवडोचोरल्यायाः सहमाउपडगन्यावोन्याएहिहोः॥ ध
 र्मधजवनिजोंकिछोरिलेदेविः वहुतपुतिवतनैः वावुथैभुन्नलागि॥ हेवावानश्चोरलाईमवकुः स्वा
 मितुल्यहुंहुः छोडभंदा॥ वावुभंडुः हेछोरिः जश्चोरलेराजाकाशेनावहुतैमन्याः तस्कणकसोगरिहो
 जाउं॥ महाअपराधिवोरसंगः तेरोक्यापुतिभंदाः॥ चोचोरमन्यामसतिजोंलाननि। एतिभुनिधर्मधजव
 लिजोंगयो॥ राजाथैविंतिगयोः हेमहाराजः तेचोरसंगः मेरिछोरिकोवहुतैपुतीवस्योः॥ एककोठिसु

रामः

३६

बुः सुन हेमहाराजः छोडभंदाः राजारिसिकणः आग्यागन्याः॥ एस्त्राकुशनगभंदाः वणिजोंभंडु॥ ॥ सिलो
 क॥ वायसंभुविहीणं सत्यशुनस्तथाः धर्मकपिमदः धर्महिणंस्त्रिणं कंदर्पनुष्टं एहिपुनः ताणहिणेभू
 जगः॥ ३५॥ राजंमित्रकुतः खलुजनः ताणं सतंधर्मदः॥ एतयपृथक्पृथक्ः गतएराखियस्त्रप्रेमंणहि॥
 ३६॥ एतिव्याचोरछैननः कोकहेकोपुन्यावैः एतिभंदाभंदैः चोरकनसुलिहाल्या॥ ॥ चोवनिजोंकिछो
 रीः चोरथैगैरभनिः हेचोरः मतप्रिस्त्रिः मेरास्त्रामितिमीतिमीमन्यामसतिजोंलाननिः॥ एतिभुनिचोरपाहि
 लेरोयोः यहुहांस्यो॥ चोरमन्योः वनिजोंकिछोरिले। चोरकोसरिरलियेरः एदिकातिरजाईकाठको
 सोलोवनार्डः॥ जसेसोलासावसिः॥ तसेआकासगामीणिदेवीलेदेखिनः॥ भंदिनहेपुत्रीः तंदेधीमंसंतु
 धुमजोंः वर्माभंदाः सतीभंडेहेपरमेश्वरीः तिमिसंतुष्टभयोनाः मेरोस्त्रामिजगाईयोसयवर्षजिउन् ॥
 मेरासयपुत्रजमुनः भनि॥ देवीलेज्यातैलेवर्माग्याकोदिजोंभनिः॥ चोरउयोः राजालेदेव्यासवैषंवलदे
 व्याः राजालेवडाहर्षलेविभानिहुईकोगरिदियाः॥ वडोमान्यगन्याः राजालेअंकमालगन्याः॥ तिदुस्त्रि

पुरुषमयाः विषयः नोगविलाससुखसंपत्तिः वृद्धिभयोः ॥ एतिका कहि वेताल भंछहे महाराजा न्योयोर
 का अर्थ ले पहिले रोयो ॥ यछिहां सो जां निक नैन कल्यासिर फुटिम रोला ॥ एको ल्या छानि फुटिम रोला भं
 दा राजा विक्रमशेण आग्या गछं न ॥ दोर ले रोयो सो विनायोः ॥ हेरने स्त्री को आठः मेशमन्यो समये माः पृति
 गरिः ते स्को जो वण व्यर्था गयो भणि रोयोः ॥ हां स्या को अर्थ य सो विनायो ॥ ॥ सिलोक ॥ लक्ष्मी लज्जा हिणं व
 जान हिणं सरस्वती ॥ कुपात्रं वसनेणारि गिरि वर्धति माधव ॥ ३० ॥ भलामनुष्ये संगस्त्रिजादेन नः मंदा सं
 गस्वास्ति गच्छः एतोरिति कुरु नणि हां स्यो भन्या ॥ यतिभुनि वेताल फेरि हवे मागयोः ॥ राजा विक्रमशेन कि
 र्द भन्या ॥ ॥ इति शिवदास विरची वेताल पंचविसति कायां त्रयोदस कथा हा समाप्त भुभं ॥ ३१ ॥ ॥
 गणनामधिया श्रुं डोगज वक्रो महावल ॥ समे भवतु धुप्रितो वरदाता विनायक ॥ ३८ ॥ राजा विक्रमशेण सि
 शौ कारुष पुगि डेरिकाटिः मृतक कांध मावडा राजा वाठ माहि उदा ॥ वेताल फेरि भंछहे महाराज मन्त्र
 को कथा हा कहं कुः भुनः हे महाराजः एक को शांति भन्या की न गरि कुः ॥ ताहा भुवि वार भन्या का राजाधि

राम
 ३०

याससि प्रजा राणि धि इ नः ॥ चंदु प्रजा रौने लिथि इ नः ॥ बुद्धि सागर मंत्री धियोः ॥ चंदु प्रभा राज पुत्रीणी यो
 वन वती धि यी नः ॥ ॥ उ प्रांत ॥ एक दिण उशाण वन मास खि संग वेलु गे ॥ तां हा फुल टि मला गि ॥ तत्तै वि
 षय माः एक ब्राह्मणः स्वामि भन्या को आयोः ॥ राज कंन्या देष्योः राज कंन्या ले पति देषिः परस्पर सानु राग वृ
 ती भयोः ॥ काम देउ वक्रोः काम का वाण लेः मूर्छा भै भूमि मालो यो ॥ जी उं दो कु क्या भनि था हा पा येणः
 राज पुत्री पति काम देउ का वाण ले अवेत भई कण द वार ग ई नः ॥ ॥ उ प्रांत ॥ तत्तै समय माः ॥ मूल देउ र
 ससि धुर्त नाहि आयाः देष्याः मूल देउ भंछः हे ससि धुर्त देष ब्राह्मण को अवस्था भंदाः ॥ ससि धुर्त भंछः
 हे ब्राह्मण का कारण ले एतो भै रे छ स भंदाः ॥ नो भंछः राज कंन्या संग आस क पृति भयो भन्याः ॥ तव
 ससि धुर्त भंछ ॥ हेर वाठ हि उदाः पहिलो मनुष्ये काः यों वई डिय कुरु न्ति ए काः लज्जा पति दुं छः न
 न मृत्या त्री पति दुं छः ॥ शुंदरि त्रिका प्र कुटिकाः धनुः टंकारः काण माय न्योः नुमन भयोः ॥ न्यो सि ह दय
 मा रा ष न पाया ॥ एतो सुषुं दो हो भनिः स्मरण दुं छः ॥ जसे नेत्र का वाण ला ग्याः तसे अवेत भयोः ॥ ल

ज्ञाय निरहेणः नव यस्माद्वास्मणकनः शुंदरिखिकाहृष्टिवाणलाग्याः ननिः ससिधुर्नले भंदाः नवमूलदेउ भंदाः
 हेवास्मण यस्मा सोभाउताः खिकोयोहो भंदाः ॥ नवस्वामिभंदाः हेमूलदेउ संसारमाखिसंभोगदेविदुः
 लोत्रकोहृष्टिः मिलायकोरसायंखिदुः कृतार्थयनित्रकोहृष्टिः ॥ ॥ सिलोक ॥ दधिसारं घृतं श्वैवः
 नसारं वहोमयो ॥ होमसारं वस्वर्गवः सोष्यसारं त्रिया भवेत् ॥ ३२ ॥ खिमन्याकाश्चमृतकुंडलं नः सुष
 काशसिः रत्नकायरः एस्तिखिकोष्ट्रिकश्लेवनायोः ॥ खिकानिमीत्यधनसंयहगरिंछुः खिणभयाध
 नकोकाकाम ॥ पुरुषले शुंदरिखिसंगः आलिगणगरिणतः नस्कोजन्मवैर्थाहः कोमलागः कमलमु
 षिः अतिशुंदरिः पितसाजाः स्तणभयाकी श्रीफुलेजस्ताहानभयाकिः खिसंगसंभोगः ॥ एगर्नयायासंयतिज
 न्मवैर्थाहः खिसुंदरितिः ॥ कामदेवकिमुद्राखिहोः ॥ न्योसवैकोडिवैराग्यलिंछनः ॥ मुषवुद्धिहोः निर्दया
 कुंन्यालेः ॥ कोहिणंगाः जघधारिः मुडुलातिसवेदुः खिदुः पाकाकागोलकांक्रिजस्ताः ॥ वटगन्याकिखि
 कामुषकोष्ट्रितः ॥ जस्सुषलेजस्सुपुरुषलेपायेणः ॥ न्योजन्यातक्याभयोः ॥ यस्सुनुत्यहोः ॥ जस्सुपुरुष

रामः
 ३८

कामुखगीदकोरसपायेणः ॥ संस्तुतिवाणि कोलननजानेणः ॥ शुंदरिखिकामुखकोः वृन्धणगर्णपायेणः
 नस्कोमुखदुलोभंनुभंदाः ॥ एतिशुंनिमूलदेउ भंदाः हेवास्मणउठः ॥ न्योकंन्यामैलेतिमीकनदिजो नन्यो
 वास्मणउधार नन्योः नवमूलदेउलेमैलेलायाकोकामगरभन्याकोमाननन्योरः ॥ रुपधारिगुठिका
 वास्मकामुखहो लिदियोरः कंन्यामैः दोष्ट्रोगुठिका आक्रामुखमहाल्योः दृढवास्मणभयो ॥ ॥ नोहोउपां
 तः ॥ राजाथैगयोः ॥ राजाकोदर्शनगन्योः राजाले सुध्याया ॥ अहोवास्मणः काहावाठ आयैः भंदाः ॥ वास्मण
 कुरुमहाराजः गंगाधारवद्व्याद्रुः ॥ नोहोमेशेषुत्रयकजन्मोः ॥ षोडसाभयोठाकेटिमाग्याविभागरि
 दिजो ॥ ॥ एककोहिदिनमाः न्योकेटिलिणगयांः केटिलियेरगाउंका नजीकपुग्दाः गाउंकी एककेटिने
 धारः ननितमोकोरोनाकतादिसगयोः ॥ होशकाविरहलेमहतारिमरिन्ः धरनमोरिकैछुः ननिः मनव
 दुतेकीक्रिनयोः ॥ होशकसोगरिषोजु बुहारिकताशपुभनिः तन्नाहजूरल्याजो ॥ बुहारिनासोशविदे
 उः ॥ मछोरोषोजिल्याउंलाः नवबुहारिदियाभंदाः ॥ एतिशुनिशजालेविंतामान्याः ॥ धरैवस्यामामहासंकष्ट

पयोः॥वास्मणकोवचणमन्याश्रायगर्लाःअनिशुंदरिकंन्यादेपिःराजाभंछनःहवसभन्याछाडिजा
 उभन्याः॥आफ्रीकंन्याकनवोलायाःभित्रअनिपुरमावस्याकिवन्दुप्रभाशजपुत्रीआइन्॥राजाभंछः
 हेपुत्रीयोवास्मणकीबुहारिकणः॥रातदिन.बोदा.बेल्हा.सुत्रा.वस्ता.सदाहजूरमातमा राषःयोवा
 स्मणकोनासोहोः॥वरायत्तलेराषासभंदाःकंन्यालेहवसभनिन्॥हातमासमातेरःआफ्रादवारमालेगि
 नः॥षाटषट्ठिमाशवेरःवंडप्रभावसिन्ः॥वास्मणवधुलेवदुतैसूत्रामान्याजस्तोदेपिरभंणलागिः
 हेराजकन्याः॥काअर्थलेसुंन्यहृदयभैरैछोःफुश्रागलादुवलीलीभैरैछोभंदाःराजपुत्रीभंसीन्ः॥
 सिलोक॥विचारंगुणकर्तावसंगमंभवत्सुरं॥परदुःखंयःदुःखंवाःमेकादंभवविष्यती॥४०॥दोषः
 रोगःसुखदुःखसवैकनवरोवररहेछःहेवास्मणवधुः॥त्रिमीदेपिकानलुकाउंःश्रुतेःएकदिनसखि
 सितःउद्याणवणमाःमवेल्गजांः॥तांहींएकअनिहपवंतःवास्मणदेष्वाः॥मणअनिवंचलभयोःतत्काना
 उंःछाउंःमैलेजांनिनः॥न्योस्वामिणयायाताः॥एसैसरिजांलाभनिःतेसेविरहलेवेत्तिभैरस्वाकुभंदाः॥४१

राम
 ३२

तिश्रुनिहपधारिभंछःहेराजपुत्रीःन्योवास्मणमल्याईदिउलाःमलाईतिमीक्यादेउंलिभंदाः॥राजपुत्रीभं
 नःन्योवास्मणल्याईदियातमीदासहउंलाःसर्वथाः॥मेरोस्वामिदेष्वाईदेउःजसैभनिः॥हेरहेतवभनिरत
 सेउहिआफ्रासुखकोगुठिकाः॥वास्मणिलेजिकीरःशुंदरवास्मणउहिभयोः॥जसैदेखिनः॥राजपुत्रील
 ज्जावतिभजीन्ः॥मुसुकहस्किनःवांगाणजरगरिहेरिन्ः॥दुवैलेसुखासुषगन्याःदुवैहांस्यारअंक
 मालिगन्यासुरथसंभोगवडापृतिसंगगन्याः॥तत्तैप्रकारलेदिनकंन्याः॥रातपुरुषभैःसजकंन्यासंगग
 दागदैः॥बहुतदिनमागभंभयोजांम्योः॥॥उप्रांत॥तत्तैसमयमाःतांहिकाजिकाछोराकोविवाहगर्गम्यो
 यो॥अर्कादेसकाकाजिकीछोरिमाग्यो॥मृगांकावतीःराजाकापरिचारिसवैनिमोगन्योः॥राजाकापरि
 चारिसवैगया.वंडप्रभाववास्मणकिबुहारियनिगैः॥काजिकाछोरालेदेष्वाः॥रुपधारिकणःअतिवंचल
 गरैरःयोस्त्रियायामेरोजिउनुसायदुंदोहोः॥योस्त्रिणयायामैलेमर्तुछभन्योःरुपधारिकाकनदेपिमूर्छाभ
 योः॥मूर्छाभयाकोदेष्मिंतलेसुधायोः॥तवभंछःमिनथैवृत्तान्तकस्योः॥मिनलेकाजिथैकस्योभन्यो॥का

जिले राजा थैं विंतिगर्हः ॥ हेमहाराजः त्यो ना सो राष्ठा कि कं न्याः मे रा छो रा क ए दिनु प न्यो मंदाः ॥ राजा भंछनः
 हेकाजिः एस्तो म क्वा ए ग रु ला वा क्षण को ना शो वा क्षण दिनु छैनः ॥ वा क्षण की बु हारि मे ले दिनु स कु छे
 ए ॥ वा क्षण प्रा प गरि भ स्म ग र्ताः ॥ एस्तो धर्म राजा को होई रणः ॥ एका कि स्त्रि अर्का कन दि ए को स ल्काः ॥ वा
 ह वाः एस्तो कु रा दुं दे न नः ॥ त स्तो राजा को आ ग्या भु णिः ॥ स वै यों व ले विंति ग न्याः ॥ हेमहाराजः त्यो कं न्या ए
 दि या सं त्री पु त्र म र्द ॥ पु त्र का सो ग ले का जि म र्ताः ॥ का जि म न्या प छिः दे स से य भै जो ला मंदा ॥ यों व ले नि को
 भ न्या भ निः ॥ राजा ले वि ता याः फेरि मं त्री विं ती ग र्हः ॥ हेमहाराज सर्व था दि न्या दि न्या मंदाः ॥ राजा ले वा क्ष
 णि दिनु व डो पु स स्त भ य ए भ णिः ॥ राजा भु ध्या व रण ला ग्याः ॥ हे वा क्ष णि ति मी ले मं त्री पु त्र थैं जा बु प न्योः ती
 मि ए ग या ताः राज्य स य जों न ला ग्योः ॥ राज्य को र आ ग र मंदाः ॥ रु प धारि भं सि नः जों ज ति नि मि ले म क न दि न
 जि श्र य आ टे उ ताः ॥ म के हि विं ति ग र्हु भु नः ॥ का जी पु त्र ले म क न वि हा ग न्या भ याः ॥ छु मै द्रा स स्म ति र्थ जा व सः
 य सो भ या म मा न्युः छु मै हा प सिः म सं ग ए कां त हो ला ॥ ए ति मं त्री पु त्र सां छु ताः मै ले मा न्या लौः मंदा ॥ मं त्री पु

रामः
 ४०

व जंछुः म ति र्थ या त्रा गरि आ उं ज्वा लः मे री व्या दु ली सं ग व सो स ज न्योः ति र्थ या त्रा ग र्न भ नि ग यो ॥ ॥
 उ प्रां त ॥ रु प धारि रः का जि की बु हारिः ये का आ स न मा व स्याः ॥ त व व्या दु लि मं छेः मे रा ता पु रु ष सं ग र ति
 र्ता को र्द द्या धि योः क ता जोंः अं त जों न स कि णः ॥ पु रु ष जों हा छे न नः मे रो यो न्य भा गः तं क न क्वा न्य
 ना ग ला ग्यो रः जों हा आ र्द्र स मंदाः ॥ रु प धारि भं छेः तं क न र ति को र्द सा भ याः ॥ म पु रु ष भ य र तं क ए
 र ति ग र्हुः मा न्ये स मंदाः त्यो भं सेः म क ण क्वा ए लो न्या उ से उ मंदाः ॥ क्वा ए डा दु ला मे रा ता वि द्या को व
 ल छुः ॥ ॥ सिलो क ॥ दा एं व त प सा भु राः ज्ञा एं एं मृ त सं ग्र हं ॥ ए ते का र्ये भु नि स्ये हं दो वि ध न्न क रि ष्य ति
 ॥ ४१ ॥ ए ति जो ग र्हः त्यो जों न्या हो भं न्याः ॥ त मा वि द्या को व ल जो भ या छु त व भ न्या पु त्र से दे षा व त व भ नि का
 जी कि बु हा रि ले भ निः ॥ रु प धारि णी ले हे र्त व भ णि रः मु को गु टि का जि की रः भुं द लो ग्या भ योः ॥ ज सै का
 जी कि बु हा रि ले दे षि त सै म हा भु सि भैः व श प्री ति सं भो ग ति दु र्द ले र ति ग न्याः दू म्बा दू म्बि व्या ल म गरि अ ने
 क प्र का र सो र ति ग र्थाः ॥ ए स्ते प्र का र ले दि उ स कं न्याः रा त्र पु रु ष भैः आ रा म क्री डा ग र्था शो ष्ये ग र्थाः

परस्परप्रीतिवशाया ॥ ॥ यतिनयाउ प्रांत ॥ ॥ कुमैजापुगिगयाकुनः मंत्रीपुत्रार्द्रपुग्यो ॥ सहरमाहर्षव
 डाइगन्याः ॥ सवैपौरवासिहरुः काजीकायरमायाः ॥ गीतमंगलः वाजिउवेदपुगणः ॥ इत्यादिहर्षव
 डाइगर्णलाग्याः ॥ तिदुइकोमणवंचलनेयरस्परमंनलाग्याः ॥ कसोगशैः कताजाउं ॥ विषषाईम
 रेंकिः ॥ समुद्रपारिजाउकिभन्याः ॥ कसैगन्यापनिहुंन्याहैणभणिः रुपधारिमंछे ॥ ॥ सीलोक ॥ ग
 यामयाणसोवेंतीन्नागतोकुरुनेसदा ॥ खगृहंवननेजेदाराः प्रवेशंगमनंकुरुः ॥ ४२ ॥ यतिजोगर्हंत्योजा
 न्यावोलाउकु कहांउकु भन्याः ॥ अरुलोकहर्षवडाइगर्णलाग्याः ॥ तेसैन्योसरमाः तिदुईणिक्खाः ॥ जों
 हांसुरदेउथियोः ताहिगयाः तेसरुपधारिलिले ॥ न्योवृत्तान्नः धूर्तसशिशूलदेउथैंकस्योः ॥ ३ प्रांतः
 मूलदेउलेवृद्धसरुपगयोः धूर्तससिकणः षोडसवर्षकोः ब्राह्मणपुत्रतुल्यायोरः राजाकाद्वारमागयो
 ॥ राजाकोदर्शणगयोः ॥ राजालेविश्वाउनामावसायाः ॥ कुशलपुल्लगन्याः न्योकेठेकोल्यायौभनिः ॥ रा
 जालेसोधाः ब्राह्मणविंतिगर्हः हेमहराजमेरोपुत्रहो ॥ एसेकिब्राह्मणिनिमिछेउनासाग्याकिहो ॥

रामः
 ४१

ब्रा

न्योनासोमान्ननिः आंजोंदेउनंदाः ॥ राजामंछनः हेहणः मयकेहिदयाराषिमेरोविंतिभुंनुहवुसम
 न्या ॥ काजिकाछोरसितकोटृत्तान्नकस्याः ॥ न्योभुनिब्राह्मणः अतिकोपभैमन्नलाग्योः ॥ हेराजामेरि
 वुहारिः कर्कातिरतैलेदिउत्ता ॥ तंकणप्रापगर्हुमंदाः ॥ राषः राषः भन्याः राजाकाजिसवपेवः पाउपा
 न्याः ॥ प्रापणगरभनिविंतिगन्याः ॥ ब्राह्मणमंछः ॥ हेपावहोमेरिवुहारिभुंनदिघोताः तस्काठाउंमा ॥ रा
 जकंन्यादियाः मेरोछोरोवुजाउंलामंदाः ॥ राजायांबभलाभलासववसिसनगर्णलाग्याः ॥ प्रापकाउर
 लेदिउंतः कुदुम्वहोईनन् ॥ एदिउंताप्रापलेकुलकोः देशकोः भस्महोलाः प्रापलेसर्वनासहोलाः
 ॥ दिन्याहोउवाजातकणदिमाकादोषकुः ॥ भणिसनगन्या ॥ राजकन्यादियाः ब्राह्मणलेव्याहागन्याउ
 याणवणमालेग्याः ॥ वारैजनावादुलाभयाः ससिधूर्तः ब्राह्मणः स्वामिः राजकन्यानिमीत्रविवादगर्ण
 लाग्याः ॥ मेलेव्याहागन्याकिमेरिहोः ससिधूर्तलेभन्याः ॥ मेलेअधिगर्भजमायाकोकुंमेरिभयाकिह
 भनिः ब्राह्मणस्वामिलेभन्योः ॥ तिदुईकोविवादः मूलदेवलेसिंगसकेणन ॥ यतिकहिदेतालमंछः

हे महाजः न्यो राजकन्या कस्किना य्याहोः ॥ हे महा राजण बोल्या सिर फाठि मरौलाः न्या कोडि अर्कोतरह ।
 भन्या कोष फाठि मरौला भंदाः राजा विक्रमशेण आग्या गर्हन्तः ॥ हे वेतालः ससिधूर्त की भाय्या हो भंदाः फे
 रि वेताल भंछः ॥ ब्राह्मण स्वामिको अविगर्भ भयो तस्की काहा भैनः भंदाः ॥ राजा फेरि भंछन्तः हे वेताल
 भुनः ॥ ब्राह्मण लेता छले र भै गज मायोः ॥ ससिधूर्त लेता संसार बुझाई वाहा गयोः तस्कारणः गर्भको
 छोरो छो रिज्याछः न्यो ससिधूर्त कनः ॥ पिएउ प्रधान गलाः ॥ एसो भन्या कोछः शोवर्णः पुष्प पृथ्वी नाः ई
 निण को संविताः तिणे जण गर्हन्तः ॥ सुर विरः विशा वंतः भुंदरि सिः ई तिने गर्हन्तः ॥ एति भुनि वेताल
 फेरि सिशो कारुष गयो मुडियोः ॥ राजा विक्रमशेण पनिसि शो कारुष फिर्दा भया ॥ ॥ इति शिवदा
 स विरचिते वेताल पंचविं सतिका यां यतुर्दश कथा हा समाप्तं भुभम् ॥ १४ ॥ ॥ बावणं मे कदंतं वः गज
 वक्तं महोदरं ॥ एमा मि परया भक्त्याः विध्वंशं परमेश्वरं ॥ ४३ ॥ राजा विक्रमशेण सिशो कारुष जाई डोरि
 काठि मृतक कांध मावडाई वाट माहि उदा ॥ फेरि वेताल भंछः हे महा राजः म अर्को कथा हा कहंछु भुनः

रामः
८२

हे महा राजः एक हिमालय पर्वत धियोः ॥ सयजो जण वी स निर्णः कां वण पुर भन्या कोण गरि धियोः ॥ ते ह्म
 गरि मा विशा धर गण को जि मुत्र केतु भन्या को राजा धियाः ॥ केतु भन्या किरा निधि ईन्तः ॥ तस्मा का अ
 गण माः एक कल्प वृक्षे अ सि पू र्वा दै वि धियोः ॥ राजा अ भुता धियाः ॥ पुत्र निमीत्रो कल्प वृक्षे को शे वा ॥
 आश वना वहु मै गर्वा कल्प वृक्षे संतुष्ट भै भंण ला ग्यो ये सो भंछन्तः हे महा राजा जि मुत्र केतुः निमि दे खिम
 संतुष्ट भजों ॥ पाठ राणिः निमी कण वडो धर्मात्मा पुत्र हो । ला निश्चय दिजों पाठ राणि थें पुत्र जन्म ला
 भन्याः ॥ ॥ उघांत ॥ रह दा वर्ष दिण मा पाठ राणि थें पुत्र जन्म्योः ॥ ज सैत सैः हर्ष वडाईः दाणः पाठः पूजाः
 पा रा येण गन्या नाम कर्म गन्या णा म जि मुत्र वाह ण रा घ्याः ॥ राजा ले सदा पाठ पूजा गर्ण ला ग्याः ॥ दे समा सवे
 पाठ पूजा गर्ण सत्य वादि भयाः ॥ रिस रागः रु ग राः कसै संगण नु भणिः सवे प्रीति मात्रे गर्ण संसार भ
 यो ॥ उपसर्ग ॥ परवक्रः अग्निः वायुः वाघः भालु मु सा इत्यादिः ॥ केहि को भय भयेणः ॥ दसह जार वर्ष स
 मः काल को पनि भय भयनः ॥ मेघ पणि समय समय मा वर्स ण ला ग्यो ॥ भूमि पनि अने ले पूर्ण ला ग्यो

॥ गार्धपनिः घेलानरिदुददि एलाग्याः ॥ जिमुत्र केतु कारजोर्दमा यस्तोभयोः ॥ एतै गुण युक्त नैराजा जि
 मुत्र वाहाण राजार्थ गार्ध्याः न्योपनिविता उ एलाग्यो ॥ अहो संसारमाः सवै जिवा जनुकोः उपकार गर्तु
 न्योमति भलोह वस ननिः कल्पवृक्षे कोशे वागन्याः ॥ कल्पवृक्षे शंतुष्ट भै आग्या गर्ह नः ॥ हे जिमुत्र वाहाण
 क्याने रात्र्या छः वर माग मंदा हे भगवान् तिमी संतुष्ट भयेताः ॥ सवै पृथ्वी माधवा ध्ये व उ नः ॥ द
 रिद्रिको हि नहु उ नः यतिवर्मा गुरु मंदाः ॥ कल्पवृक्षे लेः तसै संसार माग राया ॥ उ प्रोता ॥ तसै स
 वै राजा लोक संसार आशम रहंदाः ॥ तां हा का राजा का गोतिया लेः यस्तो वितायाः ॥ वाबु छे शे दुवै धर्म
 पसिलाग्या य सै ओ सरमाः राज्य तिउं भनिः ॥ शै न्ये सा जि रात्र्ये न्याः ॥ त वराजा मं हं नः ॥ हे पुत्र क सो
 गशे मंदाः साहय विंति गर्ह नः ॥ संग्राम गरे र राज्य था सै मंदाः ॥ राजा आग्या गर्ह नः ॥ सिलोक ॥ एव नि
 षं सरि रस्यः सम्यतं एव तिष्ठति ॥ किंदुरं वस्थितो कालः तदर्थं धर्म संग्रहं ॥ ४४ ॥ यो सरि रसव सर्व दो
 ष भया को छ तत्कारणः मता गोत्र हत्या गर्हिण ॥ पाप कर्म गर्हिणः गोत्र हत्या गत्या पसिताः ॥ देवता पित

राम
 ६३

रः गटाहुं छः जिउंदा मा म दो वो लाया नाः न्यो मर्नु होः ॥ नणि गोतिया करण राज्य दियाः ॥ ए दिया नाः त न्को
 आसा भंग होलाः ॥ न्योपणि आसा भंग को धात क हा मि करण लागलाः ॥ तत्कारणः राज्य गोतिया करण दि
 उ भन्याः ॥ सिलोक ॥ वहं न व व्यापु ग जिंदु स्प वनेः दुमाल यं प क फलानि लानि भोजणं ॥ नृणाणि शोभ्या
 परिधाणि वस्त्रा लः न वं धू विरोधं वा दूर्ग मण म् ॥ ४५ ॥ तां हा उ प्रोता ॥ गोतिया करण राज्य शोभ्या रः ॥ राजां रा
 ज कुमार उ आण वण माग याः ॥ गोतिया को अं म्बल भयोः ॥ राजाः साहेवः दुवै वृत्त मारयाः कंत मूल धा
 र्द रयाः तसै समये माः त सै वण मार हणाः ॥ अवि पुत्र मधु कर संगः जिमुत्र वाहाण ले मित्यारि गन्याः
 ॥ तिमि संग राज पुत्र मलया पर्वत मा पल्ल गयाः ॥ तां हि एक गोरि देवी को मठ देव्याः मठ का अग्रेः एक ना
 र्द का उ वि वि विद्याः वजा उ दा देव्याः ॥ सवि युक्त भया किः ॥ तश्चे य नि दे विः परस्पर भयोः दुवै का छा ति माः
 ॥ काम दे उ का वाण लाग्याः ॥ काम दे उ ले वा प्यो वे षा भयाः ॥ ज सै काम का वे षा भयाः को दे वि र सविले
 नणिः घर जाण सकिण ॥ शो लि माहा ले र धर ले ग्याः ॥ जिमुत्र वाहाण क न य नि मित्र ले आसं मा व डा र्द ले ग्या

कामदेउविकलनयोः न्योकं न्यात्रा क्राय रगयापसिः ॥ रात्रिमा विरहकाः अग्निका आगाले संपूर्ण सरि
रउद्या किः ॥ विसा वंदु मंडलमाः वसेरः विसा दुगा मा वसेरः महतारि थे वृत्रा न्न गरिः ॥ न्यो त्वा मिण वायाः प्रा
ण न्या ग गरु ला भंदाः ॥ तां हा उ प्रांतः ॥ राणि ले राजा थे विंति गरिन्ः ॥ राजा ले दूत पठयाः ॥ जिमुत्र वाह
ण कण यो ज्ञ दूत गयाः ॥ मलय पर्वत मा जिमुत्र के नृ थिं विंति गन्याः ॥ हे महा राजः तमा रो ने ला कण यग व वि
धा वसुः हा मा राजा कि रो ने लि दि न्छ न् पूजा गर्ह न्ः भंदाः ॥ हवो स भन्याः जिमुत्र वाहण कण यग याः मलय
श्रुंद रि राज कं न्या वा हा गन्या ॥ वडा उ न्सा हलेः सुवर्णः रत्न भे या काः यालि मा व डी आयाः वा वा महतारि
का पा उ य न्या टो ग दि याः ॥ राणि समे त् पुत्र आ यो भु नि वदु ने पु सि भैः वा वा का ह दूर मा आयाः ॥ तस्त्रै स
मय मा एक दिन ता म लया पर्वत माः ॥ वन दु ल्भ भ नि सा लो सा थ लि कनः ॥ जिमुत्र वाहण गयाः ॥ तां हा य
क श्वेत पर्वत दे ध्याः शु ध्या याः ॥ न्यो से तो दे धि न्या क्वा हो न सिः साल थों शु ध्या याः ॥ सालो भंछः स र्प का ह उ
हुं न्ः ॥ तां हां स दा गरु ड ले ण ग मा रि षा न्दः ॥ दिन को य क य क मा रि षा न्द भ न्यो ॥ ॥ ज सै य ति शुं न्याः सा

रामः
४४

हो

प्रभृती संग गया कामानि सस वै फि रा याः ॥ राजा जिमुत्र वाहण यल्लै गयाः ॥ तां जार्ड पुग्दा ज सै पुग्याः ॥ एक
बु ठि त्वा धि लेः हे पुत्र भणि रु दा सु न्याः ॥ गया दे धारः शु ध्या याः क्वा ए रु सो भन्या ॥ बु डि भंछेः आज मे
रो छो रो म छेः गरु ड ले षा न्दः ॥ त सै अर्थ ले रुं छु भंदाः जिमुत्र वाहणः भ न्द न्ः जणि रा उ मे रो जि उ दि ये र
ः ॥ त मो छो रो व वा उं ला भंदाः ॥ संख दू उ ण ग भ न्दः ॥ हे मित्र प स्तो आ ग्या ए व हे सः ॥ वडा को धर्म प सै हो
तरः त मो जि उ मा रि मे ले वा य नुः धि क्कार होः ॥ नि मी जा उः आं हा ए व सः गरु ड आ व ला वि ण स हो ला ॥
जा उ जा उ भ न्दा जि मुत्र वाहण भंछ न्ः ॥ नि मि मेश भार्द भ योः आं दि व स म कौं कर्णः दे व ता क ण ण म
रण गरिः आ उं जि त्रां हि सः ॥ नणि ण ग ग यो आ का स माः गरु ड उ रो व नु स रु प गरिः ॥ आ उं दा दे ध्याः ॥
जि मुत्र वाहण गयाः ॥ ए म हां न्या सि ला म गयाः ॥ रु न्याः ॥ ए ग वा ण भ नि गरु ड ले उ रा उ नु स रु प ग न्याः ॥
सि लो क ॥ पा ता ल पा दं द स दि म पं कं स प्रो द रं त्व र्ग वृ क्षा ए कं ठं ॥ यं प्रा कं ने त्रं त्रै लो का ना थं द स यो ज
णं दु वे क्तं मी स रु पं ॥ ४५ ॥ गरु ड को मि स स रु प दे धिः राजा जिमुत्र वाहण उ रा या ॥ ज सैः त सै गरु ड ले स मा

न्याः पञ्चान्याः ॥ फेरिलियेरगयाः आकासमालेजांदाः राजाकाहानकोमृगुठिः गलाकोहारः राजाकोम
 उलेषिविहागयाकोरक्तलेमुद्धियाकोः ॥ मलयपर्वतीकाः काषमाषयोः ॥ तपोदेविमलयभुंदरिः महादुः
 नभैः हेस्वामिआजतिमीकणकामयोभणिसोकमानि ॥ ॥ तत्तेसमयमासंखवूडणगआयोदेव्याः ॥
 गरुडलेजांदाः तसैसोकमान्योरभंछः ॥ हेगरुडजितमोभसेहोईननः छोडछोडः ॥ नमोभसेसंखवूड
 नागकुरुहोः ॥ मतात्रौहिहुमंदाधुन्यारः संधिमाम्याः ॥ फर्कातांहिंषसायाः मैलेकागयाभनिधुधा
 याः ॥ तंकोहोस्वयाणयसिलामाआईसभंदा ॥ राजाभंछनः क्याणवितामान्छोः तमोमणयगरः मकण
 नसेगरभंदाः ॥ गरुडआग्यागर्छनः ॥ हेसत्यवादिः क्याअर्थलेसर्पकानिमीत्रजीउप्राणदिच्छोभ
 न्याः ॥ जिमुत्रवाहणभच्छनः वडाकोरितयत्तोकः ॥ प्राणत्यागभयापनिः आकुखोभावडूदैननः ॥ ॥
 सिलोक ॥ घृष्टंघृष्टंघुनः रपिः पुनश्चंदणंवारुगंधं दग्धं दग्धं घुनंरपिः पुनः कांवरणंकांतिवरणं ॥ ४१ ॥
 छिन्नंछिन्नंघुनः रपिः पुनः त्यादमाइसुदंउं प्राणत्यागेभवतिजनेः मृतंजायेतेउत्तिमाणः ॥ ४८ ॥ वडाको

रामः
 ४५

सोभावकतिदुःखभयापनिः कुलधर्मछोडूदैननः ॥ जोवडोधर्मात्माछः न्यादेवियकपाउपनिविय
 ॥ रीतभैः अन्त्यामाजादैननः ॥ कोहिभलोभनोस्वाः ॥ कोहिमंदोभनोस्वातपनिः ॥ लक्ष्मीरुद्रंतयनिजा
 उंतपनिः ॥ आजैमर्तुछतपनिः ॥ वदुतजिउंतपनिः अन्त्याअधर्मवडोमनुष्येगर्दन ॥ ॥ सिलोक ॥ भिवं
 तिणशास्त्रपनेवनामः स्वयेमेवनाभाषादतीणस्मायु ॥ फलामिवृक्षावर्षतीनामहेतुः परोपकाराय
 शतंविभूतयः ॥ ४२ ॥ रक्ताकरः किंकुरुतेतरणैः विंधवलकिंकरिभीकरोती ॥ श्रीषण्डषण्डमल
 याचलोवाः परोपकारायसतंतवीभूतयः ॥ ५० ॥ एतीजोछयरोपकारकणवडाकोजन्महुंछः ॥ वडा
 कोजन्मयरोपकारगर्दैणः ॥ तस्कोजीउनुवर्थाछः ॥ आकुपेटनाकागयनिभर्छः ॥ गौवाक्षणः स्त्रिसा
 धुनिमीत्रः जोजिउदिंछः तस्कोजिउनुसाफलछभनिः राजालेभंदाः ॥ गरुडआग्यागर्छनः हेमहासत्य
 वतः तंदेविमसंतुष्टभंछः वरमांगभंदाः राजाभंछनः हेयरमेस्वरः ॥ आजउप्रांततिमीलेनागण
 नुः ॥ अधिषायाकापनिसवैजीउभंन्याः ॥ तवगरुडलेहवसभनिपातालवाटअमृतल्याइसिविदि

याः॥नागसवैजाग्याःगरुडआक्राधाणगयाः॥नागहरुपनिगयाः॥जिमुत्रवाहणयणिआक्राआश्रमसाग
 याः॥अर्काकोजिउमारिवांन्याआकुपेठभन्यारसागन्यासवैछन्ः॥आकुजीउमारिअर्काकोरस्थाग
 न्यातः॥एकैजिमुत्रवाहणछन्ः॥॥नाहाउप्रांत॥एतिभयापहिःजोअधिगोतीयालेराज्यलियाकोधि
 योः॥तिसवैआयाःयाउपन्याराज्यसवैशोप्यालैग्याः॥एतिकहिवेतालभंछः॥हेमहाराजणवोल्यासिर
 फाटिमरौलाः॥न्याछोडिअर्कोतरहवोल्याकोषफाटिमरौलाः॥हेमहाराजःजिमुत्रवाहणरः॥संख
 दूडनागःदुर्दुर्माकोसत्याधिकःधर्मात्माकोहोअधिकभंदा॥राजाविक्रमशेणआग्यागछन्ः॥शं
 खदूडनागःसत्याधिकधर्मात्माहोभंदा॥वेतालभंछःक्याअर्थलेसंखदूडनागमधिकधर्मात्माभं
 दाः॥राजाविक्रमशेणभन्छन्ः॥गरुडलेजिमुत्रवाहणकणलैजाईहाल्योथ्योः॥त्योछाउमकणखाउभ
 न्योःआक्राकालमाः॥अर्काकोमरणक्याणगरुभन्यो॥छोडयोःभंदाः॥फेरिवेतालभंछःजश्लेअर्काका
 :कालमाहिआकुजीउदियोःत्योकासत्याधिकनयेणभंदाः॥विक्रमशेणराजाभन्छन्ःहेवेतालभुनःजन्म

रामः
 ४६

जन्ममाजिमुत्रवाहणकोः॥अर्काकाणीमित्रमाःप्राणत्यागगर्ग्याअन्यासधियो॥तवप्राणत्यागगर्ग्यागोडो
 मानैणथ्योः॥जन्मजन्मान्तरकोअभ्यासः॥दाणःविद्याःतयस्याधियोभन्याः॥एतिभुनिमात्रैवेतालफेरिरु
 धेमागयो॥राजाविक्रमशेणसिशौकारुषफिर्दाभया॥॥इतिशिवदाशविरचितेवेतालपंचविंशति
 कायांपंचदसकथाहासमाप्तंभुभम्॥१५॥॥अविशिष्टोःरसोयेताःरत्नकरपसोभितां॥वंदेसरस्वती
 देवीःअनेःकाशेवितास्थिताः॥५॥॥राजाविक्रमशेणशीशोकारुषजाईडोरिकाटिवेतालकोंधमावजा
 ईवाटमाहिउदा॥फेरिवेतालभंछहेमहाराजमअर्कोकथाहाकहंछुःभुनुहवसः॥हेमहाराजभुनःवि
 जैमूरभन्याकोएकणगरिधियो॥तसणगरिमाधर्मशिलाभन्याकागराजिधियाः॥रत्नदत्तभन्याकोव
 णिजांधियो॥नस्कीछोरिःउन्मादिनीभन्याकीथितस्कोरुपजोकोईदेषथाकासदेवलेपिशगर्थोःतयसि
 हरुपनीःवंवलुङ्गथाः॥तवएकदिणरत्नदत्तवनिजोःराजाधैंविंतिगर्हः॥हेमहाराजाःमेराघरमाकन्या
 रत्नछः॥रत्नकाअभियतिनिमिहोः॥त्योवांहिन्देभन्यावाहागरभन्योः॥त्योभुनिराजालेसामुंदिहेन्याजा

न्यावास्त्रणकणयथायाः ॥ रत्नदत्तवनिजोंकाधरगयाहेन्याः ॥ तस्कारुपलेसवैमोहितभयाः ॥ कंधर्वगलि
 तभयो ॥ जोजांन्यायंदकोगधर्वगलितभयाकोदेधोरः ॥ वावुलेकोरिलुकायोः ॥ कस्तिभन्याः एयणको
 शवन्नाकिः ॥ वंदवदनिः वम्याकुलजैगाला ॥ नाकवाठनेलधारावुदुन्याजैदेध्याः ॥ धुकुटिकामदेवका
 धनुषजैः ॥ दंतभन्याहिराजैः प्रमालजस्तावोठः कोकिलाकोजस्तोववणः गलामातिनलेषाः माधविला
 याकाजस्ताः ॥ वाहुहातिकायावजस्ता ॥ एषअंगुलिसानाभयाकी ॥ पहेलाठासांघाः घटिवठिकेहि
 नहिधरोवरः ॥ होंतिकाश्रुंजस्ताः वक्रवाकवस्थाजस्ताः ॥ स्तणः कटिसानुमुतिभिन्नकोः ॥ नाभिगंभिरः रूपको
 विस्तारकोगर्णसक्ता ॥ नेत्रवाहुलाः यस्तिणारिविधीलेख्याकिहोः ॥ यस्तिणारिभुभलक्षणकिदेध्याः ॥ हे
 र्णजांन्यालेमुखामुखगर्णलाग्याः ॥ यस्तिणारिसंगराजाराह्याताः ॥ तस्रसंगआसक्तहोला राज्यकोवर्षाः
 राजकार्तकेहिगरेणभलिः मतगन्याः राजाकाहजूरगयाः ॥ विंतिगन्याः हेमहाराजः अलसेणिरैरुः
 ॥ तमाजोग्यरैणकः विधरैरुभन्या ॥ इतिकेतिहेनजात्याकाकुराभुणिः ॥ रत्नदत्तवनिजोंलेवुधोरः ॥ धव

रामः
 ४७

लधरसंदारकणदियोः ॥ व्याहागयोः ॥ उत्मादिनीकणकोपउयोः मकणकेहिदोषणभयाकीलाइअल
 सेणभन्याभलिकोयभयाकैधियो ॥ ॥ तस्रैसमयमाएकदिणराजासहरमायात्राकणवैजायाः ॥ राजायात्रा
 मान्यायाकादेविउत्मादिनीयनिः ॥ राजाकादेवावमाहेरुभनिः ॥ अलंकारः सोदुसिंगारगरिग्यालमावसि
 रैधिः ॥ राजालेदेध्याः वितायाः ॥ त्योकंन्याहोवाः नागकंन्याहोवाः ॥ किंनरकंन्याहोवाः दैत्यकंन्याहोवाः ॥
 यक्षकंन्याहोवाः ॥ मनुष्येकन्याता यस्तिदुन्नभनिः जसैवितायाः ॥ तसैकामदेउलेव्येथागयोः ॥ राजाम
 लिणभयाकोठोकाद्यान्यालेदेध्याः ॥ विंतिगर्हः हेमहाराजकाअर्थलेक्याणमलिणभयोः ॥ क्यादुः खमणलेप्रा
 धिभयोभलि विंतिगर्दाः ॥ राजाआर्ग्यगर्हन्ः राजसहरहंरमायात्रासाएकविदेध्याः ॥ त्योदेष्टाकामदेउ
 कोव्येथाभयोभन्याः ॥ ठोकाद्यान्याविंतिगर्हः ॥ हेमहाराजः त्वोमनुष्येकंन्याहोः ॥ रत्नदत्तवनियांकिछोरिः
 तिमीलेअलक्षणीभलिछोयाकिहोभन्याः ॥ त्योभुनिराजामन्धनुशमनुष्येवास्त्रणहरुकणनिवारग
 र्णपठयाकाः दुशमावास्त्रणहरुलेठायाछन्हेरः कामदेवकोधनुर्विधाः अपूर्वकः ॥ क्याहाभन्याः सरिर
 माघाउणलागिः भिन्नपशेरमनाकैव्यथागर्हः ॥ केठिहर्णपठयाकावास्त्रणकणवोलायारः एसोभन्याः हेव्रा

स एहो मकण कण ठां ठेउ भन्दाः ॥ बाह्य एह रु विनिगर्ह नः ॥ हे महा राजः कारण लेटाया कोहोः ॥ क्याह
 भन्दाः न्यो न्यति भुंदरिछः नस्मा राजा न्यास कहुना नरः ॥ राजकार्ज गरे नानः राज्य सेय जाला भणि ठां ठि विं
 ति गया कोहो भन्दाः न वरा जाले नन कन विदा गया सह रवाहि रदे सनिकोला गरिध पायोः ॥ ॥ नाहाउ
 प्रांत ॥ धवल धर सदा र राजा धै विनिगर्हः ॥ एकां नमा ग्यो र विनिगयाः हे महा राजः न मोदा सगुलामुनः जो न
 ग्राम ए विन्न वसो नाः ॥ मेरि सिद्धि दे विक नताः ॥ न्यो मेरि सिद्धि निमी लाई दिंछु संभोग गर भंदाः ॥ राजा भंछु हे ध
 वल धर धर्मात्मा ले पर सि संभोग गर्नुः जो ग्य छै ए भंदाः ॥ धवल धर सदा र भंछु हे महा राजः जो मे ले मेरि सि
 दि पा प छि क्या दोष छ भंदाः ॥ येति सुनि राजा रि सि पुर भंछु नः ॥ ॥ सिलोक ॥ परदा रा र्थ लो छं वः स्व आत्मा
 पर आत्मा यो ॥ समं दृश्य यो नि न्यः ते ए रा धर्म जालि नो ॥ ५२ ॥ गुरु य सिध्य ता उं तिः दुष्ट उं ति नू पति पापि शो य
 मता उं तिः धर्म ए सर्व वस्य ती ॥ ५३ ॥ ए स तो क अ धर्म क तो रि गरु भंदाः ॥ धवल धर सदा र भंछु हे महा राजः
 ॥ मक मारि तु ल्या इ दि कु ति मी लाई ॥ उहां दे धि क रि तो पर सिद्धि संभंदाः ॥ राजा भंछु नः ॥ संसार मा विरो
 ध गर्नु छै ए ॥ अरु राज्य माले जा र वे स्या तु ल्या इ ल्या ॥ न व लि उं लो भंदा ॥ सदा र विनिगर्ह न मो संतोष गर वे

साना तु ल्या उं दि ए भंदाः नै सै र हं दाः ॥ ॥ राजा का उ न्या दिणी मा विन्न ला ग्यो ॥ ॥ दस अवस्था भयोः काम
 का अवस्था क ति दु न्न न्या ॥ ये के विता यो १ दोशो हे तु २ ते सौ सु स्के रा ३ वौ थो त्व र व शोः ४ पां यो स रि
 र का न्योः ५ छे ठो वा नु रु वे ए ६ सो नौ म न्या भ नि क रा उं न्या भ योः ७ आ ठौ क रा व न्या भ योः ८ नौ उं मा न्य वे
 न भ योः ९ द सौ मा प्रा ण न्या ग ग यो १० राजा म न्यो ॥ ॥ नाहाउ प्रांत ॥ राजा व स्या भ णि ध वल ध र सदा र ले सु
 न्योः ॥ न सै द र्वा र ग योः गुरु थें भु ध्या यो ॥ हे गुरु जि उ अ व का का गर्नु भंदाः ॥ गुरु भंछु नः आ दि न्य क ण
 अ र्घ दि नुः मे रो स्वा मि नं हि हो सः ॥ सं सार मा जि वा द को प्रा णि ति मि हो ॥ क र्म लेः म न लेः व व नं ले ॥ नि मी दे धि
 अ को मे रो को हि छै ए भ न्यो सो ला मा प्र द क्षी णि ग रे र का ल ह्य ल्यो ॥ ज सै न सै उ न्या दि नी भं से ॥ हे गुरु
 जि उ सि को ध म क्या हो क दु भंदाः ॥ गुरु भंछु नः ज स दि न क न्या दा स दि न छु नः ॥ न स दि ए दे वि वा वा को
 कु ल प वि न्न दं छः ॥ स्व मि शं ग ग म ण ग न्याः उ न्न म हो ॥ ॥ सिलोक ॥ स्व गृ हं स्व मि ति रं तिः ति र्थ व्र त कृ ते
 स्त्रिया ॥ स्व मि ना श्रं द्रा यु सिं णः ते ए रि णं कं वु जे तः ॥ ५४ ॥ स्त्रि ले स्व मि णी गु निः ॥ रो गी पा पि छ भ या प
 निः ॥ पर मे श्व र दे व ना र्हे स्व मि क ण मां नुः ॥ जिं उ दा मा शे वा गर्नुः म न्या प सि स ति जा नुः न सो ग न्या पा उ

मायाउमाश्वमेधयज्ञः गन्धार्जुनो फलदुःखः ॥ साधुस्त्रिको धर्मः स्वामिसंगसहगमणगर्नुः ॥ अर्को धर्मके
 हिक्केण ॥ ॥ सिलोक ॥ त्रिकोटि अर्द्धकोटिवाः यानिरोमाणिमानुष्ये ॥ तावत्तुवर्षसहश्रालिः भर्तारो सहग
 मित्नी ॥ ५५ ॥ तां हां उ प्रांतः ॥ ह्मानदाणगरैरः ॥ वितामाप्रदशीणगरिरः उन्मादिनी स्वामिधेगैः ॥ हे स्वा
 मितमादासकिदासीणिहो ॥ जन्मजन्मान्नरपणिभल्लिखोलाभावद्विषतिगैः ॥ एनिकथाहाकहिः वेता
 लभंछः ॥ हेमहाराजः एतितिएसधेकोसत्याधिकधर्मात्मादुलोहो ॥ जांनिकएनकस्याछोतिफोटिम
 रौला ॥ एवोल्यासिरफाटिमरौलाभंदा ॥ राजाविक्रमशेणस्यग्यागर्हूनः ॥ हेवेतालभुनः राजासत्याधि
 कहोभंदा ॥ वेतालभंछः राजाकाश्वर्थलेसत्याधिकहोभंदा ॥ राजाविक्रमशेणभंछूनः ॥ आकाशेवक
 किनारिशेवकलेदियाकोलियाताः धर्मविशोधहोलाभलिलियेणः ॥ ॥ सदीरलेस्वामिनिमीन्यजिउदि
 योः त्योयोग्येहो ॥ उन्मादिनीलेआकाशामिपक्षिसतिगैः ॥ त्योपनिजोग्येहो ॥ संसारमायत्ताछः भुख
 भोग्येगर्दादुःखदुःखः ॥ दुःखगर्दाभुषदुःखः एतोवरित्रछः ॥ एतिभुनिवेतालकेरिरुषेमागयो ॥ राजा
 विक्रमशेणकेरिशिशोकारुषकिर्दीनया ॥ ॥ इतिशीवदासविरचितेवेतालपंचविंशतिकायां वो

उशकथाहासमापुंभुभम् ॥ १६ ॥ ॥ वृत्तायेणकुलालर्वदीनघटवत्वाह्माएउभाएउदरेः ॥ विह्वर्जण
 दशश्रुवतारगहणेः नितामहासंकटे ॥ हद्रोमिस्तुकपालदयाटपुटकेमिशार्वणपावके ॥ सूर्ये
 ग्राम्यतिनित्यमेवगगनेः तस्मै नमः कर्मणेः ॥ ५६ ॥ केरिशजाविक्रमशेणसिशोकारुषजार्हृषव
 द्विडोरिकाठिभृतककांधमावजार्हृवाटमाहिडदाः ॥ केरिवेतालभंछः हेमहाराजः मन्त्रकोकथा
 हाकहंछुभुंनुहवसः ॥ हेमहाराजभुनः ॥ एकउज्जयर्त्नीभन्याकोनगरिथियो ॥ तां हां महाशनभ
 न्याराजाथियो ॥ देउसर्मभन्याकोबाह्मणथियोः ॥ तस्कोछोशेगुणकर्णभन्याकोवडोपंडितज्ञाणि
 थियो ॥ सुशेपनिथियोः तस्मैसहपाभन्याकिवाहागयोः ॥ गुणकर्णभन्याकोनुवाभन्याभयोन्पाकेहिघ
 रकोधननुवाभाहायोसवैसधैलैजार्हृनुवाभाहोर्णलाग्यो ॥ तस्मैगर्दापरियारलेधपायाः ॥ अर्कोदि
 समागयोः सहरवाहिरदेवलमावसेरः ॥ भोकेलेकताजांकापांभणिमणमावितागरिवस्याको
 थियोः ॥ तस्मैवेलाभाः एकजोगिमहावर्तीतां हिआयोतस्मैजोगिकएनमस्कारगन्यो ॥ तवजोगिले
 तंकोहसभंदाः ॥ तस्मैमवाह्मणपुत्रहोभन्योः ॥ आकुवृत्तान्तकस्योः भोकेहुभन्योजोगिभंछः ॥ मालि

कायप्रमाभातकः॥न्योषांछसभंदाः॥प्रमाकोभातकसोषोरिः॥मनावाहणपुंड्रंभंदाः॥जोगिलेवु
 ज्योःवडाकुलकोरैकसः॥भणिजोगिलेध्याणगन्योरः॥वटईक्षिणीआर्ःहेजोगिःक्याआग्याहुंछभणि
 ॥नवजोगिमंछ॥एस्वाहणकणःषाणःपिणःश्रुतदेःएकशतभन्यो॥तसैएकदिवेधरदेवीलेर
 विनः॥नसैधरमावाहणकणःखानुपिनुःविश्रावणःशतमासुरथसंभोगसंपूर्णगन्यो॥जसैविहाये
 वटईक्षिणीगैः॥वाहणएकैभयोःविहाणहेछनाःकेहिदेवेणः॥नेसैदेवीकोस्मरणगन्योसुन्यहृद
 यमात्रेदेवो॥पुंन्यहृदयध्याणगन्योकेहिदेवेणः॥जोगीमंछःहेवाहणक्याणविलपाउछसभंदाः॥
 वाहणमंछःवटईक्षिणिकाविशंगलेमकुंभंदाः॥जोगीमंछःन्योदेवीविद्याकावललेगेभंदाःहे
 प्रभूत्योविद्यामकणदेउभंदा॥जोगिलेमंत्रेदियोःएकवित्रगरिजलमावसिसाधकगलैभन्यो॥वाह
 णलेविस्तारगन्योः॥प्रतसेभयेणः॥वाहणस्मरणगर्हपरियारिमंनलाग्यो॥हेजोगेस्वरमपरिया
 रिभेटणजांछु॥मफेरिआउलाभन्योरगयो॥धरगयोपुग्योरभेटगन्यो॥नववावुमंछःहेपुत्रगुणक
 रःकोहावस्याकोथिईस॥धरनेरिवाहणीःनेरावुनःधर्मःशीलमाःआकरमारहाकीछः॥गृहस्तव

मंदेवीःसुकोधर्मछैणः॥स्वामिःवावामहतारिदेवीदुलोअर्कोकोहिछैणः॥विष्णुदेवतादेपिदुलो
 अर्कोछैणः॥मायांदैणःभणिःवाहणकोववणकः॥भणिवावुलेभंदाः॥एतिपिताकाववनश्रुतिः
 पुत्रमंछ॥हेवावाःएससरिमाःरगतःपियःकिराःजंतुलेःमलःपुत्रलेःदुर्गंधलेःव्याप्रभयाकोछः॥
 संतोषःसुषःविरक्तदुन्यालैकोहो॥पंडितकोहोःहेरःसंसारमाःकोकत्कोवावुःकत्किआमाःकत्कोदा
 ज्युःकत्कोभाईःकत्किखिःकत्कोपुत्रः॥संसारमाउत्पनिप्रलयएतैछ॥केतावेरमन्योःकेतावेरजन्यो
 ॥अनेकहजारवर्षःजोगिमाः॥कोवावुभयोःकोछोरोभयोः॥वीर्येकारःरक्तकावललेशंजोगले
 देहिबंदछ॥देहिमाविधिरःमलमूत्रलेइत्यादिपूर्णभयाकोछः॥नस्कारणदेहिअश्रुविछ॥श्रुविक्या
 लेहुंछभन्या॥ज्ञानलेहृदयसुविहुंछः॥पेटमाभयाकोवाहिरधोयालेसुविहुंदैणः॥क्याहभन्याक
 मयज्ञगन्याकोदेवताअग्निछः॥ज्ञाणिकोदेवतापेटमाछ॥जस्कोअल्पबुद्धिछःकोप्रतिमाकणदेवताभ
 छजोगिजन्मननकोदेवताहृदयमाछः॥नस्कारणगृहस्थाश्रमकीप्रयोगप्रयोजणछैण॥संसारमा
 मनुजन्मनुभलोछैण॥जोगसाधकगर्हुभनिः॥फेरिधरवाटनिस्को॥जोहाजोगिथियोतांहिगयोजो

गीकाहजुरमाजाईअमिप्रज्वालागयोः॥अग्निमावसिमंत्रसाधकगयोःवटईशीणीआईनःनैपनिमनि
 :॥जोगीछेउभन्योः॥एतिकथाहाकहिवेनालभंछुः॥हेमहाराजःजाणिकननकहाछानिफाठिसरो
 ला॥एवोल्यासिरफाठिसरोलाः॥हेमहाराजक्याकारणलेवटईशीणिआईणभंदाः॥राजाविक्रमशेण
 भंछुनः॥साधकिदोविन्नभयाकोदेधिरःआईणः॥एकविन्नगयाकार्येसिद्धिहुंछुः॥जवदोविन्नभयो
 कार्येणसुहुंछु॥॥सिलोक॥दाणहिणंकथंकीर्तिःभावहिनेषुदेवता॥सुविहिणंगनेलक्ष्मीःदैविध
 एंवसिद्धती॥५१॥येनिभंदाःवेनालभंछुःकसोरिदोविन्नभयोभंदाः॥राजाभंछुंमंत्रसाधकगर्दागदैपरि
 परियारथेंपुग्योभणिः॥एस्तोदोविन्नभयाकोशिष्यकर्ने॥कसोरिमंत्रदिउंभनिःमंत्रदियेणः॥तसअर्थलेवि
 थारितिकणआईणः॥एतिसुणिवेनालफेरिरुखेमागयो॥राजाविक्रमशेणएणिकेरिसीशोकारुषकिर्दाभया॥
 ॥३॥तिशिवदासविरदिनेवेनालयंवदिसनिकायांसपूदसकथाहाहासमापुंभुम॥५॥॥एमस्तस्मैगणेश
 य सर्वविघ्नविनाय शणे॥कार्यैरंभेःसुसर्वेषुयत्सुरैरपिपूज्यते॥५॥॥राजाविक्रमशेणसिशोकारुषजाईजो
 रिकाठिमृनककांभमावजाईवाटसाहिइदा॥फेरिवेनालभंछुःहेमहाराजमअकोकथाहाकहंहुपुनः॥

रामः
५१

हेमहाराजःएकवंकोसुभन्याकोणगरिधियोः॥तांहराजायूणभुंदरभन्याकाधिया॥तणकाराणीवदुतैधियाः॥प
 रंतुपुत्रसंताणकेहिधियेणं॥तांहायभभन्याकोवाहणधियो॥महाधनभन्याकोवनिबांधियो॥नस्कीछोरि
 धणवतीभन्याकिथीः॥नस्केणसामलिपूरवस्यावाहणलेवाहागयोः॥आफ्राधरसुषसंभोगवत्तामाः॥एक
 छोरिजन्मीगोनाउरहेछुः॥यहिलेआकुमरैछुःयोः॥नसैगेटियाआयाः॥अपुनालिधनसवैलैग्या॥नोधनवनि
 लेःछोरिलियेरःवाबुकाधरजांदाः॥राजययोःवागेविरिधोरःमशाणतिरलागीछु॥एकवोरभुलिहाल्याकोर
 हेछुः॥नस्कापुद्यमाधणवतीकोआंगलाग्योरः॥वोरभंछुःकक्षेमकणकष्टगयोभन्योः॥यछिवोरभंछुःए
 तोरहेछु॥सुखकोदुःखकोदानाकोहिरहेणछुः॥अधिकोत्याकमात्रछुः॥न्योमात्रैरहेछुः॥जोहासृत्युःताहां
 दुःखःजाहालक्ष्मीताहाबंधछुः॥जाहाआकुनिमीत्यछुःतांहांकर्मलैजांछु॥सुलिपयाकाणिणदिणभयारप
 निः॥अक्तजिउनाकोआशाछुधिकारहोभनिवोरभंछुः॥नकोहोसभंदाःनोधणवतीभंछुःमअनाथहो॥एकछो
 रिरमछोभंदाःवोरभंछुःनेरिछोरिमलाइदियाः॥एकलावभुणकाअभ्रफिदिउलाभंदाः॥धनवतिभंछु॥॥
 सिलोक॥पायमूलंभवेत्तलोभःव्याधिमूलंभवेत्तथा॥दुःखमूलंभवेत्तपृथ्वीतिगनेत्येत्तभवेत्सुखं॥५२॥यो

पुत्रीमैलेदित्रों कसोरिपुत्रनुल्या छ स्रमंदाः॥ चोरमंछः गंधर्वविवाहनयो॥ जवरिनुहोलाः नवयकवास्त्रणडाकिः॥ मे
 सहज्जारहपैजों सुनकादियेरः॥ अनुदाण गगनाभन्यो॥ जोंहादेविः पूर्वः वरकावृक्षेः॥ तसरुषमणिलाषत्र
 थपिछन्ः लैजाउभन्यो॥ चोरमन्योः तांहाउप्रांत॥ ॥ न्योधणवरकारुषमनीजार्द्रः॥ आमाछोरिलेउकासिसवैध
 नलियेरः॥ सहरतिरफर्कि॥ एकाठाउंमाविहारतुल्यायेरवस्याः॥ न्योकंन्यादिनदिनवडीः॥ जोंवणवनीमैः॥
 एकदिणज्यालमावशेरः सविसितखेल्माभाः॥ एकवास्त्रणकणदेविः॥ सविथेंभनिः हेसवितस्रवास्त्रणः कणदे
 व्धारः॥ कामदेउवकुः तत्कणडाकिदेभन्योः॥ सविलेवास्त्रणकणडाकील्याईः माथीलैगी॥ तवआमाभंछेः हे
 वास्त्रणमेरिछोरिकाभन्यो॥ अनुमैरहेछः॥ तसकणअनुदाणदेउः छोरानन्याहजारअथपिः तिसीकणदिउंलाने
 दाः॥ हवसभन्योः वटियामावसाया॥ सुणः मोनिकयराः पहिरया बांणः पिलः पाणः सुपारिः मिठार्द्रः सुवाया॥ रा
 तिसंजोगगन्यो॥ ॥ उप्रांत॥ विहाणसविआर्द्ररः शुद्धाउंछेः॥ हेसविआजनेराखामिलेरातमानंकणकाकाग
 न्योकसोभयोभंदाः॥ न्योभंछे॥ स्वामिविछाउनामाआयाजसैः॥ तसैसारिफुकोः आकोमैलेभुदियाईणः॥ अरुक
 पशपनिखलाभया॥ जांगमापुग्याः जोंहासम्मजोंदहुः॥ उप्रांत॥ रसकावसवर्दाः काकाभयोजोंदिणः॥ एस्ता

स्वामिताजन्मजन्ममायनिविसिदै ननभनिः॥ कस्ताभन्याः सुरोः कुलवडोः प्रेमववणअन्यंतमायागन्याः॥ दानाः पुणवत
 : अतिरक्षाधारिः॥ त्रिशंभोगगर्नसियालुरखाछन्ः॥ ख्यालवृर्किगरिः स्तणसमार्द्रः पुखकोवृस्त्रणगालादोंत
 लेयोकिख्यालमक्करीगरिरतिभयोभनिः॥ तेस्कोतेशैदिनगर्भभयोः॥ पुथमप्रहरमासंभोगगर्दागर्भरखो॥
 गर्भरखाछैठदिनमाः॥ तेस्कारिलेस्वप्नादेविः॥ एकपुरुषजठाहूटअर्द्धवंडुकुल॥ स्मशानकोफुल्लैभस्मस्योघेको
 :॥ सेजोजनैलायाकोकमलासणभयाको॥ शेतानागकोमेवलालायाको॥ खड्गखदांज्रपुण्ड्रदोंहिनाहातमालिया
 को॥ दसभूजाः पंचक्रः पितणयणः सूलयांणिः बांगादोंतः कंकणकाणमालायाको॥ उम्बरुः ध्वंठः बाहुमावांध्या
 कोः केवलकालाः मिजस्त्रीः गोरुमवडाकोः॥ एस्तातपसिलेस्वप्नाभन्यो॥ योनेरोछोरोजन्मलाः॥ एकमधुसमानेरो
 पुत्रहाल्यासः॥ तेसपुत्रसंगः हज्जारअथपिहालिः॥ राजाकाद्वारमाशविआयासः॥ भनितपसिलेभन्यो॥ तपसिलेरा
 तमास्वप्नामान्याभन्याकोः॥ विहाणआमाथेंन्योवृत्तान्तकहि॥ ॥ उप्रांत॥ दिनदिनरहंदावस्तामैद्रापुग्याः॥ पुत्रजन्म
 :॥ जसोतपसिलेभन्याकोधियोः तसैगरिः शुनकोमधुसनुल्यायोपुत्रहालिः॥ ओंकहजारअथपिहालिः॥ राजा
 काद्वारमाशविगैः॥ जसैतसैः रातमाशालेपनिस्रपादेयाः॥ एकतपसिशजाथोंभंछ॥ हेराजाः तेराद्वारमायकपु

उरुः पातशणिकणदेर्भङ्गः ॥ नन्यो ॥ शणिले मधुसल्यार्द्रः ॥ हेन्याः हजाररूपैर्नां मधुसुखिसमेतः ॥ श्वेतो पुत्रदेष्यालस
 एहेन्याः ॥ वनिसलसेणहेन्याः ॥ नवराजा भङ्गनः वनिसलसेण भन्याका कयादुं भंदाः ॥ दैवज्ञे विंतिगर्ह्यनः ॥ ना
 निः कंठः हृदयः एतिगंभीरनिका ॥ मरुच्छातिमुखः निधारः एतिविस्तारनिकाः ॥ काषिः कोषाः वोटः एषः
 काणः कोंधः एतिउद्यानिका ॥ लिंगः दृष्टिः ग्रीवाः जंघः ॥ एतिछोठानिका ॥ ॥ सिलोक ॥ पाणिपादौ तले रक्तौः ने
 त्राणि वणपा निव ॥ तालुजिह्वाधरोष्ठौ वसप्ररक्तौ भुवि भवेत् ॥ ६० ॥ दंतः अंगुलिः घण्टः केशः एतिवारः रा
 तादुं न्याभूस्सदानाहो ॥ विउंदो-श्रीं धाः नाकहाक्षितः दुदकोः अंतरः ईयां वदीर्घनिकाः ॥ योवालवलशनकोर
 हेरुः श्वस्यराजाहो लाभनिदैवज्ञले विवारगयारः ॥ राजार्थे विंतिगन्याहो महाराज लसणकोवालवलरुहेरु
 भन्या ॥ एतिराजाले भुन्याः वालवकनहेन्यातसैः मोनिकाहारपुत्रकागला माहात्या ॥ पातशणिले पुत्रकनः ॥ रा
 जाकावाउंतिरशविन ॥ ॥ तां हाउ प्रांत ॥ हर्षवडाई उत्साहगरि भित्रलैयाः ॥ नामकर्णगयाः हरिदत्तनाउं राष्या
 ॥ पाटशणिले गुरुथै शौं पितृः ॥ शाखपद्मायाः सोडुवर्षको भयो सवै शास्त्रपद्मोः ॥ कोउ सवर्षसम्प्रवालकुं
 छः ॥ सत्तरिपुग्दा अद्वैत्पादुं छः ॥ उहाउ प्रांतः वृद्धकुं छः ॥ उहादे विन्योराजा कालले प्राप्तागगन्योः ॥ न्योराजा

मन्यापत्तिः ॥ तन्को पुत्रहरिदत्तराजाभयोः ॥ ॥ तां हाउ प्रांत ॥ केहिदिनमाराजा भङ्गनः ॥ मपुत्रज न्याको कया
 सव्यार्थः जोगयापि उदाणः नगया जन्मवर्था छ भन्यो ॥ एतिमनमा विवारिः बुद्धिकन ॥ एकदिनवावाका
 निमित्त्यः गयाभ्राह्मणगर्गयोः तां हाजाई वदुतदु व्येदाण गन्योः ॥ गुरुभङ्गन जसकाद व्येछः ॥ सवैजीवादप
 र्दयाराषुतुः ॥ नवतस्कराणाणि भंतुः ॥ तस्कोमो सङ्गुं छः ॥ ॥ सिलोक ॥ यदि भवति पीत्री दण्डः नममुण्डं
 जटंवा ॥ यदि हरति युकायाः कंदमूलं भसेयंवा ॥ यदि पटति पुराणः वेदशास्त्रं कथंवा ॥ यदि हृदयम
 शुद्धं ईत्यसर्वं विटंवा ॥ ६१ ॥ दाणः घेतेः सेवाः मणभुद्धनभैगन्याको भुद्धैण व्येथा छ ॥ भ्राह्मणभैः कर्मणभैः
 हंकारले भ्राधजोगर्हः न्यो पितृपाउं देनन् ॥ देवताः काठमाः पालिमाः दुंगासाः ॥ एतिगउं माकते छनः ॥ को
 हाछन भन्याभावमाछन भनिगुरुले भन्याः ॥ एतिगुरुकावयणभुंनिः हरिदत्तराजालेः आकाहातले जसै
 पिएदियोः ॥ तसैः फलुवाटतिनगोटा हाटनिस्वाः ॥ हरिदत्तराजाले आश्रयमान्याः ॥ कस्काहातपिउं
 दिउं ॥ कस्काहातपिउं गदिउं भन्या रास्तो आश्रयभयो ॥ एतिकथाहाकहि वेतालभङ्ग ॥ हेमहाराजः योर
 काः पाल्याराजाका ॥ अनुदानगन्याकाः ॥ एतितीनमाः कस्काहातपिउं जां छः ॥ जातिकणनकहाको वफादि

मरोलाः॥एवोल्यासिरफाटिमरोलाभंदा॥राजाविक्रमशेणआग्यागछुन॥बोरकाहानजालाभंदा॥वेतालमंछः
 क्याअर्थलेःजस्कोविर्येनस्करणनहिः॥अथबाराजालेपाल्याःराज्यदियाःनस्करणनहिंभंदाः॥राजाभंछुनः॥
 ब्राह्मलेविर्येकोमोललियोःवेव्यापछिआफुहुंदेणःनस्करणनस्करणभयेणः॥राजालेसुवर्णलियेर
 पाल्याबोरकोभेणषायाः॥नसअर्थराजाकणभयेणः॥वीर्येकोमोलःपालणगमैर्न्याःबोरकोधेणहोःन
 स्करणपिणुयोरकाहानगयोः॥एतिकथाहाकहिभुनिवेतालफेरिहवेनागयोः॥राजाविक्रमशेणपनि
 फेरिशिशोकारुफिर्दभयाः॥॥इतिशिवदासविरचितेवेतालपंचविंशतिकायांअष्टादशकथाहासमाप्तं
 शुभम्॥॥॥॥विद्यारंभेविवाहेययवेशेनिर्गमेतथा॥शंभामेशंकटेवापिःविधुंतस्यणजायेते॥६२॥रा
 जाविक्रमशेणशिशोकारुषजाईः॥रूपवद्धिडोरिकाटिमृतककोधमावडाईवाटमाहिउदा॥फेरिवे
 तालमंछःहेमहाराजमअर्कोकथाहाकहंछुणः॥हेमहाराजःवित्रकूटपर्वतमाः॥वित्रकोटनगरिथियो॥तां
 हारुपशेणभन्याकाराजाधिया॥तिणराजाघराप्रभृतिमृगमार्था॥नवतिराजाऐजापेललेनगयामातृर्षा
 लाग्योः॥वरपरहेयपोषरिदेष्वाः॥तांहिगयाःघोरादेविबल्पाघोरोविशायो॥क्षिणमात्रेहेदीमाः॥एकअ

धिकंन्याफुलटिपिदेष्वाः॥फुलतिपिरकंन्यागैः॥राजाभंछुनक्याणजांछौउवाकायरनिवोआउंछु॥निवाकाघर
 उवोआउंछु॥बुढोःवालधःजुवानआउंछुनःसबैभंदाहुलोःअभ्यागतयाहुंनुहोभंदाः॥अधिकंन्यालेहेरिनःपरस्य
 रःवांगोगरिःदेवादेघगयाः॥जसेनसेकामउलेपिडागयोःजसेःनसेअपियनिआउपुग्याः॥तिअपिवडाहुंभनि
 राजालेप्रणमगयाः॥अपिलेआसिर्वादगया॥अभिभंछुनःहेमहाराजःएकैक्याणआउनुभयोथोभंदाः॥रा
 जालेअज्ञापेलनआजांथ्यांभन्याः॥नवअभिभंछुनःहेमहाराजमहापापकर्मक्याणगछौ॥किलावामंधेरपसुक
 नमारैरःरक्तलेहिलोतुल्याघेरमुछलानुल्याउंछुः॥न्योस्वर्गगयाःनर्ककोजालाः॥भोगगर्ना॥॥मान्याकनपा
 यवरोवरछः॥हेमहाराजःसिकारगरिवहुतजिउमारिमाहापापक्याणगछौभंदाः॥राजाभंछुनःहेअपिरा
 जाकोधर्मक्याहोकहुभंदाः॥नवअभिभंछुनःहेमहाराजभुन॥॥सिलोक॥गोभूमिहेमदानंदःअश्वमनस्त
 थैवदःशणिनांनिर्भयंदानंःकिंदुरंनृपस्वर्गयोः॥६३॥संसारमाअपराधक्याणगछौःवधमावसितृणपांन्याई
 नकणनमारः॥मृगक्याविशउंछुन॥एस्तोभयासंसारमाकोरहलाः॥मराजाहुंभनिःअहंकारलेदुष्टकणपा

विक्रममार्देननः॥न्योपापराजाकनलागुः॥जोसहरमानआउन्नाः॥जोगिअर्काकाःसरणमागयाकोःनत्कोर
 स्थाप्राणदिकनयनीगर्नुपर्छुः॥जस्काधर्मसिलहः॥अहंकारःरिसःजस्तेजित्याकोछुःविद्यानमृतःस्वप्तिःसं
 तुष्टपरस्त्रिवर्जितगयाकोजोछुःतस्करकसेकोभयछैणः॥सिलोक॥भेमातुल्येणतपशाःसंतोषंभव
 वेत्सुषं॥विद्यासमानदातावःदयानुल्येणदाणयः॥६४॥वडाकोधर्मएसोहोःसिकारिकर्मणगरभंदातवरा
 जाभंछुनःहेमखिःआजउप्रांतहिसापपापकर्मगर्दिनभन्या॥न्योभुनिअधिसंतुष्टभेभंछुनः॥हेमहाराज
 :ज्यामागुछोःसोमदिनुसांगुभंदाःराजाभंछुनः॥हेमविनिमिसंतुभयोर्जे।निमीकन्याद्योभंदाः॥दिन्यावक्तुदि
 नेपन्याधियोःकन्यादिजोविहागरभंदाः॥राजालेगंधर्वविवाहगयाः॥अधिधेअग्यासांग्याःन्योअधिकन्या
 योरामावडाईआफ्रासहरःराज्यमालेग्याः॥आधावाटमापुग्याःरातपयोःतांहिवस्थाःसुन्याः॥आधारातमा
 वुल्लरासेसआयोएसकन्याकनषांछुभन्योः॥राजाभंछुनहेराक्षसःपापकर्मकाणगर्दुसभंदाः॥राक्षेसभं
 छुएकन्याकोमायातयासातवर्षकोब्राह्मणपुत्रयेसकन्याकासाठामामेराअधिसिरकाठिदैराविदेः।तव

छोडुलाभंदाः॥राजालेदिउंलानन्याःतवसादिनकोभाकाराग्याः।सातदिनमाआउंलानन्योःराक्षसगयोः।त
 वविहायोरातगयोःराजासुन्याकाउयाः॥घोरामवडाया।अधिकन्यासमेतराजाआफ्रादर्वारगयाः॥दर्वार
 राजाःआफ्रामंत्रीथैपैलेकोवृत्तान्तकस्यामंत्रीथैः॥तवमंत्रीभंछुःहेमहाराजःआपदाधनलेटछुःधनकार
 निमीत्रस्त्रिसंग्रहगरिंछुःवहियागर्नुभयोःन्योकार्यमगरुलानन्योः॥एकसुनकोमनुष्येतुल्यायोःहीराःसो
 निकामालालगायोः॥वाटमागयोःजोब्राह्मणसातवर्षकोपुत्रदेलाः॥तसेकणयोमूत्रिदिउंलानन्योःन्योपु
 त्रराजाःकाठन्याछुनः॥तसअर्थःतस्कोमोलयेककोठिरुपेजोदिनछुनभनिःएकब्राह्मणलेसुन्योः॥वा
 वामहतारिथेभंछुःमलिउंलाभंदाः॥मोतापिनाभंछुनः॥न्योद्वयोकोकामछैणःप्रयोजनछैनभंदाःपु
 त्रभंछुः॥सिलोक॥संसारद्वयसारेणद्वयहिणंकुठसुषं॥६५॥हेवावापुत्रताअर्कोहोईजालाः॥धनलेउ
 भंदाःधनकालोभलेल्यावभन्योःवावुभंछुहेपुत्रउसोभयाजातवभन्यो॥पुत्रराजाथैगयोभन्योः॥हेमहाराजमे
 लेजिउदिनआयाःमेरावावालाई॥शुनकाकोठिअश्रुफिः॥सुनकोपुरुषमुगाःमोनिःमालिकःलायाको

मलार्द्रदेउंभन्योः॥ राजालेधुनकोपुरुषरूपैजोदियाः॥ सानवर्षकोवास्त्रणपुत्रलियेरः राससथैंगयोः॥
 जाहाभाकाश्याकोथियोतोहिगयोः राससथ्यायोः॥ राजालेखत्रलियेरः॥ वास्त्रणकाविद्याभाताकोजसैः
 ॥ नेसवास्त्रणलेदोकोः हास्यो॥ एतिकहिवेतालभंछुः हेमहाराजः काकारणलेहांस्योः॥ रावोल्यासिरफाटिम
 मरौलाभंदाकदुभंदाः॥ राजाविक्रमशेणभंछुनः॥ हेरहेरसंसारमाकोस्थितिः॥ महतारिलेपालिनः बालप
 मापसिजीउवायोएसोभन्याकोछुः सरसतुकोमेधगज्जंछुवसंदेणवर्षाअतुकोमेधवसंछुः गज्जं
 देनः॥ जोवडोछुगरियुयाउंछुवत्तेनः जोछोटावुद्धिकोछुः॥ सुखलेएसोगरुलाः मउसोगरुलानंछुः मय
 तोडुं॥ मयस्तोपराकमिदुंनंछुः॥ परंतुकरणीपुयाउदैनः पुयावनेसत्तेनः॥ एतिभुनिवेतालफेरिहृषमा
 गयोः॥ राजाविक्रमशेणशिशोकारुषफीदाभयाः॥ ॥ इतिशिवदासविरचितेवेतालपंचविंसतिकायांउ
 नविंशतिकथाहासमाप्तंशुभम्॥ १२॥ ॥ पणइस्तमनोभवेनवलिजित्कायपुरास्त्रिजिते॥ योगंगास्त्रिवंदनध
 कसमकरोयोवर्हिपत्रप्रिय॥ वस्त्रादुः ससिभास्थितेहरजितोतुंतुनर्ममशः शोभादृष्टिः भुजंगहारवलयास्या

सर्वतोसाधवः॥ ६६॥ राजाविक्रमशेणसिसौकारुषजार्द्रः रुषवद्धिडोरिकाटिमृनककांधमावडाईवाटसा
 हिउदाफेरिवेतालभंछुहेमहाराजमश्रुकोकथाहाकहंछुभुनः॥ हेमहाराजः एकविसालसीभन्याकिनगरि
 थियोः॥ तांहायधनाभन्याकाराजाथियाः॥ तांहिअर्थदत्तभन्याकोवनिनांथियोः॥ तत्किछोरिः अनंगमज
 रिभन्याकिथिर्द्रः॥ तसेपुरवस्याकोमनिभन्याकावनिजांलेविहागयोः॥ तस्करणमाईतराघरः॥ न्याफुसमुद्र
 पारवेपारगर्नगयोः वाडुवर्षतांहिवस्योः॥ न्योअनंगमंजरिवावुकैधरवसिरहिथिः॥ सखिसंगकोसिमावस्या
 नाः॥ एककमलाकरभन्याकोवास्त्रणदेविः॥ तस्कोरुपजोवनलावन्यायुक्तयाकोः॥ नेश्लेयनिदेशोकंन्याकि
 न्नरः परस्परयतीभयोः॥ न्योवास्त्रणआफ्राघरगयोः॥ कामदेवलेअत्रंतभयोः स्त्रिसंभोगगर्नकतेपायेणः॥ मृ
 र्छभैरवाकोथियोः॥ अनंगमंजरियनिमूर्छभै॥ संधियातभयाजैभैरैथिः॥ सविथैभन्नलाग्योः हेसविकामदेउभन्या
 कोएसो रहेछुः॥ अन्यंतकलाजांन्यारहेछुः पंडितकनविन्याउन्यारहेछुः सूविदेविहाछुः॥ धिरकनचंवलगराउंछु
 एकैसिन्मोभंदाः॥ सविभंसेहेसविः एसोभन्यातमावावामहतारिलेनदेधनुः॥ तजोरः तेस्कोभेटः मगराउलांमण
 मादुः खनगरः योडुरोकतेनकेसाभंदाः॥ आजैभेटगराः एतंरमपोलिमईभंदाः॥ सखिलेवुडाईरः सखिकमला

करकाद्यरगैः॥ कमलाकरपनिश्चनंगमंजरिकाविरहलेमर्त्तननयाकोशियोः॥ तत्कनयनिसविलेबुजार्द्रल्यः
 र्द्रः॥ अशोकावारिमाः अनंगमंजरिः केशकावोठमनिवस्थाकिथीः॥ तां हि तिहुई कोनेटमिलापपृतिनयोआलिंग
 गन्याः॥ मुखमाहातमावुस्वणगन्याः स्तनमाः जंघमान्याः॥ तनिख्यालगर्दागदैः अनंगमंजरिमरिगैः॥ कमलाक
 रपनिश्चगालोहाल्योरन्योपनिमन्योः॥ तसैसमयमाव्याहितोपुरुषः ससुरालिसंगनेटगर्नभनिमन्योः॥ मा
 निसरोयाकोसुन्योरगयोः॥ अनंगमंजरिमन्याकोथिः देव्योः परपुरुषसंगसंगालोहालेरमन्याकिदेव्योः॥ ति
 श्लेषनितसैगरिअंगालोहाल्योरमन्योः॥ जसैयेस्तोकोनुकदेव्याभुन्याः॥ राजाप्रभृतिहेर्नगयामहाकोनुकदेव्याः
 ॥ राजाभंछन्ः ज्यामनुष्यलेगन्याकोछः भलोमंदोआछः॥ तयोअवस्यभोगगर्नुयन्यारहेछमन्याः॥ एतिकथाहा
 कहिवेतालभंछः॥ हेमहाराजविक्रमशेणः यतिः तिनमध्येकोअधिकसिनाशोहोः॥ एवोल्याकोषफाटिमशैलाः
 ॥ नबोलिन्यानयास्यावृक्षांडफाटिमशैलाः कहुभंदाः॥ राजाविक्रमशेणभंछन्ः॥ व्याहागन्याअधिकसीनाशोहो
 ॥ कथाहानन्यायसंगलाग्याकिसन्याकिदेविका मदेउवज्योरः हेप्रीयननिमन्योभन्याः॥ एतिकथाहाकहिभुनिवेता
 लफेरिहृषेमागयोः॥ राजाविक्रमशेणपनिफेरिशीशौकारुषफिर्दभयाः॥ ॥ इतिशिवदासविरतेविवेता

लयंवविंसतिकायांविंसतिकथाहसमाप्तंभुभम्॥२०॥ ॥ एमश्चंगिसिरस्थायः वंद्वामरवामरः॥ त्रैलोक्यने
 गरिरंभेमूलस्थंमात्मसंभवेत्॥६७॥ फेरिराजासिसोकारुषजार्द्रमृतककांधमावजार्द्रवाठमाहिइदा॥ फेरि
 वेतालभंछः हेमहाराजममृकोकथाहाकहंकुभुनः॥ हेमहाराजाजलस्थलनन्याकोएकणगरिथियोः॥ तां
 हां विरमर्दनमन्याकाशजाधियाः॥ तां हि विष्णुसर्मणभन्याकोब्राह्मणथियो॥ तस्कावारगोठछोरथियाः॥
 एकवजोनुवायाभयो॥ दोश्रोवेश्यागामिलिभयोः॥ तेश्रोपरस्त्रिथैजान्याभयोः॥ दोथोनास्तिकभयोः॥ चारैक
 एवावुवुजव नलाग्योः॥ हेपुत्रहोवडालेतिर्थवृत्तगर्नुः जुवानवेल्नुयहिलेसिलेकोनासहुंछः॥ सिरकोनाश
 भैजीउदावहिः विषवार्द्रमर्नुनिकोवरुभलो॥ ॥ सिलोकः॥ विषादकलहश्चैव रागभ्रमणमेववः॥ आल
 स्यंयेभुनश्चैवः॥ अहंकारंवशोकयो॥६८॥ एतिजुवाकापरिधारिहुंनः जांहांजुवाछः तांहालस्मीरहनननः॥ जां
 हाअतिछुनांहातृणरहंदैणधनकोउडालोजुवाहोः॥ जोरिववणलाउंछन्ः वरुवल्हाभुगुगमापसनुनिको
 ॥ जुवानवेल्नुभनिजुवायाकनभन्योः॥ दोश्राकणभंछः हेपुत्रवेश्यासंगसंभोगनगर्नुः॥ अतिभुंदरिवहुतअलंकार
 नयापनिरतिनगर्नुः सत्यः भुविः सीलरहंदैनः॥ आहुमित्यः कर्मः शंभान्योसवैदुरजांछः॥ तस्कारणवेश्याथैणजा

नुःनपःविद्याःवृत्तिःयसःकुलःगुणःपतिनाशदुःखः॥जस्कीवेश्याप्रेमदुःखःनस्कावावामहतारिःभार्तःस्त्रिःपति
 कुपियारीक्षेदेनः॥छिनारालेःसन्धःशौचःमलगुणकोःगुरुको॥हितकोवचनः॥वालुवाहाल्याकोःदुद-
 पियोजस्तोमांछ॥वेश्याकोमुषमदगनाज्ञादुःखःभासुमदनकायालेःक्याभयोः॥वेश्याधिं गयापछिमांसमद
 कायोःवेश्याथैनिवाजानकाः॥प्रसंगलेदुःखितभयाकोःपत्नीकामनगर्भन्योः॥जोपरस्त्रिथैःजांछःवदुःहिं
 उनुःबोल्नुःन्योजोगावनुअलिकबुकाः॥मृत्पुकदुःखःसर्वपेलायाजस्तोदुःखमंदाः॥नास्तिकमंछःकस्कि
 आमाः॥कस्कावावुःकस्कादाज्युभार्तःकस्काछोराः॥जन्मंछनःमर्छनः॥एतैप्रलेयउत्पत्तिप्रलयदुंदैछ॥
 परमेश्वरकोध्यानगर्नुःन्योमात्रैउत्तमदुःखःनिर्दयासंगवर्जितः॥वेथाकेहिनमानिःरामकोनामजपुन्योभलोहोः॥
 वदुतकाकदुःखःवावाकोवचनस्याग्याणमान्यादुन्याछेनः॥विद्यानभयाकोमनुष्येःजिउंदोभयापनिमन्याकेरैछ
 देसन्तोजाईविद्यासंग्रहगशैभनिवाशैजनालेमनगन्याः॥घरदेविसंगगयापांयसातदिणकावाठजाईरानि
 वासवस्यामभन्या॥येकातिरणजाउंभिन्नभिन्नैदेसजाउभन्या॥वारैदिसाजाउंभन्यावर्षमैजादिनकोसंगैफि
 तुंभनिभाकाशप्याः॥वहाउप्रांत॥हिंयाजाहाजाहागयाथाःकेहिसमयविद्यापयाःपक्षिवारैजनाफर्क्याः॥भु

धिजांदाभाकागन्याकामैजादिनकोठगानगन्याकोधियोः॥तांहिएकावनमावारैकोनेठनयोः॥परस्परकुशलकुश
 लात्रीगन्याःवस्याःनवजेठालेभन्योःहेभार्तहोकाकाविद्यायाकोछः॥आफ्राआफ्राविद्याकोप्रकाशगशैभं
 दा॥एकालेवनमाहाउफेलापारेछरः॥हाउमंत्रगन्योरःसवैहाउजोगोआठअठंगसवैमिलायोः॥दोश्राले
 मंत्रगन्योरःनसालेसवैवोध्योजोगोः॥नेश्रालेछालाशेमसवैतेजधालेयोःवनायोसशेवाद्यभयोः॥कोथालेमं
 त्रगन्योरःजिउहाल्योःसिंहउद्योजिवारैकणमान्यो॥पतिकहिवेतालमंछः॥हेमहाराजःविक्रमशेनःपतिवा
 रमाकोमुखहोः॥नबोल्यासिरफाटिमशैलाः॥न्यानपायाकोषफाटिमशैलाभंदाः॥राजाविक्रमशेणभंछनः॥
 सिंहभयाकोदेष्टादेष्टेजश्रेजियायोः॥न्योमुखहो॥विद्याबांहिंदुदुलोहोः॥पतिश्रुनिमात्रैवेतालफेरिहृष
 मागयोः॥राजाविक्रमशेणशीशोकारुषफीदाभया॥॥इतिशिवदासविरचितेवेतालपंचविंसतिकायांएक
 विंशौकथाहासमाप्तंशुभम्॥२१॥॥णमामिसिरसादवःदेवानामपिदुर्लभम्॥विद्यानिधानसंपूर्णंयार्व
 तियतीमिस्वरं॥६२॥राजाविक्रमशेनशिशोकारुषजाई॥रुषवद्विजोरिकाटिमृनककांधमावजाईवाठमाहिड
 दाः॥फेरिवेतालमंछःहेमहाराजमकेहिकथाहाअकोकहंकुशुनुहवोसः॥हेमहाराजानुःवेदजन्मभन्याको

एक नैगरि थियो ॥ नो प्रताप शोण न न्याका राजा थियो ॥ तां हि रुपा दीन न न्याको ब्राह्मण ॥ अत्यंत रूप व्रतः वडो गृ
 त्तधना ध्व थियो ॥ यस्तो रहेछुः न्यो ब्राह्मण देवा गति यर्ताले ॥ एकत्र सृष्टि दिन रात माः मुत्र भुवि गर्तः बाहिर ग
 या माठे सला जिम रेछुः ॥ एकत्र दे सि ब्राह्मण आई तां हि वस्या को थियो ॥ तसै समय माः ते स ब्राह्मण लेः न्यो मृ
 त क देष्यो मत्री ले दिता या को मे श मण यया को मे ले म्मर्का का दे हि माय ह्या मंत्र विद्या जा न्या को थियो ॥ विद्या
 को फल आज लिखु ॥ यो सरिर जवान छः भनिः बुडो सरिर छो घो रः ॥ न्यो स्पृ त्यु क माय स्यो ज सैः त सै पहिले
 रो यो ॥ य स्त्री हों स्याः ॥ उ प्रांत ॥ ॥ विहाण त स्को संस्कारण गर्त भनि गो नि या आ या दे प्या ता जि उंदो भ या को ॥
 शुर्को मया को दे प्याः आश्चर्ये मान्याः ॥ उ सै को संस्कारण गत्या ॥ ॥ उ प्रांतः ॥ न्यो धर ग यो रः गो दा ण दिः पु ण्य
 ती र्थ यात्रा गरु भणिः न ह्यण सरिर माय शेरः ॥ परि यारि थें भछुः मजो गी डुं छु भनि य पठ वा क्यार्न न ला ग्योः
 ॥ क वृद्धा शु न्नु क वं न ठ ला स्यः क ह रा श्चंद्र का ति ज दा संः क व जनः का ष्टः क शो रामः क दुरे विक ये वि धि य
 रि ना म म् ॥ १ ॥ अंग ग लितं प लितं मुं णं दः द स न वि हि तं जा तं तुं णं ॥ वृद्धो या ती य हि त्ता दे रंः त्त द पि स्स मु य थ्य
 सा पि णं ॥ २ ॥ भिन्न मार्ग भिन्न देवाः भिन्न गुरुः भिन्न शेवाः भिन्न वेसा भिन्न मुक्तिः मीह विशेषा सर्वा मुक्ती ॥ ३ ॥

पात्रे येव ण दं त्र दानं त द स नी व क्तं वहु मा णंः स ग ल ती कृ त्ता कृ त्ते वि वे कः किल भव कु पे वी ल श ति ने क ॥ ४ ॥
 पु नं र पि र ज नि पु नः र पि दि व साः पु नः र पि व र्णा पु नः र पि मा सः ॥ पु नः र पि वृ द्धाः पु न र पि वृ द्धा पु नः र पि वा ला
 पु नः र पि या ति स मे दि त का लः कु पो द क स सि मा या का ल र सु र गि री सा ग र न ख र वि हा रः ॥ ५ ॥ त त्वं ना हं ना
 यं लो क त्त द पि की म र्थं कृ य ते शो कः ॥ ६ ॥ अध र द ले ण विं डं वि त वि वा यु रु त्त र कु व यु ग तुं ग णि तं वाः ॥ वं व ल न
 ये ना वि नी र्ग त ह रि णी व लो ह रि ती मु ने र प त रु णीः ॥ ७ ॥ का त्वं न रु णी प्र व ह ति ग र्वे मा या का र वि नी र्ग त सर्वे ॥ य
 वं मा शं व सा दि वी का रं म ण सी तिः स र्ज य वा रं वा रं ॥ ८ ॥ ब त्वं वि व र क ल्पित क सा पु रि यु सि शो प्र मा णो द साः ॥
 ल ल ना लो य ण वो धि त व सा ह र ते यो गि न्को यं सि ष्या ॥ ९ ॥ अ श ण का णः स वि णी त द्वा ण का कः का णो य टि त प्र मा
 णः प्रा णो र वि का ष्टः कृ पा णः क र ते यो गि प ठ सि यु रा णः ॥ १० ॥ कं का ख न डै क त त नु गो प सि र मी नीः धा नि त णि छे
 र ठो प ॥ लो क र वा पिः सौ व बिले य को यं यो गि यो ग णि शे प ॥ ११ ॥ को हं क र्त्वी कु त या या तः को मे ज न णी को मे ता तः
 ॥ इ ति परि भा षि त र्ह श नि सारः सर्वो यं व स्तु प्र वि वा रः ॥ १२ ॥ पा दो पा ण ह या णो दं डः र था क प ठ मु छि त मु ण्ड ॥ ह
 त्ते ष प्य र वि र वि मं दः शो हं जोगी सह ज्ञा नं द ॥ १३ ॥ मो जि वं ध न वे द न्या सः पा व क ह व णं यु ज्ञा या शः ॥ क त व द्धु व र्था

शौचावरणंदपिणलज्जंपरमदज्ञानं॥१४॥पिछुकपिंडितलुवितमंएउःधृतदधातसर्करपोषितपिंडः॥अग्रेयुव
 तिष्ठयेरंडःवपुरेदिगंबरदर्शनमंदः॥१५॥ईत्यवमादिनीपठिकनभन्योः॥मतिर्थयात्रागर्नजांकुभंदाः॥परि
 धारसवेषुसिभयाः॥तश्चेतरुणसरिरमापस्योरःशेयोःपत्नीहांस्यो॥एतिकथाहाकहिवेतालभंछुः॥हेमहा
 जःक्याअर्थलेशेयोः॥क्याअर्थलेहास्योः॥एकस्यासिरफाटिमशेलाभंदाः॥राजाविक्रमशेणभंछुनः॥योगि
 लेन्याकुशरिरत्यागगर्दाःएसोवितायोः॥मैलेयौवणमास्त्रिशंभोगःगन्याभनिसरिरकामावालेःशेयोः॥फे
 रिनरुणसरिरयाज्जोभनिधुसिभयोरहांस्योःएतिशुनिवेतालफेरिरुषेमागयोः॥राजाफेरिसिशोकारुषफि
 र्दाभयां॥॥ईतिशिवदासविरचितेवेतालपंचविंसतिकायांद्वाविंसतिकथाहासमाप्तंशुभम्॥२२॥॥॥
 सरस्वत्याप्रशादेणःकाव्यकुर्वंतिमाणवाः॥एतेषांदुर्लभंकिंवितःस्यारंतिस्वभारति॥२०॥राजाविक्रमशे
 णशीशोकारुषजाईमृतककोंधमावजाईवाटमाहिउदाः॥फेरिवेतालभंछुःहेमहाराजःमग्नर्कोकथाहा
 कहंकुशुनः॥हेमहाराजःधर्मस्थलभन्याकोनगरिछुः॥तांहाधर्मवृजभन्नाराजाधिया॥तांहाएकवाह्यण
 गोविंदभन्याकोधियो॥वारैवेदपद्याकोधियोःतस्कीस्त्रिलस्मीभन्याकिधिः॥तस्कापुत्रहरिदत्तःसोमदत्तःये

इदत्तःभन्याकातिनगोठछोरधियाः॥एककोहिदिनमाः॥गोविंदलेयत्तकोआरंभगन्यो॥यज्ञमालाउनक
 कुवावाहिन्यारहेछुः॥न्योलिनतिनैछोरकणयठायोः॥समुद्रकानिरतिनैजनामुग्याः॥नाउषियावनजान्या
 रखाछुनः॥नाउवाटजालवेल्नलाग्याः॥जालमाककुवालाग्योः॥जेठालेभन्योःधेमाजिलानेसमात्तः॥मा
 जिलालेकांछानेसमात्तभन्योः॥तिःतिनैभाईरुगशगईदवीरगयाः॥राजाभंछुनःहेवाह्यणहोव्याणरुग
 शगछै॥धुंनःतप्रावावालेवडोयेज्ञगर्नलाग्याःगर्णन्याद्याःतिमीविधंसगर्णलागेउभंदाः॥तवजेठोभंछुः
 हेमहाराजमताभोजयंगहोः॥न्योगझाउनकसोरिमसमानुभंदाः॥राजाविवारगर्नलाग्याः॥वेसमसिना
 धानकावावलकोभातषानदियाःजसेषायोनसैमुखछोपोः॥राजालेदेव्याःसोध्याःक्याणमुखछोप्येभं
 भंदाः॥हेमहाराजयोअन्नमसानमाछुयाकोरहेछुःमुर्दागझाउंछुभन्योः॥राजालेअडैथेंसोध्याःतिवावल
 कतावाटआयाकादुभन्दाः॥अडैलेभंडारिजानेलाभन्योः॥भंडारिथेंसोध्याःभंडारिभंछुःहेमहाराजम
 शानकाठाउषनिधानछुयाकोहोभंदाः॥निश्चयषांदाकोविवारिरैछुसभन्याः॥तस्कोमानगन्याः॥तीमीकस्ताक
 ताछोभंदाः॥दोश्रोभंछुमनारिवंगहोभन्योः॥तस्कोविवारगर्नःएकधुंदरिस्त्रिउरामापठाईदियाःरघवालवौ

किराष्ठाविहाणभुध्यायाः भंछहेमहाराजसंभोगताकतागयोकांहांनिंदापनिपात्रीणभंदाः॥ राजाभंछनः कथा
 र्थभंदाः॥ हेमहाराजदुर्गंधकाउरलेः॥ यस्कंन्याकोसरिरवाप्रिकोदुदगजाउछः॥ सहिसकनुकैणः वाककादू
 दलेपाल्याकिरेकभंदाः॥ केठिकीआमाथेंभुध्यायाः॥ योकंन्यानैलेकसोरियालिथिसभंदाः॥ हेमहाराज
 : मेरिवैदिकीछोरिहोभंछे॥ न्योजन्याकादसदिनमातस्कीआमामरिः॥ वाककादुदलेपाल्याथ्याभंदाः
 जावुज्याः॥ योपनिशांवरहेछभन्यातस्कोमानगन्याः॥ तेप्राथेंभुध्यायाः तेश्रोभंछः हेमहाराजः मनुल्यवंग
 होंभन्योः॥ शतमासातपत्रविश्याउनाविशार्इदियाः सुन्योः॥ वोकिमानिसरषवालराष्याः॥ विहानवोकि
 लेविंतिगन्याः हेमहाराजः तश्लेशतमानिंदापायेनभंदाः॥ राजाभंछनः कथाअर्थलेभंदाः॥ न्योभंछः हेमहारा
 जः विश्याउताकातलापत्रमाः वनेरकोरोमरहेछः॥ तेहिदिशयोरनिंदापायिनभंदाः॥ विश्याउनामाहेन्या
 वनेलकोरोमरहेछः॥ तंपनिविचारिरहिछसभन्या॥ तस्कोपनिमानितागन्याः॥ एतिकथाहाकहिवेताल
 भंछः॥ हेमहाराजइतिनमाकोटुलोविचारिहो॥ हेमहाराजजानिकननकहासिरफाठिमरोलाभंदाः॥ रा
 जाविक्रमादित्यआज्ञागईनः॥ तुलीवंगटुलोविचारिहोः॥ सातपत्रविश्याउनामातलापत्रकोवनेरकोरोम

विश्याकोजान्योः॥ तेसअर्थतुलिवंगटुलोविचारिहो॥ एतिशुनिवेतालफेरिरुधैमागयोः॥ राजाविक्रमशेणसि
 शौकारुषफीर्दभयाः॥ ॥ इतिशीवदासविरचितेवेतालपंचविंसतिकायांत्रयोविशतिकथाहासमाप्तंभुन
 म्॥ २३॥ ॥ अर्कभुण्हरिपुसारस्थिसुनोरतकस्यसिरसिप्रतिभारतिः॥ यामिंदसुरसिद्धिनिशेवेतेः साकरो
 तुभवतुमयनासम्॥ २१॥ फेरिशजाविक्रमशेणशिशौकारुषजाइडोरिकाठिवेतालकांधमावडाइवाठमाहिउ
 दाः॥ फेरिवेतालभंछः हेमहाराजः मअर्कोकथाहाभंछुभुनः॥ हेमहाराजविक्रमशेण॥ प्रभावतीभन्याकियकने
 गरिछः॥ तांहाप्रशोमणभन्याका राजाधियाः॥ तन्कीराणिदिमलदेवीभन्याकिथिईन॥ वंडप्रभाशेतेलिथिई
 नः॥ तिशेतेलिकणदलीनदेशकाराजाः विजयशेणलेः ब्याहागन्याकीथिईनः॥ तन्कनयार्वतीभन्याकिरोते
 लिजन्मीनः॥ न्योवरिधायोवनवतिभईनः॥ केहिकालमाः वैरिलेसहरघेन्योः॥ तत्तैसमयमारजाभंछनः॥ हेरा
 णितंछोरिलियेरजाभन्याः॥ आफुशंग्रामगर्णलाग्याः॥ क्षीणमात्रविश्रामगन्याः॥ सूर्येअस्ताया॥ ॥ तांहांउप्रांत
 एकसुमापुरभन्याकोनगरिथियोः॥ तांहाकुसुमशेषरराजाधियाः॥ छोरेशाथलिकनसिकारषेलंगयाः॥
 आधावाठपुगनगयाग्योपाईलादेष्ठा॥ लक्षणाकायाईलादेषिः॥ पुत्रभंछः हेवावाकस्कीराजिशेतेलिआयाका

रखा छन मंदाः ॥ राजा भंछः हे पुत्रः एक दुलो पाउः ॥ एक सानु पाउ नया कारखा छनः ॥ सानु पाउ दुन्या ने रिः ठु
लो पाउ दुन्या मे रिः ॥ राणि भनिः वावु छो शले वा वा गन्याः ॥ ते सै पाई ला प सी ला ग्याः देष्पाः भेठायाः नि
आ मा छो रि उ रायाः ॥ राजा ले छो ध्याः ति दुई आ मा छो रि लेः पेङ्गे को वृ वेत्रा न्न कल्याः ॥ लो भु नि राजा भंछनः व
दि पा स रा व रि रखा छो भन्या हे पुत्र जो वा वा गन्या थिउः वा वा गन्या कोः ॥ लो वि व रि न भयोः सानु पाउ दुन्या आ
मा रै छ ॥ ठु लो पाउ दुन्या छो रि रै छ सानु पाउ भया कि ते रि भै भंदाः ॥ पुत्र भंछ क सो रिः मन ले ता सह ता रि भई
न भन्योः ॥ त स्का र ए सानु पाउ दुन्या मे रि भै ह व स भन्योः दर्वा र ले ग्याः ॥ उ प्रांत ॥ ॥ ति दुई आ मा छो रि ला रै छो
रा छो रि ज न्या पा याः ॥ ए ति क था हा क हि वे ताल भंछः ॥ हे महा राज विक्रमा दि न्यः त न्का सं तान को क्या ना
ता ग छः ॥ स न ह का दुं छ क दुः ॥ ज्ञा नि क न न क स्था सि र फा टि म रौ लाः ॥ ए वो ल्या को ष फा टि म रौ लाः भंदाः
॥ प ति भु नि राजा ले के हि उ त्त रा दि ये न नः ॥ ई न को ना ता के हि ज्ञा नि न हे वे ताल भ नि राजा विक्रम शे ए ले भन्या
॥ राजा ले स्नेह को ना ता ज्ञा नि न भंदाः ॥ वे ताल प्र स न्न भई भंछः ॥ ति मी ले स्नेह को था हा को ना ता के हि ज्ञा न्यो
न ताः ॥ म प नि उ प्रांत जां दि न भन्यो ॥ ॥ इ ति शि व दा स वि र वि ने वे ताल पं व विं स ति का यां व तु विं स ति क था हा

समा प्रं भु भं ॥ २४ ॥ ॥ आ रु डा स्वन हं स भ्र म नि व र म ही द सी णो सा त्र भु वं ॥ वा म ह स्ते व दि व्य व र क न क म र्य पु स्त कं
ज्ञान यु क्तः ॥ या वि ना वा द यं नि र व क र व र ण ये स्त त्व वि ज्ञा ण स व्यैः स्त्री क्ति ति दी व्यं रु पं व र क म ल ध र भा र ति सु प्र स
न्ना ॥ ७२ ॥ इ हा उ प्रांत ॥ वे ताल प्र स न्न भै भंछनः ॥ हे महा राजः अ व उ प्रांतः म रु ष मा जां नः ॥ हे महा राज विक्रम शे
ए ति मी दे वि म सं तु छ भ न्नी ॥ मे रो एक उ प दे स ले उ मे रो व व न भु ने र क्षे प न कः ॥ यो गि को वि श्वा स वु र्दे र वु र्नु
हो ला भंदाः ॥ राजा भंछन का अर्थ ले भंदा वे ताल भंछः हे महा राज विक्रमा दि न्यः ॥ ज सै मृ न्यु क ले जा उ लाः ल्यो
यो गी य सो भ न्ताः ॥ पू जा ग रे रः ति मी क न दं उ व त्त ग र भ ण लाः ॥ ति मी य सो भ न्याः म ना रा जा हों प्र ण म ग र्ज ना
ब्दी नः ती मी सि का ई यो भ न्या ॥ अ धि ति मी न म स्का र ण ग रः ॥ ति मी ले ण म स्का र ण ग न्या को दे वि म ग रु ला भ
न्याः ॥ ज सै वे ताल यो गि ण म स्का र ण ग र्ताः ॥ त सै ख ड्ग लेः ति मीः न स्को सि र का य्याः ॥ त स्का र क ले अ र्घ दि याः ॥
त्यो क वं ध सु व र्ण को यु रू ष हो लाः ॥ अ ष्ट म हा सि डि ति मी पा उ लाः ॥ म नो वा न्द या हो लाः हे महा राजः मे रो अ र्ति
ए मा न्या यो गि ले ति मी क न मा र लाः ॥ त स्को म नो वा न्द या हो लाः ॥ ॥ ये ति क हि वे ताल आ क्रा ठा उं भा ग यो ॥ ॥ रा
जा फे रि शी शो का रु म जाईः मृ न्यु क लि ये रः ॥ यो गि का ह जू र ग याः ॥ ज सै न सै यो गि ले दे षो रः व दू त पु सि भै भ न्न

लाग्योः॥ नलो नलो हेमहाराजः सवैराजा कासिरोमनिहोः॥ निमीले बोल्या को पुन्या यो नन्योः॥ यहिले पूजाग
न्योः मंत्रलेः वेनाल कनराग्योः॥ ॥ ताहा उपांतः॥ दिगम्बरभंडः हेमहाराजः पूजागरः एमस्कारणगर डिगं
रले भंडाः॥ विक्रमादित्य भंडः॥ हे योगेश्वरः मन्ताराजाहुः॥ एमस्कारण उंड वनगर्नजादिनसिकार्ड्यो भं
दाः॥ योगीनमस्कारण गरिसिकाउनलाग्योः॥ जवदेवत्सोकुट्टिहुंदा यहिले बुदिले छुडूछः॥ ॥ सिलोक॥
प्रथमं बुद्धिजाताश्चः विनामणौ वलोष्टयः॥ कामधेनु भवेत्तु वंजाः कल्पवृक्षे मरिष्टयः॥ ॥ ७३ ॥ रामो हेमहाराज
येति॥ ॥ श्रीरामचंद्रजस्तापुरुषलेः शुनकामृगपाहिलाग्यारः शिनागुवायाः॥ एलघोषराजाले वाह्यण
कणालिवोकारः सर्वभैरवगर्दे विपत्तिभयाः॥ सहस्रांजुणले वाह्यणकिगार्डहरणगन्यारः॥ सम्युक्तं
श्रीमारिनीक्षेत्रीनयो॥ राजाजुधिष्ठिरलेज्ञानिभैकनजुवाषेल्यारः॥ शलिसमेतः देसः भार्गवतः सवैराज्याः
॥ वडापुरुषलार्डः विनासं हुंदा समयमाः॥ अथिबुदिले छुडूछः॥ दिगंबरकनः देवलेमान्मान्योरः एमस्कार
णगर्लसिवावनलाग्योः॥ जसे डिगंबरले एमस्कारण उंड वनगन्योः॥ तसे राजाले मंडले योगिकनहान्याः॥ सि
रसीणिप्रदसीणिगरायाः॥ तसे रक्तले अर्धदियाः॥ राजाथें अष्टसिद्धियाया॥ आकासवाटुपुष्पवृष्टिपता

या नलो नलो हेमहाराजः सवैराजा कासिरोमनिहोः॥ निमीले बोल्या को पुन्या यो नन्योः॥ यहिले पूजाग
न्योः मंत्रलेः वेनाल कनराग्योः॥ ॥ ताहा उपांतः॥ दिगम्बरभंडः हेमहाराजः पूजागरः एमस्कारणगर डिगं
रले भंडाः॥ विक्रमादित्य भंडः॥ हे योगेश्वरः मन्ताराजाहुः॥ एमस्कारण उंड वनगर्नजादिनसिकार्ड्यो भं
दाः॥ योगीनमस्कारण गरिसिकाउनलाग्योः॥ जवदेवत्सोकुट्टिहुंदा यहिले बुदिले छुडूछः॥ ॥ सिलोक॥
प्रथमं बुद्धिजाताश्चः विनामणौ वलोष्टयः॥ कामधेनु भवेत्तु वंजाः कल्पवृक्षे मरिष्टयः॥ ॥ ७३ ॥ रामो हेमहाराज
येति॥ ॥ श्रीरामचंद्रजस्तापुरुषलेः शुनकामृगपाहिलाग्यारः शिनागुवायाः॥ एलघोषराजाले वाह्यण
कणालिवोकारः सर्वभैरवगर्दे विपत्तिभयाः॥ सहस्रांजुणले वाह्यणकिगार्डहरणगन्यारः॥ सम्युक्तं
श्रीमारिनीक्षेत्रीनयो॥ राजाजुधिष्ठिरलेज्ञानिभैकनजुवाषेल्यारः॥ शलिसमेतः देसः भार्गवतः सवैराज्याः
॥ वडापुरुषलार्डः विनासं हुंदा समयमाः॥ अथिबुदिले छुडूछः॥ दिगंबरकनः देवलेमान्मान्योरः एमस्कार
णगर्लसिवावनलाग्योः॥ जसे डिगंबरले एमस्कारण उंड वनगन्योः॥ तसे राजाले मंडले योगिकनहान्याः॥ सि
रसीणिप्रदसीणिगरायाः॥ तसे रक्तले अर्धदियाः॥ राजाथें अष्टसिद्धियाया॥ आकासवाटुपुष्पवृष्टिपता

या नलो नलो हेमहाराजः सवैराजा कासिरोमनिहोः॥ निमीले बोल्या को पुन्या यो नन्योः॥ यहिले पूजाग
न्योः मंत्रलेः वेनाल कनराग्योः॥ ॥ ताहा उपांतः॥ दिगम्बरभंडः हेमहाराजः पूजागरः एमस्कारणगर डिगं
रले भंडाः॥ विक्रमादित्य भंडः॥ हे योगेश्वरः मन्ताराजाहुः॥ एमस्कारण उंड वनगर्नजादिनसिकार्ड्यो भं
दाः॥ योगीनमस्कारण गरिसिकाउनलाग्योः॥ जवदेवत्सोकुट्टिहुंदा यहिले बुदिले छुडूछः॥ ॥ सिलोक॥
प्रथमं बुद्धिजाताश्चः विनामणौ वलोष्टयः॥ कामधेनु भवेत्तु वंजाः कल्पवृक्षे मरिष्टयः॥ ॥ ७३ ॥ रामो हेमहाराज
येति॥ ॥ श्रीरामचंद्रजस्तापुरुषलेः शुनकामृगपाहिलाग्यारः शिनागुवायाः॥ एलघोषराजाले वाह्यण
कणालिवोकारः सर्वभैरवगर्दे विपत्तिभयाः॥ सहस्रांजुणले वाह्यणकिगार्डहरणगन्यारः॥ सम्युक्तं
श्रीमारिनीक्षेत्रीनयो॥ राजाजुधिष्ठिरलेज्ञानिभैकनजुवाषेल्यारः॥ शलिसमेतः देसः भार्गवतः सवैराज्याः
॥ वडापुरुषलार्डः विनासं हुंदा समयमाः॥ अथिबुदिले छुडूछः॥ दिगंबरकनः देवलेमान्मान्योरः एमस्कार
णगर्लसिवावनलाग्योः॥ जसे डिगंबरले एमस्कारण उंड वनगन्योः॥ तसे राजाले मंडले योगिकनहान्याः॥ सि
रसीणिप्रदसीणिगरायाः॥ तसे रक्तले अर्धदियाः॥ राजाथें अष्टसिद्धियाया॥ आकासवाटुपुष्पवृष्टिपता

ASHA AP GRIVES

2260

श्री श्री गुरुभ्यो नमः

सम
५४

५